प्रेम से परिवार तक

प्रमोद कुमार अग्रवाल

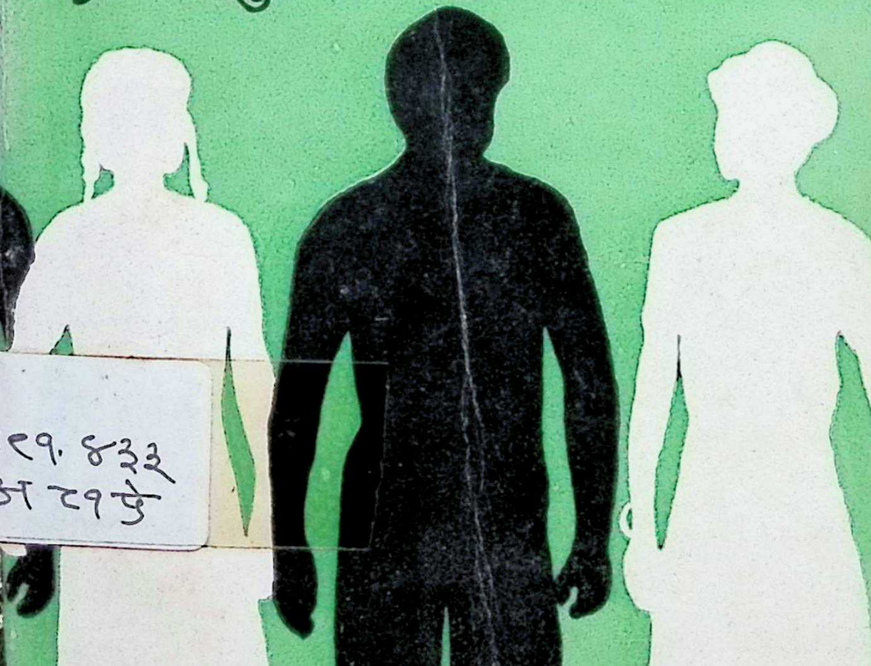

८१.४३३
अ ८१ प्रे

प्रेम से परिवार तक

प्रमोद कुमार अग्रवाल

प्रमोद कुमार अग्रवाल

सन् १९५० फरवरी में जन्मे प्रमोद जी भारतीय प्रशासनिक सेवा में होते हुए भी हिन्दी कथाजगत के नवोदित हस्ताक्षर हैं। इनका प्रथम आँचलिक उपन्यास 'बेतवा की कसम' बहुचर्चित हो चुका है।

लेखक के प्रस्तुत उपन्यास 'प्रेम से परिवार तक' में नव युवक अफसरों की मानसिकता एवं यौवनावस्था के प्रेमोद्वेगों का विश्लेषण सरस भाषानुभूति के माध्यम से किया गया है। यह टूटते बनते जीवन-रिश्तों का एक आकर्षक एलबम है।

संपर्क-सूत्र

चौक बाजार, बरुआ सागर

जि०-झाँसी (उ० प्र०)

प्रचारक बुक क्लब

हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो०बा० ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

प्रेम से परिवार तक

भारत के प्रथम बुक क्लब
प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० ११०६, वाराणसी के लिए
विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
जीवन शिक्षा मुद्रणालय, गोलघर वाराणसी में मुद्रित
सन् १९८५ मूल्य १०·००

PREM SE PARIWAR TAK

Novel.

Pramod Kumar Agrawal

एक

नागपुर में इन्कम टैक्स अफसरों के लिये प्रशिक्षण कालेज था। आई० ए० एस० आदि की कठिन परीक्षा पास करने के पश्चात् भारत के विभिन्न स्थानों से युवक एवं युवतियां यहाँ आये थे। अधिकांश लोग विश्वविद्यालय के विद्यार्थी जीवन एवं नौकरी-जीवन के संधि-स्थल पर थे। यद्यपि आई० ए० एस० परीक्षा की गंगा पार करने के उपलक्ष में राष्ट्रपति ने उन्हें प्रथम श्रेणी के अफसर का ताज पहना दिया था पर यह ताज उन्हें भारी ज्ञात हो रहा था। विश्वविद्यालय के हल्के एवं ताजगी भरे वातावरण से सम्बन्ध विच्छेद करना उनके लिये शीघ्र सम्भव न था।

दिसम्बर का एक दिन था। जो लड़के कुछ महीनों पूर्व नागपुर में आ चुके थे, उन्होंने एक योजना बनाई कि नवागन्तुक लड़के-लड़कियों की रैगिंग की जाये। फिर क्या था, इस प्रस्ताव को बहुमत से समर्थन प्राप्त हुआ। कुछ लोगों ने मन्द स्वर से विरोध भी किया। पर उन्हें यह कहकर टाल दिया गया, "ज्ञात होता है कि भारत सरकार की सभी जिम्मेदारियाँ आपके सिर पर ही हैं। फिर आप तो विवाहित हैं।"

छात्रावास के कॉमन रूम में यह कार्यक्रम रखा गया। नये आने वाले 'फ्रेशर' केवल दस ही थे जिनमें चार लड़कियाँ एवं छः लड़के थे। कमरा छोटा था। कमरे के बीच में एक मेज के ऊपर एक कुर्सी रख दी गयी। उसे घेर कर चारों तरफ लड़के-लड़कियाँ कुर्सियों एवं सोफा पर बैठे। पीछे वाले लोग मेजों पर खड़े हो गये। रात्रि के भोजन के उपरान्त सभी वहाँ एकत्रित हुए।

नागपुर का जाड़ा बड़ा सुहावना था जैसे कि यह शहर जाड़े के लिये पार्वतय-स्थल हो। नये लोगों को बुलाया गया एवं उन्हें एक-एक करके पंक्ति

में बैठाया गया। राजीव तथाकथित पुरातन अफसरों का नेता था तथा कथा-वार्ता में अति आत्म-विश्वासी था। उसके साथ के अन्य लड़के इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आये थे तथा वे बहुसंख्या में थे। 'प्रति व्यक्ति को प्रसिद्धि उसके आगे चलती है' यह कहावत उसके लिगें चरितार्थ थी। वह इलाहावाद में बहुत लोकप्रिय था। 'अहं'' तो उसे लेशमात्र भी छू नहीं गया था।

राजीव के कहने पर सर्व प्रथम क्रम एक लड़के का आया। लड़के को उसी मेज के ऊपर कुर्सी पर बैठा दिया गया। उसके बैठते ही अन्य एक युवक जोर से बोला, ''तुम बिल्कुल तौर-तरीके नहीं जानते। तुम किसकी आज्ञा से यहाँ बैठे ?
''सांरी सर'' उसका नपा तुला उत्तर था। इसके पश्चात् उसी युवक ने कहा, ''चलो तुम्हें माफ किया। तुम्हारा अपराध भयंकर है। ''सॉरी'' जैसे शब्द से काम नहीं चल सकता। यह तो बड़ा हल्का शब्द है। अच्छा ! वैठ जाओ।''
नवागन्तुक तुरन्त ही बैठ गया।

पीछे से शान्ति भंग करती एक तेज आवाज आयी, ''यह किस देहात की चिड़िया है। क्यों बे ! तुम्हें थैंक्यू कहना भी नहीं आता है।''

''सॉरी सर।''

यद्यपि नये सदस्य में पर्याप्त आत्मविश्वास था पर इस वातावरण में वह बेचारा आत्म विश्वास, तौर-तरीके आदि सभी खो बैठा था।

इसके पश्चात् लगातार उस पर बिना सिर पैर के प्रश्नों की बौछार प्रारम्भ हो गयी। सैक्स से लेकर अध्ययन तक की बातें हुई। कुछ ज्येष्ठ छात्र दर्शन-विज्ञान पर भी पहुँच गये जो जिज्ञासावाद का कम अपितु उनके आत्म-प्रदर्शन का अधिक द्योतक था। असन्तुष्ट भावनाओं पर ठंडा जल प्रवाह करने के लिये कामू, सात्रे एवं फ्रायड के मनोवैज्ञानिक, दर्शन पर ही अधिकांश प्रश्न केन्द्रीभूत रहे। अंतमें सभी ने एक मत निर्णय दिया, ''चलो ! यह तो लोक सेवा आयोग की साक्षात् भूल है। फिर भी हमारी जिम्मेदारी है कि हम इसे अपने परिवार में मिला ले तथा इसका मार्ग दर्शन करें।''

फिलिप्स ! क्या तुम तैयार हो ?

"यस सर ! यह मेरा सौभाग्य है।"

पंच-निर्णय फिलिप्स के पक्ष में था तथा प्रश्नों की बौछार का अन्त हो गया।

तत्पश्चात् दूसरा नम्बर लखनऊ की एक लड़की अन्जना का था। लड़की सभ्य घराने की ज्ञात होती थी। उसकी शिक्षा एम० एस० सी० तक थी। उसका विषय रसायन शास्त्र था। उसका कद पांच फुट था पर देखने में गोल मटोल एवं उसकी त्वचा चिकनी थी। उसके स्वास्थ्य का स्तर सामान्य से थोड़ा उत्तम था पर उसमें पूर्ण स्त्रीयोचित सौन्दर्य था। अंजना दूर देखने वाला ऐनक इस्तेमाल करती थी। उसके पिता उत्तर प्रदेश की राज्य सेवा में इंजीनियर थे !

उसके आसन ग्रहण करते ही प्रश्नों की बौछार प्रारम्भ हो गयी। इस समय वातावरण थोड़ा संयमित था तथा राजीव अकेला ही प्रश्न पूछ रहा था। इसी बीच किसी ने कटाक्ष किया--लोग बड़े तेज बनते हैं पर लड़की को देखने पर होश गुम हो जाते हैं। यहाँ पर भी लड़कियों को प्राथमिकता देना ठीक नहीं है।"

अब राजीव ने अपने को मानसिक रूप से स्वस्थ्य किया तथा प्रश्न पूछना आरम्भ किया, "आप कहाँ से आयी हैं ?"

"मैं आगरा से आयी हूँ।" अंजना ने उत्तर दिया।

"आप कैसे आयी हैं ?" यह राजीव का दूसरा प्रश्न था, "बस ऐसे ही ट्रेन से--टैक्सी से।" अंजना ने कहा। इस पर राजीव तपाक से बोला, "अच्छा ! बालिका तो तेज मालूम पड़ती है।"

अन्जना ने धीरे कहा "थैंक्यू।"

दूसरी तरफ से उत्तर था, "मैन्सन नॉट।"

राजीव ने पूछा, "आपका विषय केमिस्ट्री है।" आप तो उसमें मास्टर हैं। अच्छा बताइये कि आपका आगरा से नागपुर आना भौतिक परिवर्तन है अथवा रासायनिक।"

अन्जना ने कहा, "आफ कोर्स—भौतिक।"

इस पर राजीव चुप हो गया फिर भी वह अपने भूले हुये ज्ञान को कुरेदता रहा तथा उसने साहसपूर्वक पूछा, "डी० डी० टी० का क्या पूरा नाम है ?"

अंजना ने कहा, "डाईक्लोरो डाई इथाईल ट्राई क्लोरो इथेन।"

इस पर सभी लोगों को दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ी। राजीव ने रहा सहा साहस एकत्रित करके एक अत्यधिक तकनीकी सवाल पूछा जो उसके लिये तो दुस्साहस था पर अंजना जैसी मेधावी लड़की के लिये आसान सिद्ध हुआ।

प्रश्न था—"टाल्यून का क्या सूत्र है ?"

अंजना ने तुरन्त उत्तर दिया, "सी$_6$ एच$_5$ सी एच$_3$"

राजीव ने कहा, "यह नहीं है।"

अन्जना ने मुस्कराकर कहा, "नहीं, यही है।" इसी बीच एक युवक बोल उठा, "सूत्र तो यही ठीक है।"

सभी लोग राजीव की ओर देखकर खिलखिलाकर हँसने लगे। राजीव को सभी के सामने झेपना पड़ा। मानों रैगिंग करने वाले की रैगिंग स्वयं हो गयी हो।"

अब राजीव ने रैगिंग क्षेत्र के शीर्षस्थान से अपना नाम काट दिया। तत्पश्चात् अन्य लड़के सक्रिय हो गये पर राजीव अंजना की तरफ चोरी-चोरी देखता रहा। यद्यपि वह उस समय भी दूसरे लड़कों की रैगिंग में भाग ले रहा था पर उसके मस्तिष्क में बार-बार अंजना के उत्तर बिजली की भाँति कौंध जाते थे। अब रैगिंग की सभा समाप्त हुई। इसके पश्चात राजीव ने एकान्त में सुअवसर पाकर अंजना से कहा, "मुझे अफसोस है, आपको मेरे कारण परेशान होना पड़ा।" अंजना ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "यह सब ठीक है। ऐसा तो नयी-नयी जगह होता ही है। उस पर राजीव धन्यवाद तथा दोनों परस्पर—"फिर मुलाकात होगी" कहकर कमरों में चले गये।

लड़कियों के कमरों की पंक्तियाँ भी उसी छात्रावास के नीचे वाले फर्श में थी।

भौतिक रूप से तो राजीव अंजना से विदा लेकर कमरे में आ गया पर उस दिन राजीव रात्रि को काफी देर तक नहीं सो पाया। बार बार अंजना के उत्तर एवं उसकी मधुर भाव भंगिमा उसके मस्तिष्क में कौंधती रही।

दो

नागपुर के वातावरण में सभी लोग स्वयं को समायोजित करने का प्रयत्न कर रहे थे। लड़कियाँ अपने-अपने अवलंब की खोज में थीं। वे चाहती थीं कि यदि उन्हें कोई साथी अथवा जीवन साथी मिल जाये तो प्रशिक्षण का एक वर्ष का समय अच्छी तरह व्यतीत हो जायेगा। सुअवसर प्राप्त होने पर लगभग प्रत्येक लड़का प्रत्येक लड़की से बात करने का प्रयत्न करता था। लड़कियाँ भी चाहती थीं कि शीघ्र ही उन्हें सभी लड़कों के स्वभाव के विषय में जानकारी प्राप्त हो जाये। रात्रि में जब लड़के-लड़कियों के समूह पृथक-पृथक बैठते थे तो विपरीत सैक्स अथवा कालेज के अध्यापकों एवं अध्यापन के विषय में ही अधिकांश चर्चा हुआ करती थी। विवाहित व्यक्ति इन चर्चाओं को आनन्द पूर्वक सुनते थे, पर सक्रिय नहीं थे।

अन्जना के कमरे में एक दिन जमवट लगा। चर्चा का विषय था— नया परिवेश। कल्पना ने हँसी मजाक में कहा,“ अन्जना ! क्या, बात है ? राजीव तुमसे बड़ा बढ़-चढ़ कर प्रश्न पूछ रहा था।” अंजना ने कहा “तुम चुप होने का क्या लोगी ?” कल्पना ने तपाक से उत्तर दिया, “तुम्हारे दिल की बात।”

इस प्रकार से युग्म बनते रहे। जब कुछ लोग एक संग बैठते थे तो केवल

जोड़े ही बनते थे और कुछ नहीं। शनैः शनैः वातारण स्थिर हुआ तो कुछ बेमेल जोड़े भी बनने लगे। एक जोड़ा एक लम्बी लड़की एवं ठिगने लड़के का बना। एक चश्में वाली लड़की एवं सुन्दर लड़के का बना तो एक लम्बे लड़के एवं छोटे कद की लड़की का बना। एक जोड़ा पंजाब एवं मद्रास का बना। दूसरा पंजाब एवं आसाम का बना एवं अन्य एक बना यू० पी० एवं महाराष्ट्र का। वास्तव में भारत का पूर्ण विस्तार इस कालेज के छोटे से जीवन में था।

राजीव का कमरा लड़कों की बैठक का गढ़ बन गया। अध्ययन की किसी को चिन्ता न थी क्योंकि सेवा से निवृत्त करना असम्भव था। अतः लड़के प्यार एवं जोड़ो के विषय में विशेषतः चर्चा किया करते थे। वार्तालापों के मध्य राजीव सोचता – "जब सभी जोड़े ही बन रहे हैं तो क्यों नहीं मैं अंजना के साथ अपना युग्म बना लूं, जो मेरे कद के अनुसार है एवं जाति और प्रदेश में भी बहुत भिन्न नहीं है। अन्यथा इस कालेज में एक वर्ष कैसे गुजरेगा ? यदि यह प्रेम नहीं तो सहचर ही सहीं।"

ट्रेनिंग कालेज में सभी प्रशिक्षणार्थियों को परिपक्व समझा जाता है। यह उचित भी है। भारत जैसे निर्धन पर विशाल देश में एक हजार मासिक वेतन एवं प्रथम श्रेणी की सरकारी सेवा उपलब्ध हो जाये तो ये सामाजिक एवं आर्थिक दोनों दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ श्रेणी होगी।

इस बड़े खिताब के रहते हुए कालेज के अध्यापक भी संदेह नहीं करते थे कि लड़के लड़कियों का पारस्परिक मिलन एवं बंधुता कोई अस्वाभाविक अथवा भय का कारण है। अध्यापक वृन्द कहते थे, "तुम लोग देश की सर्वश्रेष्ठ सेवा में हो। तुम अपने भाग्य के स्वयं जिम्मेदार हो तथा प्रत्येक बात को स्वयं समझते हो, हम तुम्हारे मस्तिष्क में प्रत्येक बात को नहीं भर सकते। आप लोगों का मस्तिष्क पूर्ण विकसित है। हम केवल आप को रास्ता बता सकते हैं जिस दिशा में इस उपजाऊ मस्तिष्क को मोड़ना आपका कर्तव्य है। अतः आप लोगों के व्यक्तिगत सम्बन्धों, रहन-सहन एवं आचार-व्यवहार में कालेज के प्रशासन का कम से कम हस्तक्षेप रहेगा। प्रत्येक वर्ष यहां अनेकों

जोड़े बनते हैं तथा इस वर्ष भी बनेगें। क्योंकि विशेषतः महिलाओं के लिए अपनी योग्यता के अनुसार नये क्षेत्र तथा जिलों में जाने पर योग्य वर पाना मुश्किल होता है। क्योंकि जिले में आपकी श्रेणी के कुल तीन चार अफसर ही होते हैं तथा वहां रोमांस लड़ाना भी मुश्किल है क्योंकि लोक सेवक सरकारी कर्मचारी का व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों जीवन अच्छे होने चाहिए। अतः ऐसा देखा गया है कि जो लड़कियां यहां पर अपने योग्य वरों को चुन लेती है वे जीवन भर प्रायश्चित नहीं करती हैं। शेष अधिकांशतः कुँआरी ही रह जाती है। कभी-कभी वे लोग कहते थे, "कभी-कभी इन प्रेमी जोड़ों के कारण कालेज का वातावरण विषाक्त हो जाता है। अतः इस अवस्था में किसी को दूसरे के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिये, न किसी को धोखा खाना ही चाहिये। हमें ही नहीं, सरकार को विश्वास है कि आप लोग इस योग्य हैं क्योंकि लोक-सेवा आयोग ने आपकी योग्यता दृष्टिगोचर कर आपको यह सिंहासन दिया है।

इस प्रकार कालेज का वातावरण प्रेम में उत्प्रेरक था। यह प्रेम भावी जीवन तय करने के लिए सम्बल था। यह स्कूली या कालेजी प्रेम न था जो कि स्कूल या कालेज के वार्षिक अधिवेंशन की समाप्ति पर अथवा स्कूल या कालेज के बन्द होने पर या छोड़ने पर ही प्रेम का अध्ययन समाप्त हो जाता है तथा जीवन में व्यक्ति परस्पर एक दूसरे को तनिक याद भी नहीं करते हैं। यह परिपक्व अवस्था का प्रेम था एवं सिर्फ "लरिकाई को प्रेम कहौं हरि कैसे छूटै" वाली बात नहीं क्योंकि इसमें केवल साहचर्य ही नहीं अपितु परस्पर मिलन एवं साहचर्य दोनों था।

इस कालेज का वातावरण सरकारी फाइलों एवं सरकारी भवनों की तरह जीर्णशीर्ण एवं भावहीन नहीं था, जिसको अनेकों व्यक्तियों ने दृष्टिगोचर किया, उपयोग किया पर बिना किसी आशक्ति के ये फाइलें एवं भवन दूसरों तक हस्तान्तरित होते रहे एवं उन पर धूल जमती गयी मानो—

"कर्मण्याधिका रस्ते मा फलेषु कदाचन"

का जीता जागता उदाहरण यहीं था। कालेज के वातावरण में जीवन उन्मुक्त था। सदस्यों में जीने की कसक थी। विरोधी सैक्स के लोगों में मध्यान्तर के समय बातचीत के दौर जी भरकर चलते थे तथा प्रत्येक पचास मिनट समयान्तर में अरूचिकर भाषण एवं पठन-पाठन के पश्चात् सभी की दृष्टि आने वाले पांच मिनट के मध्यान्तर पर होती थी। कभी-कभी व्यक्तियों का धैर्य पचास मिनट के पूर्व ही समाप्त हो जाता था और कागज के बेजान टुकड़ों पर ही प्रेम की लहर दौड़ जाती थी। प्रारम्भ में इस कार्य में सभी सहायक थे तथा पत्र के आगे प्रसार के लिये माध्यम की चालकता अति उत्तम थी।

शनैः शनैः कुछ युग्म अनिश्चितता के कोहरे से निश्चितता एवं परिपक्वता के सुनहरे प्रकाश में पदार्पण करने लगे। प्रथम जोड़ा एक आसामी आदिवासी लड़के एवं पंजाबी लड़की का प्रकाश में आया। वे लोग पश्चिमी सभ्यता के स्थायी मूल्यों एवं तेज जीवन पर विश्वास रखते थे। स्वच्छन्दता पूर्वक वार्तालाप करना, घूमना, एक दूसरे के कमरे में जाना, अंग्रेजी गीतों को गुनगुनाना, पाश्चात्य संगीत धुनों पर थिरकना एवं चमकीले और प्रदर्शनकारी वस्त्र पहनना आदि उनके जीवन के अंग थे। मध्यम श्रेणी से आये प्रशिक्षणार्थी इस जीवन दृष्टि से प्रभावित नहीं थे। वे प्रेम का अर्थ एकाधिपत्य समझते थे अर्थात एक लड़का केवल एक लड़की के लिये तथा एक लड़की एक लड़के के लिये तथा इसकी परिणति परस्पर विवाह-बन्धन में ही मानते थे। अतः उनके मूल्यों के अनुसार यह एक बेमेल अनुबन्धन था। दूसरा युग्म जो सामने आया, वह था सुधा एवं करूणाशंकर का। करूणा शंकर राजीव के पास के कमरे में रहता था तथा राजीव की इस जोड़े के तैयार करने में सर्वोपरि भूमिका थो। वह अपने साथी को प्रतिदिन इस कदम के लिये प्रोत्साहित करता था तथा सुधा तक करूणाशंकर के सन्देश कुछ सत्य एवं कुछ अपनी ओर से बनाकर पहुँचाता था। कभी-कभी राजीव सुधा से कहता, सुधा, करूणाशंकर आपकी अत्यन्त प्रशंसा करता है। वह कहता है कि वास्तव में आप बहुत सुन्दर हैं एवं आप ही आदर्श भारतीय नारी हैं।

ये सभी बातें जहाँ सुधा को रोमांचित करती थीं वहीं राजीव को भी अनजाने में प्रभावित करती रहती थीं।

तीन

दिसम्बर का महीना था। कक्षाएँ नियमित हो रही थी तथा प्रशिक्षणार्थियों के मस्तिष्क भी पाठ्यक्रम एवं भविष्य के लिए तैयार हो चुके थे।

सुहावना समय था। नागपुर के शीतकाल किसी सुन्दर पार्वत्य-स्थल की ग्रीष्म की भाँति ठंडी-ठंडी फुहार के सदृश ठंडक देने वाले होते हैं। मन में यह विचार बार-बार आता है – काश, देश की राजधानी दिल्ली जाड़ों में नागपुर जाये। जैसे लोग गर्मियों में मंसूरी, काश्मीर, नैनीताल एवं दार्जिलिंग तथा शिमला जाते हैं उसी प्रकार सर्दियों में उन्हें नागपुर जाना चाहिए। ऐसी प्रकृति की गोद में प्रेम के अंकुरों को पनपने के लिए आवश्यक स्वाद एवं पानी स्वतः प्राप्त हो जाता है।

कक्षाएँ चल रही थी। सभी पूर्ण क्षमता से तैयार थे। क्योंकि कालेज के निर्देशक सप्ताह में बुधवार के दिन अनिवार्यरूप से आते थे। यह भाषण प्रतियोगिता का दिन था जिसे "प्रोवेशनर्स टॉक" का दिन कहते थे। इस दिन चुने हुए तीन-प्रशिक्षणार्थी जिसमें एक महिला होती थी, किसी अपने चुने हुए विषय पर छोटी सी पन्द्रह मिनट की वक्तृता तैयार करके बोलते थे। भाषण के अन्त में पाँच मिनट प्रश्नोत्तर के लिये होते थे। अंजना का नम्बर बीच में आया। अंजना ने बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया जायें, विषय पर भाषण दिया। यह उसकी रूचि का विषय ज्ञात हुआ। भाषण अत्यन्त उत्तम था। ऐसा ज्ञात हुआ जैसे गृह-विज्ञान विषय में वह पटु हो। कुछ लड़कों ने पीछे से आवाजें कसी–'यदि यही करना था तो एक लड़के का जीवन आपने क्यों नष्ट किया जिसकी सीट छीनकर आप इस नौकरी में आयीं।'

दूसरे लड़के ने कहा, 'इस महाशया ने एक नहीं अपितु-तीन चार लोगों के

भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। अर्थात लड़का, उसकी पत्नी एवं परिवार। अन्य एक लड़के ने पीछे से कहा, 'आफिस में तो आपको सभी के बच्चों का देखभाल अफसर (वैलफियेर आफिसर) बनाना चाहिए। ऐसी लड़कियों को घर पर बैठना चाहिए।''

राजीव भी इन शब्द उछालने वाले लड़कों के समूह में था।

इस पर अंजना की प्रतिक्रिया थी, ''चाहे कोई लड़की या महिला अफसर बन जाये पर वह भगवान की देन को नहीं नकार सकती है। हमें कार्यालय के साथ-साथ यह भी करना है। कुछ लड़कियाँ शर्म या भय के कारण यह बात करने से डरती हैं। पर मैं साहस के साथ ऐसा कह रही हूँ। उस जीवन का अनुभव किये बिना एक स्त्री का जीवन अपूर्ण है।''

इस कथन से लड़कियों के सिर झुक गये एवं आँखे लजा गयीं पर राजीव के हृदय में यह बात घर कर गयी। उस दिन रात्रि के समय करुणाशंकर ने राजीव से कहा, ''गुरू! तुम तो मुझसे सुधा के लिए कहते हो। यदि तुम उस कुड़ी को पटा लो तो तुम्हारे तो चारों हाथों लड्डू होंगे। वह अफसर है तथा गृह कार्यों में भी कुशल है।''

उस दिन की बातें राजीव के मस्तिष्क में बार-बार कौंधती रही। अगले बुधवार को राजीव के बोलने का नम्बर आया। राजीव का विषय था ''भारत की विदेश नीति''। श्रोताओं ने विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की बौछार की पर वह गौतम बुद्ध की भाँति पत्थरों की बौछार में भी शांत रहा तथा अपने विरोधियों को चुलबुले उत्तर देता रहा। यह उसकी साधना-परीक्षा का दिन था। संजय को उसने तैयार कर रखा था कि वह उससे एक विशेष कठिन प्रश्न पूछेगा। संजय ने उससे पूछा—''इन्कम टैक्स के विषय में हमारी विदेश नीति क्या है।''

सभी लोग इस दुस्साध्य प्रश्न को सुनकर विस्मित हो गये पर राजीव ने तो इस प्रश्न का उत्तर पहले से ही तैयार किया था। उसने तनिक विचारशील भाव-भंगिमा से प्रश्न का सही एवं साहसपूर्ण उत्तर दिया। उत्तर सुनकर सभी

लोग दाँतों तले अँगुली दबाने लगे। अन्त में, राजीव का उस दिन का भाषण सर्वोत्तम घोषित किया गया तथा कालेज के निर्देशक महाशय ने राजीव की भरपूर प्रशंसा की। यह सभी के लिए ईर्ष्या का विषय था। नौकरशाही में बड़ा अफसर मुश्किल से ही छोटे अफसर की प्रशंसा करता है। उसे इस विषय में कृपण होना सिखाया जाता है। पर अंजना का हृदय फूला न समा रहा था। यह सही किंवदन्ती है कि विवाह के जोड़े स्वर्ग से निश्चित होते हैं, पर ऐसा ज्ञात होता है कि प्रेम-युग्म भी स्वर्ग में बनाये जाते हैं।

इसके पश्चात् राजीव निर्देशक श्री झुनझुनवाला का स्नेह-पात्र बन गया तथा निर्देशक साहब सभी पार्टियों एवं दावतों में उसकी आम प्रशंसा करने लगे। स्वयं राजीव अपने निराले ढंग एवं आचार-विचार से अन्य सभी लोगों का प्रेम जीतने में सफल हुआ। भाषण के घन्टे की समाप्ति पर सभी ने राजीव को बधाइयाँ दी, पर अंजना एक ओर खड़ी राजीव का पथ निहार रही थी कि राजीव शीघ्र ही भीड़ से स्वतंत्र हो और मैं उसे बधाई दूं। इसी बीच अनिश्चितता एवं भविष्य की गहराइयों में वह खो रही थी। एकाएक राजीव उस ओर मुड़ा। ऊपरी तौर से अनजाने में पर वह अंजना से आज का अपना सही परीक्षा परिणाम जानना चाहता था।

अन्जना ने मधुर स्वर में कहा—"राजीव, बहुत सुन्दर! मेरी हार्दिक बधाइयाँ।"

क्षणभर के लिए जैसे वायु रुक गयी हो। इतने में इस अलौकिक शांति एवं सुख को भंग करते हुए राजीव के मित्रगण आ गये और राजीव को उनके साथ जाना पड़ा। मित्रों से वार्तालाप करते हुए राजीव आज कुछ खोया-खोया सा था, पर उसके मित्र बुद्धिमान एवं चतुर थे। उन्होंने कहा, "भाई! राजीव आज क्यों अच्छी तरह से बात करेगा? अंजना ने उसे जो बधाइयाँ दी हैं।"

राजीव ने कहा, "अभी यार, ऐसा न बोलो।" पर राजीव के हृदय में आज परा सुख था, उसके भाषण का परिश्रम आज पूर्णतः सफल हो गया था।

चार

स्टाफ कालेज में कक्षाएँ नियमित होने लगीं तथा प्रशिक्षणार्थी भी उनमें रूचि लेने लगे। कुछ कथात्मक विषयों जैसे कानून, आफिस-विधि आदि में छात्रगण विशेष असुविधा का अनुभव नहीं करते थे क्योंकि अधिकांश लोग कला विषयों से ही आये थे। विज्ञान का हम कितना ही शोर मचायें, आज भी हमारे प्रशासन के उच्च पदों पर तथा प्रशासनिक सेवाओं में कला विषयों के अध्येताओं का ही प्रतिनिधित्व प्रमुखतः है। स्टाफ कालेज भी इसका अपवाद न था। दूसरी ओर बुक-कीपिंग एवं एकाउन्टेन्सी का विषय था तथा मुड़िया सीखकर लाला के बही खातों से हिसाब तैयार करने का प्रयोगात्मक कार्य था। यह उचित ही था क्योंकि इन्कम टैक्स का कार्य बिना हिसाब किताब सीखे कुछ हो नहीं सकता हैं। यह एक शुष्क विषय था। अतः बुक कीपिंग प्रशिक्षणार्थियों के मध्य परिचर्चा का मुख्य विषय बन गया, जैसे कि आई० ए० एस० प्रशिक्षणार्थियों में घुड़सवारी एक परिचर्चा का विषय रहता है। पचास प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षणार्थी बुक कीपिंग के विरोध में थे तथा प्रायः कहते थे, "हाय राम! कैसी सर्विस में आ गये हैं।" पर विज्ञान विषयों को लेकर आने वाले प्रशिक्षणार्थियों के लिए यह विषय अत्यन्त रोचक एवं सरल था। अंग्रेजी साहित्य के विद्यार्थी तो पछत्तर तथा चौरासी के योग में भी भूलें कर देते थे। भला उन्हें बुक कीपिंग के उत्तम अध्यापक भी कहाँ तक बुक कीपिंग सिखाते, सुधा भी अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० थी तथा करुणाशंकर भौतिक विज्ञान में एम० एस० सी० था। अतः सुधा की बुक कीपिंग में कमजोरी का लाभ करुणाशंकर को मिला। परिस्थितिवश सुधा तथा करूणाशंकर पास-पास सीटों पर बैठने लगे तथा सुधा करूणार्शकर से बुक कीपिंग सीखने लगी। श्यामल चट्टोपाध्याय

बड़ा मसखरा लड़का था। वह बोला, "वह तो प्रेम का पाठ सीख रही है न कि बुक कीपिंग। क्या कक्षा में बुक कीपिंग सीखने के लिये लड़कियाँ मर गयी हैं? बुक कीपिंग के लिये तो जैन साहब ही अधिक हैं। मुझे तो दो घण्टो में ही अजीर्ण होने लगता हैं। लोगों के अथाह धैर्य को धन्य है।"

पर बुक-कीपिंग के जोड़े बनते गये। उन्हें बुक-कीपिंग के अध्यापक भी न रोक पाये यद्यपि इन जोड़ों से कक्षाओं में अत्यन्त विघ्न होता था।

अंजना बुक-कीपिंग में प्रारम्भ से तेज न थी पर राजीव भौतिक शास्त्र का विद्यार्थी था तथा बुक-कीपिंग की समस्याएँ वह बाते करते-करते हल कर देता था। अंजना कक्षा में निरन्तर मंथर गति से गतिमान रही एवं अपने छोटे-छोटे कोमल हाथों से रजिस्टरों को रंगती रही। इसका फल यह हुआ कि वह बुक-कीपिंग में भी राजीव से प्रवीण हो गयी तथा बुक कीपिंग में दुर्बल लड़कों एवं लड़कियों की ईर्ष्या-पात्र बन गयी। ठीक ही कहा गया है—"करत-करत अभ्यास के जड़मत होय सुजान," अब अहम् रहित अधिकांश लड़कियाँ उसी से बुक कीपिंग सीखने लगीं। जो लड़के-लड़कियाँ अन्य विषयों में इंग्लैंड एवं अमेरिका की अंग्रेजी के प्रवाह में प्रश्न करते थे, वे बुक-कीपिंग के पीरिएड में आकर ध्वस्त हो जाते थे। अंग्रेजी अच्छी बोलने से मस्तिष्क नहीं बढ़ जाता है। बुक-कीपिंग विशुद्ध दिमाग की कसरत का विषय था। ड्राइंग-रूम के वीर इस पीरिएड में स्वयमेव मान हो जाते थे।

बुक-कीपिंग का प्रथम टेस्ट हुआ। परीक्षा में अंजना के अस्सी प्रतिशत तथा राजीव के सत्तर प्रतिशत अंक आये। करुणाशंकर के साठ प्रतिशत नम्बर आये परन्तु सुधा का शून्य आया। अतः इस परीक्षाफल से दोनों में मित्रता और भी प्रगाढ़ हो गयी। सुधा की इस मित्रता से पंजाब के लड़के बहुत ईर्ष्या करते थे क्योंकि पंजाब के स्तर से सुधा एक सुन्दर एवं सभ्य महिला थी।

परीक्षण होते रहे, बुक-कीपिंग चलती रही, पर छात्रावास के आन्तरिक जीवन में कोई विशेष अन्तर न पड़ा। एक वर्ग के लड़के महिलाओं से सदैव उदासीन रहते थे तथा उन्हें अन्य लड़के-लड़कियों का मजाक बनाने में ही अपनी

इतिश्री ज्ञात होती थी। वे अपना अधिकांश समय सायं बैडमिन्टन, टेनिस या टेबल टेनिस खेलने में व्यतीत करते थे तथा बाकी समय में शीशे के सामने अपने शरीर की माप देखते रहते थे। दूसरे अल्प वर्ग के प्रशिक्षणार्थी केवल शराब पीने एवं जुआ खेलने में व्यस्त रहते थे तथा अपने छोटे से ग्रुप में मस्त रहते थे।

इस समाज के विकास में कुछ आश्चर्य जनक चरित्रों ने जन्म लिया। भगवान जाने कि ऐसे चरित्र अन्तिम रूप से नागपुर के वातावरण में निर्मित हुए थे अथवा उनके जीवन-काल के अभी तक के कार्य-कलापों के फल थे। ऐसा ही एक चरित्र था श्री रामलाल कुन्डु का जो कि यद्यपि आई. ए०. एस. हो गये थे पर सामान्य बुद्धि के व्यक्ति थे। वे स्वस्थ एवं सुन्दर थे। शनैः शनैः वे एक दक्षिण भारतीय महिला के आशिक हो गये। उनके सामने सब समय यह समस्या रहतो थी कि कैसे उस तक पहुँचे। उन्होंने इस कार्य में अपने मित्र विनोद का सहारा लिया। उन्होंने कहा, "भई, पहले तो उसने ही की थी तथा कह रही थी—मुझसे कौन बातें करेगा ?

यही तो—तीन डायलांग को लेकर वे सम्पूर्ण प्रेम कहानी तैयार कर देते थे।

पश्चाताप पूर्वक वे कहते थे, 'भूल से मैंने उसे प्रथम तो मना कर दिया। अब वह मुझे नहीं चाहती है।'

कुन्डु ने विनोद से कहा, "यदि तुम हेमलता से यह कहो कि मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ तो मैं तुम्हे काफी पिलाऊँगा।"

विनोद के लिये प्रतिदिन झूठ बोलना कठिन था कि उसने हेमलता से बात की थी। एक दिन साहस एकत्रित करके उसने हेमलता से कह दिया, "कुन्डु तुम्हारी अत्यधिक प्रशंसा करता है।"

हेमलता क्रोध में बोली, "व्हाट नांनसेन्स ! यह क्या नालायकपन है।" बस यहीं कहानी का अन्त हो गया। पर कुन्डु की तरफ से प्रेम कहानी पूर्ववत चलती रही जो कि कभी-कभी विकृति-प्रदर्शन में परिवर्तित हो जाती थी। राजीव कुन्डु का गुरू था तथा उसका मार्ग दर्शन करता था इसलिए कुन्डु अवसर

प्राप्त होने पर अंजना से कहता, "तुम एक बहुत अच्छी लड़की हो तथा राजीव भी बहुत अच्छा लड़का है।"

कालेज जीवन में अनेक दुःखान्त विषय होते हैं पर सायंकाल बाजारों एवं सामूहिक भोजों के पश्चात महिलाओं एवं पुरुषों को साथ-साथ घूमते हुए देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि उनके चेहरों पर चिन्ता की कोई शिकन भी है। यह सत्य कुछ सांस्कृतिक संध्याओं, त्योहारों एवं फिल्मों के प्रदर्शन में पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है। करूणाशंकर को शेर-शायरी का शौक था पर वह मंच तक न आ सका। वह केवल ड्राइंग रूम का कलाकार था। परमजीत भी खास कलाकार न थी। वह केवल सामूहिक पंजाबी गीतों में ही भाग लेती थी।

अंजना ललित-कलाओं में समृद्ध थी। वह सामूहिक कार्य-क्रमों हेतु हस्त-शिल्प की सजावट में नेतृत्व करती थी। हिन्दी नाटकों एवं एकांकी में अनिवार्य रूप से नायिका का पाठ लेती थी पर इसके विपरीत राजीव इन बातों में शून्य था। वह तो लड़कों का नेता था तथा छात्रावास में रात्रि में विभिन्न जानवरों, पशु-पक्षियों की आवाजें निकालने में नेतृत्व करता था।

पाँच

रेगिस्तान में भी मानसून के झोके आया करते हैं। स्टाफ कालेज के नीरस जीवन में उल्लास, हर्ष एवं आनन्द के कुछ क्षण तब आते थे जबकि बाहर यात्राओं के कुछ कार्यक्रम बनते थे। ऐसा ही एक कार्यक्रम अजन्ता की गुफाओं को देखने के लिए तैयार किया गया।

राम निवास ने कहा, "बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा", जो प्रेम-युग्म अपरिपक्व थे उनमें परिपक्वता एवं रस संचार करने का एक सरकारी अवसर आया।

स्पष्ट था—राजीव-अंजना, करूणा शंकर-सुधा, कुन्डु आदि सभी इसी यात्रा में जाने को तैयार हो गये। बस में प्राय: लड़के एवं लड़कियाँ पृथक्-पृथक् बैठे पर घूमने में लड़कियाँ लड़कों का ही साथ पसन्द करती थीं। यह बात उन लड़कियों में भी देखी गयी जो किसी से अनुबन्धित होने की आशा नहीं करती थीं। भला अंजना ऐसे समय अपने को कैसे उपेक्षित अनुभव करती। अंजना ने अमरावती में रात्रि के समय एकान्त अवसर पाकर राजीव से कह ही दिया,'' राजीव क्या हम शहर घूमने चल सकते हैं ?''

राजीव ने तपाक से उत्तर दिया, ''स्वागतम् ! यह हमारा सौभाग्य है।''

रिक्शे में बैठकर अमरावती की सूनी गलियों में गुजरने पर दोनों के हृदयों में आज अत्यधिक उथल-पुथल हो रही थी। अन्ततः वे लोग कुछ लड़के-लड़कियों की समालोचना या आलोचना करके लौट आये तथा शुभरात्रि कहकर अपने कमरों में चले गये। यह मिलन बड़ा औपचारिक था। एक सर्विस या कक्षा में सहयोगी की भाँति सुधा एवं करुणा शंकर पैदल ही अपने विश्राम होटल के चारों तरफ टहलते रहे। टूर में इन लोगों के युग्म प्रसिद्ध हो गये और सभी के चर्चा के विषय बन गये। सभी इनकी गतियों पर दृष्टि रखने लगे पर प्रेम करने वाले लोक प्रशंसा एवं लोक निन्दा से उदासीन रहते हैं। आखिर या तो प्रेम मार्ग ही छोड़ो या संसार को त्यागो। अतः अंजना एवं राजीव को साथ रहना ही पड़ा। खाने के समय राजीव अंजना की ओर सम्मान एवं सभ्यता का प्रदर्शन करता था।

अमरावती में होटल वाले ने नाम मात्र के दाम लिए। एक कमरे का किराया पन्द्रह रुपये के स्थान पर केवल पाँच रुपये लगे एवं खाने पीने का प्रबन्ध स्थानीय आयकर विभाग का था। रास्ते में आयकर अधिकारी ने नाश्ता करा दिया वह तो पूर्ण भोजन से भी अधिक था। उसी प्रकार रास्ते भर दल का स्वागत होता गया। अमरावती के बाद औरंगाबाद मिला। औरंगाबाद में सभी ने चाय नास्ता किया। यहीं पर शुभ अवसर पाकर राजीव ने अंजना से पूछा, ''क्या आप चाय पियेगीं ?''

अंजना राजीव के साथ सहकर्मीभावना से चली गयी।

इस समय तक करूणा एवं सुधा इतने पास आ गये कि जहाँ करूणा अपने लड़कों के दल से पृथक हो गया वहाँ सुधा लड़कियों से पृथक हो गयी। करूणा सुधा के जोड़े का समाचार पूरे दल में चांदनी की भाँति फैल गया अथवा जैसे किसी युद्ध का समाचार देश में शीघ्रातिशीघ्र प्रसारित हो जाता है— मुख से मुख तक, व्यक्ति से व्यक्ति तक टेलीविजन एवं समाचार पत्रों से जनता तक।

दौलताबाद के पास आते ही सभी लोग इस आलोचना चक्र में फँस गये। कुछ का कहना था, "जिस प्रकार हमारा यह दल पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करता है उसी प्रकार मुहम्मद तुगलक ने दौलताबाद को देश के ठीक मध्य में होने के कारण ठीक ही चुना था। उसका कितना साहसपूर्ण निर्णय था? उसके इस शिक्षाप्रद कार्य से कभी भी दिल्ली से फिर राजधानी बदलने का प्रयत्न न हुआ न भविष्य में होगा।" दूसरे वर्ग का कहना था, "वह एक पागल बादशाह था, हाय! उसकी मूर्खता के कारण कितनी जन, पशु एवं सम्पत्ति की क्षति हुई।" सभी लोग उस सनकी बादशाह को श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए आगे बढ़े।

बस की गति किन्तु आलोचनाओं से मन्द नहीं हो रही थी तथा लगातार गन्तव्य की ओर बढ़ती जा रही थी। ऐसी भ्रमण यात्रा में लोग स्थान देखने कम जाते हैं, परस्पर मेल मिलाप एवं साहचर्य की भावना का संचार का उद्देश्य ही अधिक होता है।

कुछ लोग बस में माऊथ बैन्जों पर धुने छेड़ रहे थे तो कुछ लोग सुरीले एवं बेसुरीले स्वरों में गाये जा रहे थे–चिल्लाये जा रहे थें। कुछ लोग इसी बीच एक दूसरे की समालोचना में व्यस्त थे तो दूसरे लोग बौद्धिक वाद प्रतिवाद में। कुछ अंग्रेजीदां लड़कें हिन्दुस्तानी लड़कों से कह रहे थे, "भई, अंग्रेजी बोलना ही जरूरी नहीं है। हिन्दो सभी समझते है। आपलोग क्यों अंग्रेजी की टाँग तोड़ दे रहे हो?

इस पर कुन्डु ने झुंझला कर कहा, "मैं अंग्रेजी फिग्रेजी तो जानता नहीं हूँ। यदि किसी को साहस हो तो आकर मेरा भुज-बल देख लें।

अप्रिय घटना घटते-घटते बच गयी। इस पर कुछ निरपेक्ष लड़के इस वाद-प्रतिवाद में उलझ गये कि कौन अंग्रेजीदां किस्म के लड़के हैं और कौन हिन्दुस्तानी किस्म के।

वाद-विवाद का आरम्भ श्री श्यामनारायण पांण्डेयजी ने एवं श्री सदाशिव बाजपेयी ने किया। पाण्डेयजी सम्पूर्ण वैच में केवल एक हिन्दी के पंडित थे तथा उसमें डाक्टरेट भी थे। श्री बाजपेयी जी अंग्रेजी में एम० ए० थे। पर पूर्वीय उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे।

श्री पांडेय जी ने कहा, "आजकल हमारे देश में पढ़े लिखे लोगों के बीच अंग्रेजी एवं हिन्दुस्तानी दो वर्गो में संघर्ष है—चाहे इसे फ्रायड के मनोविज्ञान के सिद्धान्त के आधार पर सिद्ध किया जाये अथवा सात्रे के अस्तित्ववाद के सिद्धान्त के द्वारा। भारत के शिक्षित, एवं नव-धनी लोगों के मध्य मार्क्स का पुंजीवादी सिद्धान्त नहीं लागू होगा क्योंकि यह एक ही वर्ग के भीतर का संघर्ष है। यहाँ पर मनोविज्ञान अथवा मानसिक विकारों के सिद्धान्त लागू होंगे।

सदाशिव ने कहा, "पांडेय जी,! आप व्यावहारिक सिद्धान्त भी प्रकाशित करेगें अथवा सिर्फ पुस्तकों में लिखें सिद्धान्तों की तोते की तरह व्याख्या में हमारा समय नष्ट करते रहेगें। यह तो मैं अनेक बार पढ़कर बाल सफेद कर चुका हूँ। यदि आपकी यहाँ कोई नई व्याख्या हो तो बोलिये, नहीं तो चुप हो कर बैंठिए। मुझे इस शोर शराबे एवं हो-हल्ले में आनन्द लेने दीजिए।"

श्यामनारायण जी ने कहा, "भई, मैंने उस सिद्धान्त रूपी मोती की खोज कर ली है या कहिये कि मैंने मानसिक भावनाओं एवं विकारों का अध्ययन करके उन्हें दो भागों में विभाजित करने की चेष्टा की है जो इस प्रकार है :—

अंग्रेजीदां वर्ग वह है जिसमें सदस्य प्रारम्भ से अंग्रेजो शिक्षा अथवा कान्वेंट स्कूल एवं अंग्रेजो खान-पान से आये है। जिनके परिवार में जन्म से ही अंग्रेजी का वातावरण था। तथा जिसका प्रारंभ से ही आधुनिक जीवन में पालन-पोषण

हुआ है। इस वर्ग में एक जमींदार बड़ा व्यवसायी या धनी व्यक्ति हो सकता है या एक बड़ा आफिसर या व्यवसाय प्रशासक भी हो सकता हैं अथवा मध्यम वर्ग का प्रारम्भ से अंग्रेजी वातावरण में पला परिवार भी हो सकता है अर्थात् जिनका अंग्रेजी भाषा का उच्चारण एवं रहन सहन वास्तव में अंग्रेजीयत से रंगा है तथा विशेष तौर से जिनके व्यक्तित्व में यह पूरे तौर से समा गया हो।"

"हिन्दुस्तानी वर्ग वह है जिसके सदस्य आरम्भ से ही पाठशाला में पढ़े हैं, जिनकी शिक्षा-दीक्षा प्रायः ग्रामीण अंचल में हुई तथा जिनकी शिक्षा के ऊपर अति अल्प व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त जिनके माता-पिता विशुद्ध भारतीय परम्परा के पोषक है तथा जिनके घर में धार्मिक रामायण, वाइविल, कुरान आदि का वातावरण है। इस वर्ग के लोग प्रारम्भ से अंग्रेजी माध्यम से नहीं पढ़े होते है अथवा यह सभी न होते हुये भी सम्भवतः भारतीय परम्पराओं के पोषक हैं। उनका अंग्रेजी का उच्चारण स्वभावतः भारतीय अंग्रेजी का उच्चारण है जो समय के सापेक्ष अनेक प्रकार से परिबर्तित हो गया है तथा वह अनेक मौलिकता खो बैठा है।"

"हिन्दुस्तानी वर्ग के लोग यदि उच्च पदों पर आसीन हुए हैं तो अपने व्यक्तिगत प्रयासों के आधार पर पहुँचे हैं। आवश्यकतानुसार उन्होंने अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण की है तथा अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त किया है।"

विज्ञान के विद्यार्थी इस श्रेणी में तुरन्त आ जाते हैं क्योंकि परिश्रम के दबाव के कारण उन्हें बाहरी जीवन में पिछड़ जाना पड़ता है।

दूसरी ओर अंग्रेजीदां लोग बालिकाओं को सहज आकर्षित कर लेते हैं पर हिन्दुस्तानी लोग इस दिशा में पीछे रह जाते हैं। जहाँ अंग्रेजीदां लड़के अंग्रेजीदां एवं हिन्दुस्तानी दोनों प्रकार की कन्याओं को आकर्षित करते है, हिन्दुस्तानी लड़के केवल हिन्दुस्तानी कन्याओं को आकर्षित करते हैं।

पांडेय जी इस प्रकार विचार धारा के गहरे समुद्र में खो गये और कहने लगे, "तीसरे वर्ग के वे लोग हैं जो जीवन-धारा के अनुसार बनावटी, कृत्रिम या "सियडी" कहलाते हैं। उनका व्यावहारिक जीवन में कोई विशेष सिद्धान्त नहीं

होता तथा वे बेपेदो के लोटे की तरह लुढ़कते रहते हैं। उनका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं होता है। कभी अंग्रेजीयत की नकल करेगें तो कभी स्वयं को भारतीय दिखाने की गौरवानुभूति करेगें। विशेषतः ये लोग अंग्रेजीदां लोगों के रहन-सहन, बातचीत आदि के अनुसार ही अपने कार्यों की इतिश्री मानते हैं तथा उन लोगों के पीछे रहने की चेष्टा करते हैं।

सदाशिव विचलित होकर बोले, "ओ! पांडेय जी, छोड़िये आप कहाँ के भ्रमजाल में पड़े गये हैं, मुझे आनन्द लेने दीजिए।

पांडेय जी ने कहा, "भाई आनन्द भी कोई लेने की वस्तु है। यह तो स्वतः वन्य प्रपात की भाँति आपके मनस्थली में प्रवाहित होता है।"

अच्छा! बस कीजिए पांडेयजी "चुप रहने के लिये आप कितने पैसे लेगें?"

इस प्रकार की विभिन्नता एवं वेकायदा में एकता एवं एक रस लाने के लिये राजीव ने कुछ बेसुरे एवं कुछ सुरीले गायकों के साथ सहगान प्रारम्भ कर दिया। सहगान के माध्यम से ही ज्ञात हुआ कि आजकल फिल्मों के अपूर्व प्रभाव के कारण सभी में कुछ कमोवेश गाने की क्षमता विराजमान है। सहगान खूब जमे एवं साथ में सहायक निर्देशक महाराज भी खूब प्रसन्न हुए।

समय कब बीता, पता ही नहीं चला। सड़कों पर वायु के अवरोध को चीरता हुआ एवं अनेक वाहनों से मुलाकात करता हुआ अजंता की गुफाओं के पास यात्री वाहन आ पहुँचा एवं सभी यात्री-पोशाकों में बाहर निकल पड़े।

छह

सभी के एकत्रित होने पर सहायक निर्देशक ने निर्देश दिया, "आप लोगों के ठहरने की व्यवस्था यहीं पर "ब्लूडायमंड" होटल में है। आप लोग नौ बजे रात्रि तक भोज में अवश्य आइये। दोपहर के खाने की व्यवस्था आप लोगों को

स्वयं ही करनी होगी क्योंकि आप लोगों के रसास्वादन में मैं बाधा-सृष्टि नहीं करना चाहता हूँ। सामूहिक तौर पर एक गाइड किया गया है पर, आप स्वच्छन्द हैं।'

इस उद्घोषणा का बहुमत से स्वागत किया गया एवं अधिकांश व्यक्ति पृथक-पृथक, छोटे-छोटे समूहों में गौरवशाली कला का दर्शन करने चल पड़े। करुणा ने सुधा से कहा, चलिए, हम लोग अलग चलते हैं।''

सुधा ने तपाक से कहा, ''स्वागतम्।''

वे दोनों कला-प्रेमी कला की साधना में बढ़ते गये।

अंजना ने भी समूह में जाना पसन्द न किया। वह अपनी तीन-चार सहेलियों के संग आगे बढ़ गयी। राजीव ने भी उनका अनुशरण किया। वह भी अपने तीन-चार निकटवर्ती मित्रगणों के साथ पृथक रूप से अजन्ता की गुफाओं के दर्शनार्थ निकल पड़ा। दूसरी ओर अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों का समुदाय गाइड के साथ चला।

करुणा एवं सुधा को गुफाओं की ओर जाने की शीघ्रता न थी। वे चाय पीने के बहाने आध घण्टे वहीं रूक गये ताकि सभी लोग आगे निकल जायें।

तत्पश्चात् सभी लोगों के आगे निकल जाने के पश्चात् एवं चाय नाश्ता करने के पश्चात करूणा और सुधा आगे बढ़े। अजन्ता की गुफाएँ विन्ध्य की पहाड़ियों को काटकर बनायी गयी हैं। इसके नीचे एक तंग दर्रा है। इस दर्रे में बघोर नदी बहती है। पहाड़ियों की शक्ल घोड़े की नाल का था। इस आकार को बौद्ध धर्म में विशेष महत्व दिया गया है। यह स्थान निर्जन था, अंजान था। इसलिए इन गुफाओं का नाम अजन्ता पड़ा।

चाय-नाश्ता के पश्चात् करुणा एवं सुधा आगे चले। अनेक सीढ़ियाँ थीं एवं अनेक स्थानों पर सीधी चढ़ाई थी। सुधा की बैलबाँटम ऊपर से काफी चुस्त थी इस लिए उसे यह चढ़ाई पार करने में अत्यधिक असुविधा हो रही थी। करुणा के सशक्त हाथों ने उसे सहारा दिया। इस सहारे की पुनरावृत्ति अनेक बार हो रही थी क्योंकि सुधा हाथ बढ़ाकर कहती थी ''करुणा! प्लीज, थोड़ी मेरी सहायता कीजिए''

करुणा तुरन्त बोलता, "यह मेरा सौभाग्य है।" इस प्रकार अठखेलियां करते हुए दोनों पहाड़ के ऊपर गुफाओं के प्रवेश द्वार तक पहुँच गये। वे अब एक-एक गुफा के दर्शन करने लगे। गुफा नं० १–में प्रवेश करने के पश्चात् सुधा बोली, "देखो, पति की उदासीनता से दुःखी कमलधारी यशोधरा कितनी सुन्दर लग रही है।" उस पर करुणा बोला, "हाँ, देखो, इस स्त्री की आँखें एवं नाभि कितनी सुन्दर है। आंखें हिरनी की भाँति हैं तो नाक तोते की भांति। कमर तो जैसे है ही नहीं, इसके चारों ओर वस्त्र कैसे बंधता होगा। वक्षस्थल कितना सुडौल एवं सुन्दर है? वास्तव में पूर्वीय सौन्दर्य मापदण्डों में मुख का प्रमुख स्थान है परन्तु पश्चिमी मापदण्डों में शरीर की बनावट एवं भावों का। इसलिए भारत की चित्रकारी में टांगों का स्थान नहीं है जैसे इस चित्र में टाँगें नहीं दिखायी गयी हैं। जबकि विदेशी चित्रकारी में टाँगों के प्रदर्शन के बिना चित्र अधूरा माना जाता है। सुधा ने प्रश्न किया, "आजकल ऐसा सौन्दर्य हमारे देश में क्यों कम है?" करूणा ने कहा, "यह सत्य नहीं है। ऐसा सौन्दर्य तो मेरे पास ही खड़ा है। यह तो ऐसा ही हुआ जैसे मृग की नाभि में कस्तूरी होती है पर वह उसे ढूंढने वन-वन भटकता फिरता है। सुधा ने कहा, "आप तो मेरे पीछे पड़ गये हैं।"

करूणा ने कहा, "चलो, आप समझ तो गयीं। वैसे हम समस्त देश के विभिन्न सौन्दर्य वैशिष्ट्य को मिला दें तो ऐसी प्रतिमा खड़ी करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यदि बंगाल के महिलाओं की आँखें, काश्मीरियों की नाक एवं रंग, पंजाब की औरतों का वक्षस्थल तथा दक्षिण भारतीय महिलाओं की भाव-भंगिमा मिला दें तब यह प्रतिमा आज भी तैयार हो सकती है।"

सुधा ने कहा, "अच्छा सौन्दर्य विशेषज्ञ जी, आगे बढ़िये।"

अभी उन्हें बाकी २८ गुफाएँ देखनी थी। अतः वे शीघ्रता में बढ़ते गये तथा १७ नं० गुफा में पहुँचकर फिर से ठहर गये।

इस गुफा के भीतर सुधा बोली, "हाय, यह कैसी औरत है। यह अपना

प्रतिबिम्ब देखने में इतनी व्यग्र है कि इसे अपने शरीर के अन्य अंगों का होश-हवाश ही नहीं है।" करूणा बोला, "यहाँ तो महिलाओं के रहस्यपूर्ण जीवन को पत्थर में उतारा गया है। अतः वास्तविकता से अवगत कराना कोई पाप नहीं है अन्यथा मानवजाति स्त्री के रहस्य को जानने में ही अपनी पूर्ण शक्ति एवं क्षमता नष्ट कर देती।" ऐसा स्वाभाविक भी है। तुम्हें ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़े होने पर ऐसी अनुभूति नहीं होती है? सुधा बोली, "धत......" पर करूणा शांत न रहा एवं बोलता रहा, "कहते हैं कि जितना अविवाहित लड़कियाँ शीशे के सामने स्वयं को देखकर प्रसन्न होती हैं उतना कोई नहीं।

दिन प्रतिदिन षोडसियाँ बढ़ते हुए अंग-प्रत्यंग को देखकर पागल हो उठती हैं। उनके मन में एक कौतूहल जागता है वह है तलाश, तलाश भी एक पुरुष की, एक जीवन साथी की जो सब समय उसकी प्रशंसा करे। यदि वे शीशे में इतना न देखें तो उनका अधिक विकास भी नहीं होगा। विवाहित महिलाएँ खास अवसरों पर ही श्रृंगार के लिए दर्पण का उपयोग करती है पर वृद्ध महिलाएँ शीशा देखना ही नहीं चाहती हैं। दर्पण में स्वयं को देखकर वृद्ध महिलाएँ अपनी झुर्रियों एवं सफेद बालों के कारण स्वयं से घृणा करने लगती हैं तथा जीवन से दूर भागने लगती हैं।

सुधा करूणा की बात में हस्तक्षेप करते हुए बोली, "आपको तो प्रत्येक मूर्ति में "काम एवं सौन्दर्य" ही दृष्टिगोचर होता रहता है। ज्ञात होता है आप फ्रायड के शिष्य हो गये हैं!"

तब कहीं इस वार्तालाप का अन्त हुआ जब दूसरी ओर राजीव एवं अन्जना के समुदाय एक गुफा में स्त्री-पुरुष की एक प्रतिमा के समक्ष जाकर मिले।

राजीव ने वार्तालाप आरम्भ करने के उद्‌देश्य से प्रश्न किया, "क्या आप लोगों ने खजुराहो देखा है।" अंजना ने उत्तर मुस्करा कर दिया, "खजुराहो भी कोई देखने की जगह है। आपको ही नसीब हो।"

इस पर सभी लड़कियाँ हंस पड़ीं एवं राजीव को झेंपना पड़ा। फिर भी

साहस एकत्रित करके राजीव बोला, "मेरा तात्पर्य आप लोग नहीं समझीं। मैं कहना चाहता था कि अजन्ता की बोलती तस्वीरों में रंग की चित्रकारी अद्वितीय है तथा ऐसे रंग करना आज के इस रासायनिक युग में भी सम्भव नहीं है जो २००० वर्ष तक काल के थपेड़े सहन करते रहे एवं औरङ्गजेब जैसे क्रूर बादशाह के आक्रमण के बावजूद भी नष्ट नहीं हुए। पर मूर्तिकला का कार्य खजुराहों का यहाँ से उत्तम है। यदि खजुराहों के काले पक्ष को भूल जायें तब प्रकृतरूप में मानव जीवन की भाव भंगिमाओं का सजीव चित्रण अद्वितीय होगा।"

इसी मध्य सामूहिक समुदाय भी यहाँ पर आ पहुँचा। गाइड विशुद्ध इतिहास के पन्ने पर पन्ने पलटता जा रहा था तथा सिद्धातों की बड़ी-बड़ी व्याख्याएँ कर रहा था पर श्रोताओं में एक चौथाई से अधिक कुछ ग्रहण नहीं कर रहे थे। गाइड ने सारांश रूप में कहा, "सभी गुफाओं में बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित जातक कथाओं में दैनिक जीवन के सभी पहलू और ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, राजा-रंक सभी वर्ग चित्रित किये गये हैं। राजाओं की सभा, दरबार, सेवा में दास-दासियाँ, संगीत सभाएँ, नृत्य मण्डलियाँ, नर्तकियाँ, शिकारी, देवी-देवता, पशु-पक्षी, प्रकृति, पेड़, फूल-पौधे, वन-उपवन, पर्वत इत्यादि चित्रों के पात्र दैनिक जीवन के पात्र हैं। इन चित्रों में वे भाव दिखाए गये हैं जो मशुष्यों के हृदयों से रोज हर समय निकलते रहते हैं अर्थात् सुख-दुख, प्रेम-ईर्ष्या, राग-विराग, आनन्द-उल्लास, करूणा, संयोग, वियोग, दया, माया, ममता, क्रोध, घृणा, आखेट, शृंगार, प्रेम, विलास, भक्ति इत्यादि। ये वे भाव हैं जिनसे आदमी हरदम घिरा हुआ है, अपने को भूला रहता है। इन भावों से सारे चित्र सजीव हो उठे हैं। इन्हें देखकर हमें उस समय की सभ्यता, रीति-रिवाज, तरीके, महलों के रंग, नियम कानून और संस्कृति का पता चलता हैं। उनके कपड़े, आभूषण और शृङ्गार के तरीके ज्ञात होते हैं। उससे पता चलता है कि उच्च श्रेणी की स्त्रियाँ बिल्कुल नग्न रहती थीं। रानी को भी राजा के पास नग्न बैठे ही दिखाया गया है। कमर पतली, वक्षस्थल खूब उभरा हुआ और हृष्टपुष्ट, आँखें बादामी लम्बी-लम्बी। उस काल में आदर्श सौन्दर्य क्या था, इसकी पूरी जानकारी होती है।

विनोद ने उत्सुकता पूर्वक प्रश्न किया, "उस समय ऐसे रंग कहाँ से आये जो कि आज कल के वैज्ञानिक युग में भी कठिन है ?

गाइड ने उत्तर दिया "जिन दीवारों और छतों पर वे चित्र बनाना चाहते थे, वहाँ वे लोहे के अंश वाली चिकनी मिट्टी, गोबर और धान की भूसी एवं वनस्पतियों के रेशे मिलाकर आधी इन्च मोटी खुरदरी तह लीप देते थे। चूने को इक्कीस दिन भिगोते और फिर उसे मिट्टी, गोबर और भूसे से पलस्तर पर पोतते थे। मिट्टी का लेप खुरदरा होने के कारण चूने के पलस्तर को अच्छी तरह पकड़ लेता था। इससे वे सतह को खूब चिकना कर देते थे। तब वे गीले पलस्तर पर ही लाल रंग और गेरुआ से चित्रों की बाहरी रूप रेखा तैयार करते फिर उन पर रंग फेरते थे। इन रंगों के लिए वे वहीं पर मिलने वाली चीजें इस्तेमाल करते थे। जैसे पीली मिट्टी (राम रज) हरी पहाड़ी बारीक पीसकर जली हुई ईट पीसकर दिए की कालिख या काजल, चूना और नीला थोया। रंग भरने के बाद दुबारा चूना पोतते थे। चूना पोतने पर पहले भरे हुए रंग धुँधले धुंधले दिखाई देते थे। उन धुँधली रूप रेखाओं के आधार पर वे फिर से बुरूश से रंग भरते जाते थे जब तक कि चित्र चमकने न लगता। रंगों में वे गोंद भी मिलाते थे। गोंद के कारण खूब चिपक जाते थे।

श्यामल चट्टोपाध्याय ने प्रश्न किया "इन गुफाओं की खोज कैसे हुई?"

गाइड ने उत्तर में कहा "इसकी भी एक रोचक कहानी हैं। सन् १८१९ में एक अंग्रेज विन्ध्य पहाड़ियों पर शिकार के लिए निकला। चलते-चलते रास्ता भूल गया। एक किसान के लड़के ने पुरस्कार के लालच में कहा 'साहब हम तुम्हें शिकार बताएँ। वो देखो ! दूर से लाल-लाल चमकता रंग देखकर किसान के लडके और अफसर ने समझा कि ये किसी जानवर की आँखे हैं। अफसर ने दूरबीन लगाकर गौर से देखा तो पता चला कि वह लाल-लाल चमकती हुई चीज किसी जानवर की आँखें नहीं गुफा की चित्रकारी हैं। अफसर खुशी से उछल पड़ा। उसने कला के बहुत बड़े खजाने का पता लगा लिया था। अगले दिन वह बहुत से आदमियों को लेकर आया। रास्ते के पेड़-पौधे साफ कराकर

वहाँ तक पहुँचा और सरकार को इसकी सूचना दी, तभी से जन साधारण को कला के इस छिपे हुए भण्डार, प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के इस नमूने को देखने का अवसर मिला।''

श्याम पांडेय भी विचार धारा में खो गये तथा शिव से बोले ''इसी प्रकार जब शिकारी अंग्रेज साहब एक बाघ का पीछा करते हुए जंगल के पास जंगल एवं पहाड़ियों पर दौड़ रहा था तो अचानक बाघ कूद कर पहाड़ के दूसरी तरफ पहुँच गया। अंग्रेज साहब आश्चर्य चकित हो गया। ३०० फीट नीचे सतलज बह रही थी। पर उसी स्थान पर उसकी चौड़ाई इतनी कम थी। बस उसने सरकार को इसकी सूचना दी और कालान्तर में एशिया का सबसे बड़ा भाखड़ा नंगल बाँध वहाँ खड़ा हो गया। आज तो सरकार ने शिकार को बन्द कर दिया है। सरकार के सर्वे विभाग के लोग लाखों रुपये खर्च करने पर भी उतनी चीजें न खोज पाये जो मनचले शिकारियों, पर्यटकों एवं ज्ञान के लिए जिज्ञासुओं ने बिना खर्च के भूतकाल में खोजी थी। यद्यपि सरकार के कुछ लोग इन गुफाओं का पुनरुद्धार करना चाहते थे पर जनप्रिय सरकार के लिए करोड़ों रुपया इन गुफाओं पर खर्च करना सम्भव न हो सका। वह तो मथुरा जैसा तेल शोधक कारखाना तैयार करके ताजमहल के ऐश्वर्य से खिलबाड़ कर रही है। प्रश्नों के मध्य राजीव ने पूछा ''अजन्ता का सर्वाधिक प्रसिद्ध चित्र 'शीशा लिए श्रृंगार में लीन' महिला के पीछे क्या कहानी है? गाइड ने तपाक से उत्तर दिया ''एक राक्षसी बहुत सुन्दर थी। वह स्त्री के भेष में जाकर राजा के पास फरियाद करने लगी। वहाँ राजा ही राक्षसी के रूप पर मोहित हो गया और उसे महल में रख लिया। राजा के मन्त्री ने मना किया पर राजा ने उसकी एक न सुनी। भला औरत के सामने किसी और की सुनी जा सकती है? औरत चीज ही ऐसी है। आखिर राजा का भी वही अन्त हुआ। खाली वही नहीं मारा गया, बल्कि उसके महल के सारे आदमियों को भी राक्षसी ने खा डाला।''

इसके पश्चात लन्च हो गया और सभी पृथक हो गये। सभी अपने-अपने

समुदायों में चले गये। लक्ष्मी और कवलजीत पृथक बैठ गये। राजीव एवं अन्जना के समुदाय के लोग एक साथ बैठकर दोपहर का भोजन प्रकृति की गोद में करने बैठ गये। करूणा एवं सुधा कुछ दूर जाकर बैठे ताकि वे यात्रा दल के अन्य सदस्यों की दृष्टि से दूर रहें। सभी समुदायों ने परस्पर फोटो लिए जिसमें लड़के-लड़कियों का स्पष्ट परस्पर मित्रता पूर्ण व्यवहार इंगित होता है।

वास्तव में दो लोग यदि आगे पीछे हो तो वे फोटो के पश्चात् पास-पास आ जाते हैं। ऐसा ही राजीव एवं अन्जना के साथ हुआ। खैर, करूणा ने सुधा का दुपट्टा पकड़े एक फोटो खिचाई। इन फोटो ने उन्हें परस्पर मजबूरी में जकड़ दिया। कुछ स्मृतियों और कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को जैसे कैमरे ने बांध दिया हो।

दोपहर के पश्चात् सभी लोग नीचे उतने को तैयार हुए। करूणा एवं सुधा थकावट का बहाना करके पीछे एक पत्थर पर बैठ कर आराम करने लगे।

सभी लोगों के नीचे उत्तर आने के पश्चात् करुणा एवं सुधा ने उतरना आरम्भ किया। दोनों के मस्तिष्क कामदेव की कला को देखकर आन्दोलित हो रहे थे। अतः कुछ अटपटी सी बातें निकल रही थीं। सूर्यदेव अपने घर को वापिस जा रहे थे। अतः उतरना तेजी से हो रहा था पर सूर्य की कम रोशनी उनके मन को अच्छी लग रही थी। तेजी से उतरने में सुधा को कठिनाई हुई। अतः करूणा ने उसे सहारा दिया।

एक स्थान पर करूणा ने तेजी से दो सीढ़ियाँ तय कर ली। अतः सुधा खिचती चली गई एवं अपने को संभाल न सकी। दोनों एक दूसरे के बिल्कुल पास आ गये। परस्पर शरीर स्पर्श हुआ तथा अनजाने में करूणा का हाथ सुधा के सीने से लग गया, दोनों के शरीर में विद्युत संचारित हो गयी। सुधा बोली, "आप क्या करते हैं ? यह क्या बद्तमीजी है ?" करूणा ने कहा, "ऐसा तो नायक को लैला से सुनना ही पड़ता है। इसमें मेरा दोष नहीं अंधकार का दोष है।"

नीचे उतर कर दोनों होटल गये। करूणा ने कहा, "चलिये मैं थोड़ी सी वियर ले लूं।"

सुधा ने कहा, "मैं उसे बुरा नहीं मानती हूँ पर मैं नहीं लूंगी।"

करूणा ने एक बोतल वियर ली तथा सुधा के लिए कोकाकोला मंगाया तत्पश्चात् सुधा ने कुछ बनावटी जेवरात खरीदे तथा कुछ "शो पीस" खरीदे। करूणा के पैसे दिखाने पर उसने आपत्ति की तथा कहा, "हम दोनों नौकरी करते हैं। हमें सभी खर्च आधा-आधा करना चाहिये—अमेरिकन तरीका।"

फलस्वरूप सभी पैसे सुधा ने अपने बटुए से दिये।

इस प्रकार अजन्ता के दर्शन समाप्त हुए पर कुछ चित्रकार अभी भी बैठे-बैठे दो आयामों के जीवन हीन चित्रकला कागजों पर तीन आयामों की जीवन्त प्रतिमएं एवं जीवन स्वरूप आंकने में लगे थे।

पता नहीं अजन्ता में इन लोगों की कला-साधना पवित्र है या यात्रा दल के सदस्यों की।

खैर, रात्रिभोज के पश्चात् गान, हंसी मजाक, चुटकुलों में आनन्द करते हुए पुरुष एवं महिलायें पृथक-पृथक कमरों में सोने चली गयीं।

सात

प्रातः काल अजन्ता से प्रस्थान करने का कार्यक्रम था। लड़कों के हाल में अभी भी कुछ लोग योगाभ्यास कर रहे थे, तो कुछ स्नान घरों के दरवाजे खटखटा रहे थे एवं आवाजें दे रहे थे "जल्दी निकलो।" इसी बीच सुधा ने हाल में एकाएक प्रवेश किया जैसे उसे रात्रि में नींद न आयी हो। वह बोली, "करूणा ! तुम्हारे बेग में मेरी टावेल रह गयी है।"

महिला की प्रातः आवाज सुनकर विनोद चौक पड़ा जो उस समय सिर नीचा करके शीर्षासन में ध्यानमग्न था। लज्जा के वशीभूत होकर सुधा को बिना टावेल के उल्टे पैरों वापिस लौटना पड़ा। करूणा ने नौकर से टावेल उसके कमरे में भिजवा दी।

राजीव और अंजना शीघ्र तैयार होकर आ गये क्योंकि पिछले दिन थकावट के कारण अधिक बात करने का सुअवसर प्राप्त न हो सका। अंजना प्रथम बात करना चाहते हुई भी, स्त्री सुलभ लज्जा भावना के कारण न बोल सकी एवं राजीव को देखकर सिर्फ मुस्कराकर रह गयी।

राजीव ने इसे उसके बात करने का निमंत्रण मानकर पूछा, "आप सच सच बोलिये—आपको यहाँ कैसा लगा ?"

अंजना ने कहा, "बहुत अच्छा। यदि हम सभी साथ होते तो और भी अच्छा होता।"

राजीव ने कहा, "अच्छा, "भविष्य में सभी अवसरों पर हम साथ साथ रहेगें।"

राजीव ने कहा, "मैंने सुना है कि आप भी चित्रकारी में रूचि रखती हैं।"

अंजना ने कहा, "वास्तव में मैं सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि के कार्यों में अधिक रुचि रखती हूँ, यदि आप माने कि सूई के द्वारा धागों से निर्मित आकृति एवं चित्र भी चित्रकारी के अंग हैं तो उस सीमा तक आप मुझे चित्रकारी या शिल्प का विद्यार्थी कह सकते हैं।"

राजीव ने कहा, "आप तो अति विनम्र हैं, महान् व्यक्ति विनम्र होते ही हैं।"

अंजना को यह बात कुछ अजनबी सी लगी। वह बोली, "मैं किस बात की महान् ? मैं तो आप लोगों से भी सामान्य प्रकार की प्रशिक्षणार्थी हूँ।"

राजीव ने कहा; "चलिये, छोड़िये ! आगे का क्या कार्यक्रम है ?"

अंजना ने कहा, "यह तो आप मुझसे अधिक अच्छी तरह से जानते होगें। आप लोग जहाँ ले चलेगें वहाँ चले चलेंगे।"

राजीव ने कहा, "दस दिन पश्चात् एक सामूहिक भोज का कार्यक्रम है उसमें आप नायिका का पाठ कीजिए। मेरा भी कव्वाली गायकों में छोटा सा पाठ है। मैं अपने मित्र पांडेय जी से कह दूँगा, वह आपकी उचित सहायता कर देगें।"

अंजना ने कहा, "वैसे मैंने स्कूलों में नाटक, नृत्य आदि में भाग लिया है पर बहुत दिनों से सभी कुछ छूटा है यदि आप चाहें तो मैं चेष्टा कर सकती हूँ।"

राजीव ने कहा, "आप मेरी खातिर अवश्य यह पाठ कीजिए।"

अंजना ने कहा, "ठीक है, आप पांडेय जी से कहकर मुझे सम्पूर्ण पाठ का वृतान्त आदि दिलवा दीजिये।"

राजीव ने कहा, "हम पांडेय जी को लेकर आपके साथ एक दिन कामन रूम में बैठ लेगें तथा वहाँ सभी ठीक कर लेगें।"

अन्जना ने कहा, "जैसी आपकी राय हो।"

इसके पश्चात् दोनों चले गये।

राजीव समझ गया कि अंजना उसे चाहती है, पर वह यह नहीं समझ पा रहा था कि क्या वह उसका आदर करती है अथवा उस प्रकार चाहती हैं जैसे सुधा करूणा को।

हँसी-मजाक में कुन्डु राजीव से बोला, "अरे दोस्त, तुमने चिड़ियाँ फँसा ली है।"

राजीव ने झल्ला कर कहा, "बद्तमीजी की बात मत करो।"

कुन्डु ने कहा, "मैंने स्वयं सुना है। वह अपनी सहेली वन्दना से तुम्हारी खूब प्रशंसा कर रही थी।"

शनैः शनैः सभी लोग आ गये। लड़के एवं लड़कियाँ पृथक पृथक सीटों पर बैठे, पर करूणा-सुधा, कंवलजीत एवं लक्ष्मी तथा साइलों-रेंखा एक साथ

बैठे। जैसे ही बस ने प्रस्थान किया, सभी बोल उठे, "बजरंग बली की जय" शेरों वाली की जय।"

लौटते समय स्वभावतः बस की गति तीव्र थी। बस में कोलाहल मंद था तथा कानाफूसी हो रही थी। आपस में प्रदीप ने सागर से कहा, "साला साइलों खूब हरामी है। रात्रि में शराब पीकर धुत पड़ा था तथा सुबह उठकर स्नानघर में काफी देरी लगा दी। ज्ञात होता है उसे बाथरूम की खुशबू लेने की आदत है।"

करूणा एवं सुधा के चर्चे सभी की जबान पर थे। इसके अतिरिक्त लोगों ने अन्य कई लड़के-लड़कियों को प्राथमिक तौर पर अनुबंधित कर दिया जैसे अनिल-मीरा, अशोक-मीना आदि। इनमें से जोड़े के दोनों लोगों को स्वयं भी पता नहीं था कि वे अनुबन्धित हो चुके हैं। वे प्रशिक्षणार्थियों की पैनी लोकदृष्टि में अनजाने में अनुबन्धित हो चुके थे।

पीछे की सीटों से आवाज आयी, "गायकवाड़ साहब की जय।" अर्थात् सहायक निर्देशक महाशय एवं उनकी धर्मपत्नी की जय-जयकार होने लगी जो "हिप हिप हुर्रे का ही बिगड़ा रूप है। कुन्डु के भी जिन्दाबाद के नारे बुलन्द हो गये। बंगालियों के समूह की निन्दा हुई क्योंकि उन्होंने पूरे भ्रमण में बंगला के अतिरिक्त अन्य भाषा में बात ही नहीं की। बंगाली लड़कियाँ भी उनके साथ थीं पर दुर्भाग्य से कोई बंगाली लड़की सुन्दर न थी।

कुछ सहगान हुए। मणिपुर क्षेत्र के एक आदिवासी लड़के ने एक अंग्रेजी गीत गाया। मीरा ने एक हिन्दी फिल्म का गाना गाया। कुछ निरामिष एवं मांसाहारी चुटकुले हुए। उछल-कूद होती रही। तालियों की गड़गड़ाहट एवं शोर गुल में यह निश्चित कर पाना कठिन था कि प्रशंसा किसकी हो रही है। अन्त में "बन्दे मातरम" गीत के साथ कार्यक्रम बन्द हो गया। सभी अपनी अपनी सीटों पर उछलने लगे पर इस समय करुणा एवं सुधा और भी सतर्क हो गये।

दूसरी ओर श्यामनारायण एवं सदाशिव को चैन नहीं था। दोनों जो

पूर्वीय उ० प्र० के बौद्धिक वार्तालाप में छग्गड़ी अखाड़ेबाज ठहरे। श्याम पांडेय ने आरम्भ करते हुये कहा, भाई सदाशिव, तुम्हारी क्या राय है ? इस प्रकार की सहशिक्षा वाली संस्थाओं में ऐसे भ्रमण कार्यक्रम अध्येताओं के मध्य सद्गुणों का प्रसार करते है अथवा दुर्गुणों का। मेरे विचार से इनसे संस्थान को अति क्षति होती है।''

सदाशिव ने जिज्ञासा की, ''वह कैसे ?''

श्याम पांडेय ने कहा, ''तुम्हीं देखो, इस भ्रमण कार्यक्रम का उद्देश्य था कि सभी एक दूसरे को समझें, साहचर्य की भावना बढ़े तथा सभी एक परिवार की तरह अनुभव करें पर यहाँ तो गुटबाजी और बढ़ गयी है। जहाँ महिलाओं-पुरुषों के जोड़े निर्मित हो गये हैं वे तो गुटबाजी से और भी नीचे चले गये हैं विशुद्ध व्यक्तिवाद की ओर। अनेक लोगों के मध्य कड़वाहट बढ़ गयी है, तो अनेक लोग इस घटना को जीवन की अत्यधिक महत्वशाली घटना के रूप में स्मरण रखेगें पर संस्थान को इन सभी से क्या लाभ हुआ ? जो यहाँ पर अनुबंधित हो गये हैं वे हमेशा इस भ्रमण को याद रखेगें पर वे संस्थान के वर्तमान अधिवेशन में पढ़ाई-लिखाई एवं प्रशिक्षण में शून्य होते चले जायेगें। कुछ व्यक्तियों की बुराइयाँ इतनी खुलकर सामने आ गयी हैं कि उनके अन्दर मनोमालिन्य वाले व्यक्तित्व का संचार हो गया है। दूसरे, कई लड़कियों से अधिकांश सहपाठी अत्यधिक नाराज हो गये हैं। सदाशिव ने कहा, ''तो भाई पांडेय, क्या किया जाये ?''

सामान्यतः सभी जानते हैं कि पर्यटन से ज्ञानवृद्धि होती हैं, कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिये आवश्यक साहस-वृद्धि होती है एवं एक साथ काम करने की भावना आती है।''

पांडेय जी ने बीच में रोककर कहा, ''यार, तुम तो सिर्फ पुस्तकों की बात करते हो। यही तो हिन्दी एवं अंग्रेजी के मास्टर में अन्तर है। हिन्दी का एम० ए० अधिक मौलिक होता है एवं अंग्रेजी का एम० ए० किताबों का कीड़ा। सदाशिव बोले, ''पांडेय जी, यदि तुम हमारे दोस्त न होते तो मैं इसका खुलकर

विरोध करता। अच्छा तुम अपनी रिक्शे वाली मौलिकता या काफी हाउस वाली मौलिकता का बखान करों।"

पांडेय जी ने कहा, "वही मैं सोच रहा था कि भ्रमण एवं पर्यटन को इस भय से संस्थाओं के कार्यक्रम से निकालना उचित नहीं होगा। यह तो एक उद्वेग हैं। यदि इसका उद्घाटन यहाँ नहीं हुआ तो वे लोग किसी विपरीत अनजाने से प्रेम कर बैंठेगें, मुहल्ले में अन्वेषण करेगें अथवा भ्रमण में ही दो अजनबी दलों के लोग टकराकर दिल खो बैठेगें। इससे और भी खतरा है। प्रेम सदैव अंधा होता हैं। सौभाग्य है कि यहाँ तो व्यक्ति विशेष कुछ सूझ बूझ से प्रेम के क्षेत्र में पदार्पण कर रहे हैं।"

सदाशिव ने कौतूहलपूर्वक प्रश्न किया, "तब उत्तम क्या रहेगा ?"

पांडेय जी ने कहा, "उत्तम यही रहेगा कि सहशिक्षा वाली संस्थाओं में यथा सम्भव लड़के एवं लड़कियों को उचित निर्देशन में पृथक रूप में भ्रमण करना चाहिये। विशेष भ्रमण या पर्यटन अधिवेशन के प्रारम्भ में न होकर मध्यवर्ती अथवा समाप्ति समय होना चाहिये जबकि सभी एक-दूसरे को भली-भांति समझ लेते हैं।"

सदाशिव ने उत्तर दिया, "तब तो एकता की भावना न आयेगी। सभी व्यक्ति पृथक पृथक दल बनाकर घूमेगें। ऐसा भी देखा गया है कि पृथक पृथक दो कमरों में ताला बन्द करने के बावजूद विपरीत सैक्स के लोग मिल जाते हैं। यात्रा निर्देशक ट्रेन, बस, होटल, नदी एवं दर्शनीय स्थलों पर तो ऐसी व्यवस्था नहीं कर सकता।"

इस पर पांडेय जी ने कहा, "ऐसा अधिक न होगा क्योंकि समयान्तर से वह रहस्य को खोलने की जिज्ञासा नहीं रहेगी एवं इस अवसर का उपयोग वे लोग व्यक्तिवाद के कुछ घेरे से समष्टिवाद के फैले आसमान में दो चार स्वच्छन्द सांसें लेने के लिये करेगें। फिर यदि लोग एक दूसरे को भली-भांति समझकर घूमें तो कोई आपत्ति ही नहीं। इसके पश्चात् दोनों पक्ष एक दूसरे से पूर्ण सहयोगिता करेगें।"

सदाशिव ने हारकर कहा, "अच्छा, सर्व प्रथम पहुँचकर आपका यह सुझाव मैं निर्देशक की सुझाव पेटिका में फेंक दूंगा जिससे भविष्य के बैचों को लाभ पहुँचे।"

आठ

अजन्ता की गुफाओं के भ्रमण का क्रांतिकारी दौर समाप्त हुआ। कालेज में कक्षाएँ नियमित आरम्भ हुई एवं पठन-पाठन में सभी की रूचि बढ़ी। एक पखवारे के पश्चात् सामूहिक भोज का आयोजन होता जहाँ सभी को उनके सांस्कृतिक एवं शिल्प कौशल का परिचय देने एवं उसके विकास करने के लिए सुअवसर दिया जाता था।

इस भोज में पांडेय जी ने श्री धर्मवीर भारती कृत एकांकी "कुकुरमुत्ता के प्रदर्शन का भार संभाला जबकि सायलों ने अंग्रेजी एवं पश्चिमी संगीत एवं गान का।

निश्चित तिथि एवं समय पर भोज का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। निर्देशक महाशय एवं अनेक अध्यापक महाशय आये। कुछ लोग आगन्तुकों की आवभगत में लगे थे तो कुछ लोग लड़कियों से ही बातें करने में। कुछ लोग नशे के प्रभाव के कारण उदासीन से बैठे थे तो कुछ समालोचना के समुद्र में गोते लगा रहे थे।

अंग्रेजी धुनों के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। बंगवासियों ने रविन्द्र संगीत की तानें सुनाईं जो कम ही लोगों को रूचिकर लगी जबकि नजरुल इस्लाम की पंक्तियों की आवृत्ति ने लोगों के मन को प्रभावित किया। दक्षिण भारतीय प्रान्त के लोगों ने मलयालम, तमिल एवं तेलगू में गीत गाये जो अधिकांश लोगों के सिर से ऊपर निकल गये। गजलों एवं शेर-शायरी को सार्वजनिक

मान्यता एवं अभिनन्दन प्राप्त हुआ। अन्त में हिन्दी नाटक का कार्यक्रम हुआ। उसमें अंजना ने एक घरेलू महिला का पाठ किया। उसका पाठ सभी दृष्टि से इतना उत्तम लगा कि उसके सामने सभी कार्यक्रम हतप्रभ हो गये, नायक के रूप में विवाहित प्रशिक्षणार्थी शशिकान्त का पाठ अद्वितीय रहा।

कार्यक्रम की समाप्ति पर भोज का आयोजन हुआ एवं भाग लेने वालों को सभी ने बधाईयां दीं। अंजना को बधाईयां देने वालों की संख्या सर्वाधिक थी पर अन्जना राजीव की बधाइयों को प्रतीक्षा में थी। भीड़ कम होने पर राजीव अन्जना को बधाई देते हुये बोला, "वास्तव में आज तो आपने तोड़ दिया है। जनता आपका जी भरकर सुनाम, प्रशंसा आदि-आदि कर रही थी।"

अंजना ने जिज्ञासापूर्वक प्रश्न किया, "मैंने क्या तोड़ दिया है। यह आदि आदि क्या है?"

राजीव ने कहा, "वही आदि-इत्यादि अर्थात एक्सेट्रा,।"

दोनों हँस पड़े और वे अपने को दूसरों से छिपा न सके। इस हँसी से निकली प्रेम की कली—एक विशुद्ध एवं निर्झर की भाँति निर्वद्ध प्रेम प्रवाह।

अंजना को अत्यधिक प्रसन्न देख कर राजीव ने सटीक प्रस्ताव किया, आज भोज के पश्चात् हम घूमने चल सकते हैं और यदि आप राजी हो तो वहां से पिक्चर भी चल सकते हैं।

अंजना ने कहा, "ठीक है।"

रात्रि भोज के उपरांत अनेकों युग्म घूमने निकले। राजीव एवं अंजना भी पृथक निकले। आज वे बातें करते-करते दूर इतने चले गये कि अब वापिस लौटना मुश्किल था। खैर, एक रिक्शे वाले को अधिक पैसा देकर वे दोनो पिक्चर में चले गये।

पिक्चर के तीन घंटे के दौरान में राजीव ने अंजना का बहुत स्वागत किया। मध्यान्तर में पांपकार्न, पेस्ट्री एवं काफी लाकर दी एवं क्षणभर का समय पाकर कहने लगा, आज आपने जो अभिनय किया उसके सामने इस फिल्म की नायिका व अभिनय भी फीका ज्ञात हो रहा है। अंजना ने उत्तर दिया, "वह तो आपकी अपनी दृष्टि की बात है।"

सिनेमा हाल में जब पर्दे पर नायक-नायिका बहुत पास आ जाते है तब पास बैठे स्त्री पुरूष भी सामान्य से कुछ अधिक पास आ जाते हैं। राजीव एवं अंजना के साथ ऐसा होना कुछ अस्वाभाविक न था । पर वे सीमा में रहे एवं उन्होंने अनेक दर्शकों की भांति खुलकर असभ्यता एवं गंदगी का प्रदर्शन नहीं किया ।

मध्य रात्रि में वे दोनों एक रिक्शे में बैठकर आये । रिक्शे में सटकर बैठने के अतिरिक्त उपाय न था । राजीव ने प्रस्ताव किया, "क्या हम इसी प्रकार एक साथ रहकर प्रशिक्षण का समय निकाल दे ?"

"अंजना ने उत्तर दिया, "मुझे आपत्ति नहीं परन्तु समाज के बंधनों के अंतर्गत ही यह सब होना चाहिए । हमें भारतीयों को तरह इस विषय में सोचना चाहियें ।"

राजीव ने प्रत्युत्तर में कहा, "जैसा आप कहें वैसा ही होगा ।" बेजान सड़क पर रिक्शा वाला परिश्रम के बिन्दु बहाये जा रहा था । उतर कर राजीव ने उसका मूल्य दो रुपयों से आंका ।

रिक्शा वाला नमस्कार करके बोला, "बाबू मेरा रिक्शा यही खड़ा होता है । आपको जब भी जाना हो इस गरीब को याद कर लीजिये । यह आपकी बड़ी जर्रानवाजी होगी ।"

राजीव ने कहा, "अच्छा ।"

ज्ञात होता है जैसे कि रिक्शा वाला भी इस जोड़ी को देखकर अप्रत्यक्ष समर्थन एवं प्रशंसा कर रहा हो ।

अंजना राजीव को "शुभरात्रि" कहकर विश्राम करने अपने कमरे में चली गयी पर उस रात दोनों के मस्तिष्कों में विभिन्न प्रकार के विचार उठते रहे । दोनों का परिणाम एक ही था कि इससे अच्छे जीवन साथी के लिए पसंद और हो ही क्या सकता है ?

नौ

प्रशिक्षण कालेज का अधिवेशन मंथर गति से चल रहा था जैसे प्रकृति नियमानुसार चलती रहती है। सूर्य उदय होता है तथा अस्त हो जाता है, तत्पश्चात् चन्द्रमा उसका स्थान ग्रहण कर लेता है पर इस व्यापार से पृथ्वी के लोगों के मन और मस्तिष्क में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है उसी प्रकार इस कालेज में पढ़ाई होती है — अध्येतागण उसमें आसक्ति रहित हैं। अध्यापक वृन्द कितनी ही रूचि ले पर विद्यार्थीगण उपक्रम नहीं करते हैं एवं उनके मस्तिष्कों को क्रियाशील बनाना एक कठिन कार्य है। आह ! कितना परिवर्तन। जो मस्तिष्क विश्वविद्यालयों में सर्वाधिक तेज, चंचल एवं क्रियाशील थे वे ही मानों क्रियाहीन हो गये हैं। यह है प्रकृति का उतार-चढ़ाव एवं उत्थान-पतन। शायद सर्वाधिक क्रियाशील होने के पश्चात् ही क्रियाहीनता की अवस्था शीघ्र आती है।

शिक्षा-क्षेत्र की नयी-नयी पद्धतियों का प्रयोग किया गया। अध्यापक और शिष्य पद्धति को प्राथमिकता नहीं दी गयी। प्रत्येक विषय में मासिक परीक्षण आरम्भ किये गये तथा अचानक परीक्षणों की पद्धति का प्रयोग किया गया ताकि प्रशिक्षणार्थियों के मन को जाग्रत एवं सचेत किया जा सके। गोष्ठी-पद्धति का भी प्रयोग किया गया जिससे सभी में अध्यापन प्रक्रम में भाग लेने की भावना का उदय हो। अन्त में कुछ विषयों पर स्लाइडें एवं फिल्में भी तैयार करके कक्षाओं में पर्दे पर दिखाई गई। इस सत्र के फलस्वरूप कुछ अध्येताओं ने बड़ी रूचि दिखाई पर अधिकांश पीछे बेंचों पर जाकर बैठने लगे। विशेष रूचि दिखाने वालों को के० टी० पी० अर्थात् गम्भीर प्रकार के प्रशिक्षणार्थी कहा जाने लगा। यद्यपि बाह्य दृष्टि से यह कथन कितना उत्तम है पर कालेज के शब्दकोष में इसे गाली-गलौज की संज्ञा दी जाने लगी।

कुछ ही मासों में सभी छोटे-छोटे समुदायों में विभक्त हो गये। दक्षिण भारतीय समुदाय कक्षा के एक ओर बैठने लगा तो बंगाली समुदाय दूसरी ओर। उड़ीसा वाले भी पृथक हो गये। पंजाब एवं दिल्ली वाले पूर्व में बैठने लगे तो इलाहाबाद और यू० पी० के लोग पश्चिम की ओर। उत्तर भारत के कुछ लोग सामने वाली बेंचों पर बैठे तो कुछ पीछे वाली बेंचों पर। विवाहित लोग अधिकांश गम्भीर प्रकार के प्रशिक्षणार्थी थे एवं प्रायः वे सामने की बेंचों पर बैठते थे। जोड़ों ने पीछे की बेंचों का सहारा लिया।

इस क्षेत्रीयता की भावना का निराकरण करने के लिए कालेज प्रशासन की ओर से सीटों का विभाजन वर्णमाला के आधार पर किया गया। कुछ पिछड़े एवं सीधे लड़कों के साथ तेज— तर्रार महिलाओं की सीटें पड़ गयीं। सभी को एक अच्छा सबक मिला। पर अवसर उपलब्ध होते ही इन नियमों का उल्लंघन अधिक होता था किन्तु, पालन कम।

इसके पश्चात् ही निर्देशक साहब श्री झुनझुनवाला का प्रथम भाषण हुआ। उन्होंने अपने भाषण में कहा, "सर्वप्रथम मैं आप लोगों के इस बैच को अपनी ओर से दो चीजें भेंट करना चाहता हूँ—"प्रथम एक वजन तौलने की मशीन, द्वितीय एक पूर्ण आकार का शीशा। इन दोनों चीजों के माध्यम से मैं आशा करूँगा कि आप लोग प्रशिक्षण प्रारम्भ होने के समय अपना वजन ले लीजिए तथा यह संस्थान छोड़ते समय भी वजन लीजियेगा। इसमें अधिक अन्तर नहीं आना चाहिए। उसके लिए मैंने योग एवं सभी खेलकूदों की व्यवस्था की है। प्रतिवर्ष मुझे नये-नये युवा प्रशिक्षणार्थियों को मोटा एवं उदासीन होकर प्रस्थान करते हुए देखकर अत्यन्त दुःख होता है। शीशे में देखकर आप लोग उस यौवनावस्थाको कायम रखिये ताकि चेहरे पर झुर्रियाँ एवं शरीर का वजन नहीं बढ़े। आप लोग युवा लड़के-लड़कियाँ हैं। आशा है आप लोग युवा लड़के एवं लड़कियाँ ही रहेंगे तथा कार्यालय एवं अधिकारी वर्ग का भार एवं बड़प्पन अपने अन्दर अभी से न लायेंगे। अन्य सभी ने अनेक प्रकार की शिक्षाएँ आपको पूर्व में ही दे दी हैं। मैं इन दो प्रतीकों के अतिरिक्त अन्त में कॉलेज के सन्देश

को स्मरण करनें को एवं समय की पाबन्दी करने की अभी से आदत डालने की सलाह दूँगा। सर्वप्रथम किसी कार्यालय की दक्षता का प्राण उसके अफसर की समय की पाबन्दी है।"

बस क्या था चपरासी से उप-निर्देशक तक सभी ने निर्देशक महाशय के उद्घाटन भाषण को कार्यान्वित करने के लिए एड़ी से चोटी तक का पसीना लगा दिया। मेस में नाश्ते का समय प्रातः दस बजे तक दोपहर का खाना दो बजे तक एवं रात्रि में खाना दस बजे तक निश्चित कर दिया जायेगा। इसके पश्चात किसी को कुछ भी नही दिया जायेगा। संस्थान जाने वाली बस समय से वहाँ पहुँचे, इसके लिए बस का एक मानोटर बनाया गया जिसके निर्देश पर ही बस घूंमती।

दोपहर के भोजन के समय की पाबन्दी ठीक हो गयी क्योंकि कक्षाएँ छूटते ही सभी समय से सीधे कॉलेज से आकर मेस जाते पर रात्रि एवं विशेषतः प्रातः के नाश्ते में अपवाद होने लगे। रात्रि में वार्तालाप, ताश एवं गप्पों में व्यस्त रहने के कारण कोई बारह बजे के पहिले न सोता था। अतः लड़कों ने मेंस के नौकरों को पटाना प्रारम्भ किया एवं उन्हें लालच में फँसा लिया। फिर क्या था—निर्देशक के आदेशों का उल्लंघन होने लगा।

जब बस का मानीटर कड़ा हुआ तो लोग रिक्शे से कॉलेज जानें लगे। करूणा इस प्रतियोगिता में भी प्रथम था इसलिए उसने स्कूटर भेजने के लिए घर पर लिखा। सारांश यह है कि खर्च बढ़ गये पर समय की पाबन्दी नहीं हुई। करूणा का भी स्कूटर कुछ दिनों में आ गया। अब तो सुधा भी देर से जाने लगी। करुणा एवं सुधा दोनों एक साथ स्कूटर पर जाने लगे तथा कक्षा आरम्भ होने के पूर्व दस मिनट का समय बस से मिलता था, उसी का उपयोग करने की होड़ चल निकली।

सुबह जब बस का हार्न बजता था तो कुछ लोग डवल फ्राई या डबल रोटी को ही मुँह में दबाकर चले आते एवं बस में विराजमान होकर संस्थान को उपकृत करते, इससे कैन्टोन के नौकरों का सम्मान एवं आमदनी बढ़ गयी।

बस के समय कुछ लोग शीर्षासन अथवा प्राणायाम में ही ध्यानमग्न रहते थे। इस प्रकार समय की पाबन्दी का कार्यक्रम असफल हो गया। निर्देशक साहब से क्षमा याचना कर ली, 'सर! हम लोग तो कुछ महीनों के बाद कार्यक्षेत्र में चले जायेगें। वहाँ तो कुछ बचाव एवं बहाना नहीं है। अभी आपकी कृपा से यहाँ कुछ ताजगी ले लें।

निर्देशक साहब ने भी सोचा कि सख्ती से कोई लाभ नहीं है। लड़के-लड़कियों को कुछ आराम करने दो। पर उन्होंने कहा, "देखो, मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों की यह नवीन एवं चंचल जोवन दृष्टि कभी भी नौकरी-जीवन में लोप न हो। मैं तुम लोगों के विरुद्ध क्या कार्यवाही करूँ? पर तुम लोगों को यहाँ प्राणपण से सर्वांगीण विकास में जुट जाना चाहिए।"

निर्देशक साहब को खुश करने में सभी जुट गये एवं उनके प्रमुख एवं प्रिय आदेशों के पालन करने में तत्पर हुए। अन्ततः निर्देशक भी एक मनुष्य है तथा उसकी भी कुछ प्रिय एवं अप्रिय वस्तुएँ या कार्य होते हैं। छात्रावास में प्रशिक्षणार्थी बड़े पैमाने पर योगाभ्यास सीखने लगे। जिन-जिन लोगों ने योग सीखा, वे निर्देशक महाशय के सर्वप्रिय पात्र हो गये। कुछ प्रवीण लोग महिलाओं को योग सिखाने के चक्कर में परम योगी बन गये। राजीव ने अंजना को बैडमिन्टन के मैदान में उतारने के लिए नई स्पोर्टस—ड्रेस खरीदी एवं वह भी खेलकूद प्रेमी बन गया। करुणा ने सुधा को टेबिल टेनिस सिखाना आरम्भ किया। कुछ लोग गम्भीरतापूर्वक पुस्तकालय जाने लगे पर कुछ समय बाद वहाँ से लोग पुस्तकालयाध्यक्ष जो एक सुन्दर महिला थी, से ही अधिक वार्तालाप करते थे। अन्य लोग पुस्तकालय को प्रेम-वार्तालाप के लिए सुरक्षित स्थान पाते थे, तो कुछ लोगों ने सिंडिकेट बैंक में खाता खोल दिया। बैंक की यात्रा कुछ अधिक ही होने लगी क्योंकि बैंक में भी पुस्तकालय जैसा परिवेश था।

कुछ लोग नागपुर में सौन्दर्य के अन्वेषण में लग गये जैसे उन्हें ही स्थानीय संस्कृति एवं सभ्यता से सर्वाधिक लगाव हो, तो कुछ लोग यौवनावस्था के समय

को काटने वाली पुस्तकों के स्टालों की खोज में। कुछ लोग अस्पताल में नियमित दर्शनार्थी हो गये, तो कुछ लोग स्कूल एवं कालेजों में। कुछ लोगों ने जाकर शराब आदि के अड्डे देखकर स्थानीय समाज की दशा का अध्ययन किया। कुछ एक वर्ग के लोग टेबिल-टेनिस के रसिक हो गये, तो कुछ लोग सार्वजनिक कमरे में स्थित रिकार्ड-प्लेयर एवं पत्र-पत्रिकाओं के। बारह बजे रात्रि तक टेबिल टेनिस एवं रिकार्ड प्लेयर चलता रहता था। इसके पश्चात् लोग जोड़ों में घूमने निकल जाते थे। इस प्रकार संस्थान का छात्रावास-जीवन चल रहा था। प्रशिक्षण कार्यों के अतिरिक्त सभी क्षेत्रों में कॉलेज दक्षता उपलब्ध करने के पथ पर था।

समय एवं ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। कॉलेज के वातावरण में गम्भीरता आते-आते छमाही परीक्षा का समय आ पहुँचा। खिले चेहरों पर कोहरा छा गया। लड़कियाँ अधिक गम्भीर हो गयीं पर इसके लिए भी काफी देर हो चुकी थी। करुणा ने सुधा को ढाढस दिलाया, "देर आयद दुरुस्त आयद"। क्या हुआ ? तुमने मुझसे टेबिल टेनिस तो सीख लिया है। इस परीक्षा की कमी वार्षिक परीक्षा के समय पूरी हो जायेगी।"

परीक्षा का आयोजन हुआ। परीक्षा में जमकर नकल चलती पर एकाउन्टेसी में अधिकांश लोग अच्छा न कर सके क्योंकि, "अन्धे अन्धा ठेलियां दून्यू कूप पड़न्त" अधिकांश लोग इस विषय में कमजोर थे। अतः राजीव और अंजना से कितनी नकल में सहायता होती ? उन्हें भी तो अपने प्रश्नोत्तर लिखने थे।

खैर, दिवाली की छुट्टी के बाद निकलने वाले इस परीक्षा-परिणाम की प्रतीक्षा होने लगी। क्योंकि अन्दाज एवं प्रकृत परिणाम में काफी अन्तर देखा गया है।

३४२९

दस

परीक्षा के पश्चात् दिवाली-दशहरे की लम्बी छुट्टियाँ आयीं। अधिकांश लोग अपने-अपने घरों को जाने की तैयारियों में लग गये। सभी ने रिजर्वेशन कराया। लड़कियों का रिजर्वेशन कराने में होड़ लग गई पर विशेषतः सुधा एवं अन्जना के अतिरिक्त क्योंकि उनका विषय अब विवादास्पद न रहा।

राजीव ने इलाहाबाद की जनता के साथ एक ही शयन कक्ष में प्रवेश किया एवं अन्जना भी भाग्यवश यू० पी० की अन्य लड़कियों के साथ उसी कक्ष में आ पहुँची। फिर क्या था रेल के डिब्बे का एक अंश बाद-विवाद का एक अच्छा मंच बन गया। कुछ लोग सभ्य यात्रियों से बर्थ बदलकर एक ही साथ आ गये। जो लोग हठबश वहाँ से न गये यात्रा भर परेशान रहे क्योंकि बाहरी सुनने वालों को विषयवस्तु का सिर पैर ही नजर नहीं आता था।

रवि ने वार्तालाप प्रारम्भ करते हुए कहा,, "गुरु, मनबीर कह रहा था भाई क्या करें? "पंजाब की कुड़ी को यू० पी० वाला भगा ले जा रहा है। मुझमें क्या कमी है? करूणा ने उत्तर दिया, "यही तो उसमें कमी है। वह सिर्फ सोचता है किन्तु जब लड़की उसके सामने आती है तो बात करने के पूर्व ही पसीना आने लगता है। लड़कियों को फँसाने के लिए यार कलेजा चाहिए।" राजीव नें बीच में कहा, "जो तुममें है।" करूणा ने कहा, ".वह तो यार तुममे भी है।" राधेश्याम जी बोले, "यार ये क्या पारस्परिक मक्खनबाजो हो रही है।" राजीव ने कहा, "हमें इस विषय में अधिक नहीं उछलना चाहिये क्योंकि जिसके साथ लड़की होती है वह दुर्बल हो जाता है। उसे मुख पर लगाम रखनी चाहिये। फिर उसकी पूर्णता तो अन्य लोग कर देते हैं।"

करूणा ने कहा, "यह तो उत्तम विचार है। क्या पाण्डेय जी ने विचार प्रवाहित किया है।" राजीव ने उत्तर में कहा," बेचारा पाण्डेय जी केवल विचार ही प्रस्फुटित करता है, प्रयोग तो हम लोग करते हैं। पूरा हिन्दुस्तानी व्यक्ति है वह।" ऊघतें हुए पाण्डेय जी ने यह बात सुन ली तथा वे बोले, "हाँ, चुनार सेठ ! जो लोग स्वयं काँच के मध्य में रहते हैं वे दूसरों के मकान में पत्थर नहीं फेंकते।"

इसके पश्चात सभी लोग तीन पत्ती खेलने लगे। लड़कियां भी पास आकर बैठ गयीं। एक टेप रिकार्डर भी बजने लगा। ट्रेन विभिन्न स्टेशनों पर रुकती हुई जा रही थी। राजीव सभी स्टेशनों पर स्वयं जेब से खर्च करता जा रहा था एवं प्रति जगह एवं व्यापार में अन्जना का विशेष ध्यान रख रहा था। ज्ञात होता कि अन्जना की उपस्थिति के कारण वह विशेष अतिथि-भक्त हो गया था। अन्तिम स्टेशन पर लड़कों के मध्य सभी खर्च सम विभाजित कर लिया गया पर लड़कियों पर खर्च किया गया राजीव की व्यक्तिगत जेब से ही गया। बंगाली समुदाय हावड़ा की ट्रेन में बैठते ही अधिक विचार-मग्न हो उठा। श्यामल चट्टो-पाध्याय, अशोक वसु से बोला, "यार वसु ! भैंसा गड्ढे में चला गया। एक ही बंगाली लड़की है अपर्णा, वह भी रामजस से ही चिपकी रहती है। हमें दादा कहती हैं पर इश्क उससे लड़ाती है। हमें वह बिल्कुल लिफ्ट नहीं मारती है मालूम पड़ता है कि प्रेसिडेन्सी कालेज की उसकी कुछ बातें खोलनी पड़ेगी।" वसु ने कहा, "छोड़ो यार, वह भाड़ में जाये। हम लोग छुट्टी में भालो माछ खाकर मस्त हो जायेंगे।"

जब बंगला में मछली खाने की बातें होने लगी तो वार्तालाप में सभी ने अंश लिया। अजय विश्वास बोला, "आह ! नागपुर की क्या गर्मी है, मछली तो कोई अच्छी नहीं मिलती। हम घर पर बागदा, चिंगड़ी, रूई, केतला खाकर मस्त हो जायेंगे। सेन साहब मोटे चश्में से झाँकते हुए बोले, "कलकत्ते में मुग-लाई पराठा कहाँ अच्छा मिलता है ? विश्वास ने उत्तर दिया, "मैंने तो सभी होटलों की खाक छानी है पर स्यालदह स्टेशन के पास गांधी रोड पर स्थित

शांति निकेतन होटल का ही सबसे अच्छा लगा। मैंने तो पिछले दुर्गा पूजा में अपना शली को वहीं ले जाकर खिलाया था।''

कलकत्ते का विषय आते ही चक्रवर्ती से न रहा गया, वह बोल उठा,। ''पार्कस्ट्रीट का चाइनज फूड तो लाजवाब है। नागपुर में कितना खराब मिलता है। नागपुर के अशोक होटल के मैनेजर को कुछ दिनों जाकर, पार्कस्ट्रीट के एक रेस्टोरेन्ट के बावर्ची खाने में ट्रेनिंग लेनी चाहिये।'' चट्टोपाध्याय ने कहा, ''अरे छोड़ो, प्रशिक्षण कालेज की रंगीन बाते करना चाहिये।'' पर चक्रवर्ती से धैर्य न रखा गया एवं वह बोल उठा, ''और कलकत्ता आजकल तो जुलूस, हड़ताल एवं राजनीति के कारण खराब हो गया नहीं तो एक समय वह स्वर्ग था।

पास बैठे एक सज्जन से न रहा गया और वे धीरे से बोल उठे, ''गन्दगी के साथ कृपया आप और जोड़ दीजिए।'' दक्षिण भारतीय समुदाय जहाँ मैरीन बीच एवं अन्ना दुराई घाट, प्रेसिडेन्सी कॉलेज की प्रशंसा कर रहा था एवं इटली दोसे एवं बड़े की बातें करके आत्मानन्द में विभोर था, वहाँ केरल समुदाय राज्य की राजनैतिक स्थिति एवं फिल्मों के ऊपर काट-छाँट कर रहा था। दिल्ली पंजाब के समुदाय में मनबीर बोला, ''इस बार गुरु काके दाँ होटल में जाकर मुर्गे की टागें खूब तोड़ना है तथा अच्छी-अच्छी कुड़ियों को ताकना है!

विनोद ने उ०प्र० के समूह में कहा, ''इस बार विवाह के लिये प्रस्तावित एक दो कन्याओं को देखना पड़ेगा।''

डिब्बे के भीतर वार्तालाप चल रहा था और डिब्बे के बाहर रेल का पहिया। यह होते-होते सभी लोग अपने-अपने गन्तव्यों पर पहुँचे। सभी लोगों से उनके आत्मीय जन अत्यन्त प्रेम पूर्वक मिले क्योंकि कल के दिन सड़क नापने वाला लड़का आज प्रथम श्रेणी का अफसर बन गया है। घर आने पर दूसरे दिन ही करुणा एवं राजीव विश्वविद्यालय में अपने सहपाठियों से मिलने गये। उन्होंने उनको बैठाकर अत्यन्त सहृदयतापूर्वक स्वागत किया, पर उनके बाहर जाने के बाद कहने लगे, ''यार, यह तो सिर्फ भाग्य का खेल है। कल के दिन करुणा और राजीव हमारे साथ कर्नलगंज की सड़कों पर घूमा करते

थे तथा हमारी तरह पढ़ते भी थे पर वे आज क्लास वन नौकरी में हैं और हम साले अब भी किताबों से माथापच्ची कर रहे हैं।"

जो लोग पढ़ने में उत्तम थे। वे राजीव एवं करुणा से उनकी नौकरी के विषय में बड़े ध्यान से पूछ रहे थे ताकि वे भी अपने भविष्य का निर्णय कर सकें। राजीव के चेहरे में अपना भविष्य देखकर वे आत्मप्रसन्न थे। कुछ निमन्त्रणों में भी गये तथा आस-पास की कुछ यात्राएँ भी की। राजीव की माँ ने कहा, "बेटा, तुम कुछ दिनों के लिये आये हो इसलिए घर पर ही रहो, तुम तो बाहर इतना रहते हो कि मुझे तो पता ही नहीं चलता कि तुम यहाँ पर रह रहे हो।

पिता जी बोले, "माँ तो यही चाहती है कि लड़का चौबीस घंटे उसकी आँखों के सामने रहे।"

"राजीव हाँ कह कर चला गया तथा भाभी से सुअवसर पाकर बोला, "मेरी एक लड़की से दोस्ती चल रही है। वह लखनऊ की रहने वाली है। तथा जाति में प्रायः हमसे मिलती जुलती है। उसकी ऊँचाई भी हमारी जैसी है। रंग साफ है पर वह चश्मा लगाती है। वह पूर्णतः सीता सावित्री की भाँति है तथा दूर से ही देखने में एकदम भारतीय है। आप उसे देखकर यह नहीं कह सकतीं कि वह एक प्रथम श्रेणी की अफसर है। आपसे इतनी शीघ्र एवं अच्छी तरह से घुलमिल जायेगी कि आपको लगेगा कि आपकी छोटी बहिन है।"

राजीव की भाभी इस अवस्था को पार कर चुकी थीं। वह बोलीं, "लाला जी। आप तो एक दम बोले चले जा रहे हैं। मुझे भी कुछ अवसर दीजिये।" राजीव भाभी के पैर दबाते हुये बोला, "प्लीज, आप मेरा यह काम करा दीजिये ना।"

भाभी ने कहा, "आज रात्रि में मैं तुम्हारे भाई साहब से बात करूँगी तथा कल अम्मा जी से अवश्य बात करूँगी।"

पति की अनुमति प्राप्त करके राजीव की भाभी ने अम्मा जी से कहा,

''माता जी, छोटे भाई जी ने तो अपनी पसन्द की बहू ढूंढ ली है। हमें यह फाइनल कर देना चाहिये।''

अम्मा जी बोली, ''तुम बड़ी नेता हो गयी हो, हमें घर देखने दो, लड़की देखने दो। क्या ऐसे ही हाँ कर दें ? और उसके पिता जी से भी पूछना पड़ेगा।''

अम्मा जी से अधिक धैर्य न रखा गया एवं उन्होंने पूरी कहानी राजीव के पिता जी को सुना दी। उन्होंने सब सुनकर कहा, ''राजीव कैसा पागल है ? हमारे घर में सभी एक से एक सुन्दर बहुएँ हैं। उसे ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी ? क्या उसे हमारे ऊपर विश्वास नहीं था ? हम उसके लिये ए-वन लड़की ढूँढ कर लाते। फिर ये लड़की तो चश्मा लगाती है।''

अम्मा जी बोली, ''चश्मा, तो क्या हुआ ? चश्मा तो मैं भी लगाती हूँ। सुना है कि आजकल सम्पर्क लेन्स भी चल गये हैं। जिससे पता ही नहीं चलता कि लड़की की आँख कमजोर है, फिर राजीव हमारा सबसे छोटा लड़का है। उसको इच्छा रखनी ही पड़ेगी। लड़के की खुशी में ही हमारी खुशो है।''

राजीव के पिता जी ने कहा, ''रामू ! राजीव कहाँ है ? उसे तुरन्त बुलाओ। रामू ने कहा, ''साहब ! भइया जी अपने दोस्तों के साथ बाहर चले गये हैं। कह गये हैं कि लौटते-लौटते सात-आठ बज जायेगें।

शायद राजीव ने इरादापूर्वक ऐसा किया था। इस पर पिता जी ने क्रोधपूर्वक कहा, ''यह लड़का जबसे नागपुर गया है स्वयं को अभी से पूरा अफसर समझने लगा है। घूमने की बात तो सहन की जा सकती है पर भइया साहब की शादी में भी मनमानी चलने लगी है।

आगे राजीव के पिता जी ने धीरे से कहा, ''मैं छोटी बहू, बड़ी बहू से सुन्दर लाना चाहता था।''

राजीव की माता जी ने उत्तर दिया—छोड़िये, इन पुराने खयालातों को।''

दूसरी ओर अंजना ने भी अपनी माँ से कहा, ''माँ, हमारे साथ एक लड़का राजीव है। वह इलाहाबाद का रहने वाला है। वह बहुत अच्छा है। हमारी

बड़ी सहायता करता है। अंजना की माँ लड़कियों के स्कूल में प्रिंसिपल थीं। वह विषयवस्तु भाप गयी एवं बोली, "बिटिया, कुछ चक्कर तो नहीं है।"

अंजना ने लज्जापूर्वक जिज्ञासा किया, "कैसा चक्कर ?"

अंजना की माँ ने कहा, "तुम मुझसे सब स्पष्ट बोलो, यदि तुम लोगों में दोस्ती हो गयी हो तो मैं शादी की बात आगे बढ़ाऊँ। यदि केवल बैचमैट के नाते दोस्ती है तो इससे मुझे कोई तात्पर्य नहीं है।" अंजना की माँ खुले विचारों की महिला थीं तथा उनका विवाह भी अन्तर्जातीय विवाह था एवं उनका दाम्पत्य जीवन बड़े सुख से व्यतीत हुआ था। वे इसलिये इसे खराब न समझती थी। अंजना से राजीव के विषय में सब सुनकर वे पूर्ण आश्वस्त हो गई थीं कि उनकी लड़की की पसन्द उत्तम थी।

"अंजना ने कहा,—मम्मी ! सच, मैंने अभी तो उस दिशा में कुछ सोचा ही नहीं। यदि आप ग्रीन सिगनल दें तो मैं इस विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार कर सकती हूँ।"

अंजना की माँ ने कहा, "बेटी, ये ! विषय विचारधारा की विषय वस्तु नहीं होते अपितु ये भावना की वस्तु हैं। अतः मैं तुम्हारे जीवन साथी के विषय में विशेष क्या राय दे सकती हूँ ? तुम तो मेरे विचार पूर्व से ही जानती हो। मैंने लड़के को देखा भी नहीं है। पर मैं इतना जानती हूँ तथा तुम्हें इस विषय में सावधान करती हूँ कि विवाह के पूर्व किसी भी दशा में लड़के को अपने पास न आने देना। मैं उसके पिता जी से पत्र-व्यवहार करती हूँ। अंजना ने इस बात की गाँठ-बाध ली। बाकी समय उसका आत्मियों, सम्बन्धियों एवं मित्रों से मिलने जुलने में ही निकल गया।

उधर रात्रि में क्रोध शान्त होने पर राजीव के पिता जी ने राजीव से पूछा– राजीव ! यह सब क्या है ? तुम्हें यह हमें पत्र के द्वारा सूचित करना था ताकि हम सभी इस समय लड़की को देख लेते। अच्छा, मैं नागपुर आकर उसे देखूंगा, तब तक तुम कोई बात आगे न बढ़ाना।"

राजीव ने कहा, "हाँ, पिता जी।"

और राजीव एक अपराधी की भाँति चुप रहा।

करूणाशंकर इलाहाबादी होते हुए भी विशुद्ध भौतिकवाद में विश्वास करता था, वह प्रेम को प्रेम ही समझता था, उसे आत्मा का बन्धन नहीं, अथवा प्रेम की परिणति सब समय विवाह में हो, ऐसा उसका विश्वास न था। दूसरी ओर सुधा भी प्रेम को कभी-कभी साथी भावना समझती थी तो कभी विशुद्ध प्रेम जो दो अजनबी व्यक्तियों के मिलन से हो जाता है। लड़के-लड़कियों या विपरीत यौन के सम्बन्ध में यह प्यार कहलाने लगता है। पर सुधा को अन्दर से समझ में नहीं आ रहा था कि उसका यह सिद्धान्त करुणा के मुलाकात के पश्चात् कुछ परिवर्तित हो रहा है एवं वह वास्तव में करुणा को हृदय एवं आत्मा से चाहने लगी है। इसी अन्तर्द्वन्द की स्थिति में दोनों ने अपने खास एक-एक मित्र को यह बात उगल दी। राजीव ने भी करुणा के बिषय में अपने एक मित्र को सब कुछ बता दिया था। अतः कुछ दिनों पश्चात् शनैः शनैः यह खबर दोनों के माता-पिता के कानों तक पहुँची। वे सजग एवं चिन्तित हो उठे।

ग्यारह

स्वदेश एवं जन्मस्थान से बढ़कर कोई प्रिय जगह नहीं है। जहाँ बचपन बीता, बचपन के कुछ मित्र रह गये, वह स्थान एवं परिवेश कैसे भूला जा सकता है। वात्सल्य भावनाएँ एवं विचार स्फटिकमणि की भाँति पवित्र होते हैं। सभी ने भारी मन लिए अपने-अपने घरों के स्टेशनों से प्रस्थान किया। रास्ते पर घर की ओर देखते रहे। वहाँ के पुरुष-महिलाओं, खान-पान, जलवायु एवं अन्य परिवेश की प्रशंसा ही करते रहे। पर जीवन में प्रेम करना ही जीवन की परिणति नहीं हैं। यदि सभी लोग केवल लेखक, शिल्पी, प्रकृति-प्रेमी एवं भावुक व्यक्ति हो जायें तो संसार के व्यापारों को कौन देखेगा

जिसके लिए भौतिक एवं स्थूल जीवन-दृष्टि का प्रयोजन है तथा जिसमें रह कर रक्त सुखाना पड़ता है। अतः यदि संसार को चलाना है, समाज में सम्मान प्राप्त करना है तो उपार्जन करना अति आवश्यक है। यह सन्तोष-भावना मन में लेकर अधिकांश लोग नागपुर आ पहुँचे तथा अपने अपने कमरों में व्यवस्थित हो गये।

समयानुसार संस्थान खुला तथा देखा गया कि एक चौथाई लोग अभी नहीं आ पहुँचे हैं। कुछ लोगों ने अस्वस्थता का बहाना लेकर टेलीग्राम भेज दिया तो कुछ लोगों ने छुट्टी बढ़ाने के लिए पत्र। पर जिन लोगों ने असत्य का सहारा नहीं लिया, वे बेचारे मारे गये उनके विरूद्ध अनुशासन की कार्यवाही आरम्भ करने की धमकी दी गयी। वाद में उन्हें भविष्य के लिए "सावधान" करके छोड़ दिया गया।

प्रथम दिन परीक्षा-परिणाम प्रकाशित हुआ तथा आत्म-विश्लेषण हेतु परीक्षा की कापियाँ प्रशिक्षणार्थियों में बाँट दी गयी। कुछ लोगों के लिये दीपमालिका शुभ सिद्ध हुई एवं कुछ लोगों के लिये अशुभ। शुभ वालों ने सोचा कि दिवाली के बाद उनके लिये शुभ नव वर्ष की शुरूआत होगी जब कि अशुभ वालों ने सोचा कि अंग्रेजी नव वर्ष को ही उद्देश्य वर्ष माना जायेगा। प्रति व्यक्ति अब स्वयं को पूर्ण दक्ष मानता था तथा परीक्षा परिणाम के विषय में उसके व्यक्तिगत विचार थे। साधारणतया तीस प्रतिशत से अधिक लोग परीक्षा परिणाम से संतुष्ट होते नहीं देखे गये हैं पर यहाँ पर वह औसत पाँच प्रतिशत से अधिक नहीं था। खैर, यह परीक्षा नौकरी तो नहीं छीन लेगी, ऐसी धारणा लेकर सभी चाय पीने चले गये। कुछ लोगों ने इन परीक्षा परिणामों को पक्षपात की तराजू पर तौला, कुछ को इनमें प्रान्तीयता दृष्टिगोचर हुई तो कुछ लोगों को जातिवाद की गंध आयी। लोगों के अहम् को इन दो शब्दों ने सम्बल दिया।

अंजना ने परीक्षा में सर्वोत्तम किया। बुक कीपिंग एवं एकाउंटेन्सी में उसके सर्वाधिक पंचानबे प्रतिशत अंक आये। राजीव पचहत्तर प्रतिशत अंक

पाकर ही सन्तुष्ट था। सुधा का एकाउन्टेन्सी में शून्य आया तथा करूणा केवल बीस प्रतिशत अंक प्राप्त कर अनुतीर्ण हो गया।

सभी का परीक्षा-परिणाम नोटिस बोर्ड पर लग गया। इससे अधिक दंड विधान प्रशिक्षण कालेज में नहीं था। उस दिन सुधा से मध्यान्तर में धैर्य न रखा गया एवं वह बाहर जाकर रोने लगी। करूणा ने उसे शांति देकर कहा, "क्या होता है ? मेरे भी खराब अंक हैं। इस नौकरी में इस्पात जैसी कठोर सुरक्षा है। एक बार घुस जाने के पश्चात कोई निकाल नहीं सकता है और हमारे देश में एक हजार रुपया मासिक आमदनी के स्तर पर पाँच प्रतिशत से अधिक लोग नहीं हैं। सुधा ने कहा, "पर सभी लड़कियों के अंक मुझसे अच्छे आये हैं।"

करुणा ने कहा, "तुमने सबसे अधिक मस्ती भी तो की है।"

सुधा क्रोधित हो कर बोली, "मैंने मस्ती तुम्हारे कारण एवं तुम्हारे साथ करी है। मैं अब ऐसा नहीं करूँगी।"

करूणा के पैर के नीचे जैसे धरती खिसक गयी हो पर साहस एकत्रित करके वह बोला "सुधा, मस्ती एकबार बन्द करने से काम नहीं चलेगा। हम मस्ती संयमपूर्वक करेगें। सुधा तेज स्वर में बोली, "आप दिखावा मत कीजिए। मस्ती एवं संयम दोनों विरोधी हैं। दोनों में समन्वय कैसे हो सकता है ?"

करुणा ने कहा, "तुम मुझे समर्पण कर दो जैसे अर्जुन ने कृष्ण के सामने किया था। मैं पथ ढूंढ़ कर बताऊँगा।"

सुधा ने कहा, "अच्छा कीजिए। मैं आप से हाथ जोड़ती हूँ।"

करुणा ने कहा, "तुम्हारा मस्तिष्क आज स्थिर नहीं है। आज रात्रि हम होटल एवं सिनेमा जायेगें, तब सभी ठीक हो जायेगा।"

ठीक ही कहा जाता है कि सेना के जवान जितने कष्ट में होते हैं, पत्नी की याद एवं विरोधी सैक्स की ओर उनका आकर्षण उतना ही प्रबल होता है। करूणा ने सुधा के साथ रात्रि में होटल एवं पिक्चर जाकर सुधा का दुःख

दूर कर दिया यद्यपि अन्य लोग सुधा एवं करूणा के इस कार्य को "लज्जाहीन" कह रहे थे पर वे दोनों परस्पर मस्त थे क्योंकि सामान्य लोगों से उनका प्रयोजन नहीं था।

दूसरी ओर राजीव ने एकान्त पाकर अंजना से कहा, "बधाइयाँ आपको टॉप करने पर, कोटिश: बधाइयाँ। हम लोग मध्यान्तर में नीचे उतरकर बात करेंगे।"

मध्यान्तर में चाय की चुस्कियाँ लेते हुये दोनों बातों के समुद्र में खो गये। राजीव ने कहा, "मुझे तो इलाहाबाद में प्रशिक्षण कालेज की याद आती रही एवं आपकी भी।"

अंजना ने इस सत्य को और भी उद्घाटित किया और कहा, "मुझे केवल आपकी ही याद आती रही। आप तो बहुत सामाजिक हैं तथा आपके अनेक मित्रगण हैं। आपका समय तो उन्हीं सभी के मध्य व्यतीत हो गया होगा। मेरे घर पर तो मेरी माँ एवं छोटी बहिन के अतिरिक्त कोई नहीं है।"

राजीव ने कहा, "जब आपने यह बात छेड़ी ही है तो मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ। यद्यपि मैं सामाजिक हूँ पर सामाजिक व्यक्ति हो चालाक होते हैं। वे अपने प्रेम को छिपाने के लिए ही अत्यधिक सामाजिक बनते हैं ताकि अन्य वास्तविकता न समझ पायें। अन्य लोग मुझसे वार्तालाप में अति रूचि लेते हैं पर मेरा ध्यान आप ही में अटका रहता है।"

राजीव एवं अंजना ने प्राय: कक्षा में एक साथ ही प्रवेश किया। इस पर कुन्डु ने कटाक्ष किया, "राजीव, लोग हाथ मार ले गये हैं।" राजीव ने तपाक से उत्तर दिया, "यह तो आशा ही थी। लोग मुझसे अधिक बुद्धिमान हैं।"

इस पर अंजना शर्मा गयी एवं उसने मुस्कराकर सिर नीचा कर लिया।

परीक्षा परिणाम के फलस्वरूप संस्थान के वातावरण में गम्भीरता आयी। निर्देशक ने तो इस परीक्षा के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों का स्थान अपनी सूची में निर्धारित कर दिया। स्वभावतः इस महत्वपूर्ण सूची में अंजना

का स्थान सर्वोत्तम था एवं सुधा का स्थान आखिरी था, पर प्रशिक्षणार्थियों के लिए उनके आनन्दमय जीवन में एक क्षणिक आघात था। गतिमान जीवन में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। बुककीपिंग, एकाउंटेन्सी एवं मारवाड़ी सीखने के लिए कुछ अधिक जोड़े निर्मित हो गये। कुछ चालाक एवं इन विषयों में बुद्धिमान लड़के इन विषयों में दुर्बल महिलाओं के आत्म-विश्वास के अभाव का शोषण करने लगे। कई महिलाएँ पुरुषों के प्रशिक्षण को पार करने के लिये शरणापन्न हुई। इस प्रक्रम में संस्थान के वातावरण में और मधुरता आ गयी क्योंकि कुछ अन्य युग्म प्रकाश में आ गये।

बारह

नागपुर का जाड़ा अति सुहावना होता है। यहाँ अधिक ठंड पड़ती है। जाड़े का मौसम यहाँ मन लुभावना एवं सर्वप्रिय होता है। एक स्वेटर से अधिक शीत कभी नहीं पड़ी। अतः जाड़े के आडम्बरों जैसे मोटी-मोटी रजाइयों, स्नान के लिये गरम पानी की व्यवस्था आदि की आवश्यकता न थी। पर आश्चर्य है कि लोग ग्रीष्म की भाँति शीत व्यतीत करने यहाँ नहीं आते। इससे स्पष्ट है कि ग्रीष्म की अपेक्षा शीत सहन करना अधिक आसान है। यही कारण है कि शीत-प्रधान मुल्कों ने संसार में अधिक प्रगति की है। केवल महाराष्ट्र विधान सभा का अधिवेशन बम्बई से नागपुर चला आता है पर लोक जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता हैं। आर्थिक दृष्टि से विशेषतः कोई क्रियाशीलता में वृद्धि नही होती पर राजनैतिक दिशा में अवश्य कुछ जुलूसों एवं जलसों में वृद्धि हो जाती है।

सुमधुर शीत-लहर में दिन गुजर रहे थे जैसे सभी लोग प्रकृति के बनाये स्वर्ग में वास कर रहे हों। शायद यही कारण था कि महाकवि कालिदास इस

वातावरण से प्रभावित होकर यहाँ यक्ष को ले आये एवं उन्होंने अपने ग्रन्थ "मेघदूत" के अधिकांश विरह गीत यहाँ की पृष्ठभूमि में लिखे। रामटेक नामक स्थान जो नागपुर से बिल्कुल पास है, मेघदूत का मुख्य कथन स्थल है।

शीत-लहर चलते-चलते दिसम्बर मास आया। सभी खुश हुए कि नव-वर्ष आयेगा, नव-संदेश, नई शुभकामनाएं एवं जीवन में नया अर्थ लिए, शायद नये वर्ष में प्रशिक्षण कालेज की जड़ता टूटे, लोगों में नये उत्साह का सृजन एवं उद्दीपन हो। अन्ततः एकतीस दिसम्बर का शुभ मुहुर्त आ गया है। कालेज में नये वर्ष का कोई सरकारी कार्यक्रम न था, केवल प्रथम जनवरी की छुट्टी थी। इससे सभी को एकतीस दिसम्बर की रात्रि को जागने की छूट मिल गयी।

छात्रावास में भोजनालय एवं मनोरंजन कक्ष खूब सजाया गया। कृत्रिम काल में सजावट के साधन भी कृत्रिम होते हैं। प्रशिक्षण कालेज कैसे समय से अछूता रहता ? अतः यहाँ भी पेपर कटिंग का ही बाहुल्य था। सभी ने मिलकर जहाँ बहुतायत में झंडियां बनायीं वहाँ अन्जना ने कुछ लड़कियों को लेकर वाल पेपर कटिंग में अपना कौशल दिखाया। छात्रावास नई दुल्हन की भाँति सजाया गया। छात्रावास के चारो ओर फूलों के पेड़ों एवं झाँड़ों को नीली-नीली विद्युत् बत्तियों से सजाया गया तथा इस नील संध्या में सामूहिक भोज का आयोजन हुआ। अधिकांश लोगों ने सम्मिलित भोज में भाग लिया पर कुछ लोग होटलों एवं रेस्टोरेंट में नववर्ष-बेला मनाने गये, शायद थिरकने, कैबरे एवं नाचने वालियों को देखने के लिए। कुछ लोगों ने भोज पूर्व टानिक के रूप में मद्य का सेवन किया तो कुछ पक्के लोग प्रलोभन के मारे अड्डों पर चले गये। गोया पहिले की भांति सामूहिक भोज सम्पन्न हुआ। भोज के उपरान्त एक समूह रात्रि भर के लिए गीत-संगीत के कार्यक्रम में जम गया। सितार, वायलिन एवं बासुरी से विभिन्न प्रकार के मधुर स्वर गूंज उठे। यद्यपि कुछ बाद्य यंत्र भारतीय थे पर सभी में अंग्रेजी धुनें निकल रही थीं।

कुछ समय पश्चात् सभी लोग मौलिकता में आ गये एवं भारतीय संगीत-कला के रस लेने लगे। कुछ लोग तो आदिवासी क्षेत्रों के "नृत्य" पर उतर आये एवं भालू और बन्दरों की तरह कूदने लगे, जिसे रूसी में कुछ जिमनास्टिक मिश्रित करके "बैले" भी कहा जाता है। इस कार्यक्रम के पश्चात् राजीव एक छोटे समुदाय के साथ ताश खेलने लगा। पांडेय जी वहाँ आये और उन्होंने कहा "जुआ खेलना खूब खराब आदत हैं। इससे हमारा देश नष्ट हो गया था" राजीव ने कहा "सो तो ठीक है पर तीन पत्ती में जितना एकाग्रचित्त लगता है उतना शराब में नहीं। फिर हम जितने छोटे-छोटे दावों से खेलते हैं उसमें हेर फेर कम होता है। आर्थिक समानता करने का यह ईश्वर का दिया एक साधन है।" पांडेय जी इस समय सामान्य से अधिक बुद्धिजीवी हो गये थे। पांडेय जी बोले "भाई, राजीव भी अब कुछ दिनों से विचार अभिव्यक्त करने लगा है। लड़कियों के साथ रहने से वास्तव में लड़कों में रहन-सहन का तौर-तरीका परिमार्जित हो जाता है एवं बात करने का ढंग उन्नत हो जाता है।"

राजीव ने कहा, "पांडेयजी, आप दुर्योधन एवं युधिष्ठिर को भूलकर एक दाव लगा लीजिए। आपकी तो कोई द्रौपदी नहीं है। आपको किस बात का भय।" पांडेयजी उसी समुदाय में सम्मिलित हो गये तथा दाव पर दाव लगाते गये जो राजीव के सभी साथियों से अधिक थे। वर्ष का अन्त समीप आ रहा था एवं जुआ में अब अधिक आकर्षण न रहा। सभी की दृष्टि महिलाओं के कमरों की ओर थी। महिलाओं के कमरों में कार्यकलाप ही मुख्य चर्चा का विषय था। जो महिलाओं के कमरों में अधिक जाता हैं वह अधिक चालाक, साहसी एवं बुद्धिमान माना जाता था। सभी ने योजना बनायी कि अब तो बारह बजे रात्रि का समय पास है, कुछ और सक्रियता से कार्य किया जाये। लोगों ने वन्य पशुओं एवं पालतू जानवरों की आवाजें आरम्भ की। राजीव कुत्ते की हूबहू ऐसी आवाज निकालता था कि सुनने वाले आश्चर्य चकित रह जाते थे। बाघ, कुत्ते एवं गर्दभ स्वरों

ने सभी को नींद से उठा दिया। उन हिन्दुस्तानी लड़कों को विशेषतः खराब लगा जो भारतीय परम्परा से प्रातः उठने पर नव वर्ष की मंगलमय कामना करते। पर कोई उपाय न था।

सदाशिव वाजपेयी की निद्रा अभी तक भंग करने में वे सफल न हो सके। इसके लिए एक योजना बनायी गयी। उसी योजनानुसार राजीव वाजपेयी जी के कमरे में गया तथा उसने दरवाजा खटखटाकर कहा "वाजपेयी जी, खोलिए।" वाजपेयी जी ने जिज्ञासापूर्वक पूछा, "क्या काम है ?"

राजीव ने स्वर परिर्वतित करके उत्तर दिया, "वाजपेयी साहब, आप तो अंग्रेजी में एम. ए. हैं। क्रिसमस की क्या स्पेलिंग है।" सदाशिव जी ने झल्लाकर कमरे का दरवाजा खोला पर तब तक सभी दृष्टि से ओझल हो चुके थे। वाजपेयी जी असंयमित होकर बड़बड़ाते हुए बोले, "साले-हरामजादे यहाँ कैसे ऐसी नौकरियों में चले आते हैं? हिम्मत हो तो आओ। मैं सभी खोलकर बताता हूँ। वाजपेयी जी ने सोचा कि इससे अधिक करना पत्थर से सिर मारना है। अतः वे पुनः दरवाजा बन्द करके निद्रा देवी की गोद में चले गये। इसके पश्चात् राजीव ने कुन्डु को उकसा दिया। कुन्डु ने हेमलता के कमरे का दरवाजा खटखटाया और बोला "मेम साहब, मजे में हैं। क्या नींद अच्छी तरह से आ रही है ?"

कमरे का दरवाजा खोलने के पूर्व ही सभी रफू चक्कर हो चुके थे। बारह बजे मध्यान्तर रात्रि का शुभ मुहुर्त आया। अन्जना को प्रथम शुभकामनाएं राजीव से मिली, उसके पास बैठी सहेलियां भी पिछड़ गयीं। सभी ने राजीव का सहृदयतापूर्वक स्वागत किया एवं अंजना ने स्वयं राजीव को चाय तैयार करके पिलायी।

करूणा एवं सुधा पृथक रूप से गेलार्ड रेस्तराँ में बाॅल डान्स द्वारा एक दूसरे में खोये हुए थे एगं नये वर्ष का स्वागत करते हुए एक दूसरे में समा गये।

पटाखों की तीव्र ध्वनि से छात्रावास का पूरा परिवेश गूँज उठा एवं

पुराने कमरों की प्राचीरें काँपने लगीं। पटाखों की गूँज के साथ नये वर्ष में सभी ने बिना किसी भेदभाव के शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया एवं तदनुकूल रिकार्ड की ध्वनि गूँजने लगी। इसके पश्चात् सभी लोग निद्रा देवी के पास नये वर्ष के सफल एवं समृद्धशाली होने के लिए आशीर्वाद की कामना करने लगे।

तेरह

आई० ए० एस० लिखित परीक्षा का परिणाम प्रकाशित हुआ। यह समाचार विद्युत की भाँति फैल गया कि सुधा को लिखित परीक्षा में सफलता उपलब्ध हुई। इसकी प्रथम सूचना सुधा को करुणा ने दी। उसकी खुशी की सीमा न थी। रात्रि को दोनों गेलार्ड रेस्टोरेन्ट गये जहाँ पर परिणाम की खुशियाँ मनायीं गयीं। आज करूणा के विवश करने पर सुधा को एक पेग लेना ही पड़ा। साथ में डिस्कोथीक का प्रोग्राम चल रहा था। दोनों काफी देर तक नाच में खोये रहे। इस प्रकार के पाश्चात्य नाच में नाट्य शिल्प कम स्त्री-पुरुषों का एक दूसरे से सिमटना अधिक है। सुधा और करुणा भला इससे कैसे दूर रहते।

बदलते परिवेश में सुधा को आज मना करने का नैतिक साहस न था। पाश्चात्य संगीत की धुनों के साथ दोनों एक दूसरे की कमर पकड़कर बाहों में बाहें डालकर घंटों नाचते रहे। दोनों के शरीर में बार-बार विद्युत की लहरें दौड़ जाती थी पर चरम सीमा तक पहुँचने के लिए अभी काफी साधना बाकी थी। भाग्य से दोनों के मस्तिष्क में थोड़ा ज्ञान बाकी था एवं पिछले कठिन अध्ययन के कुछ अध्याय मस्तिष्क के पीछे हिस्से में प्रकाशित हो जाते थे।

सुधा की सफलता का समाचार उसके घर वालों तक पहुँच गया। उसके

पिताजी ने उसके छोटे भाई को नागपुर भेजा क्योंकि साक्षात्कार हेतु नये-नये भद्र कपड़े सिलवाने पड़ते हैं तथा अनेक प्रकार की प्रारम्भिक व्यवस्था की आवश्यकता होती है ।

निश्चित समय पर सुधा का भाई अजीत आया । करूणा और सुधा उसे मोटर साइकिल पर स्टेशन लेने गये । सुधा ने करूणा का परिचय कराते हुए कहा, ''यह हमारे मित्र हैं, इन्होंने मेरी यहाँ सभी विषयों में अति सहायता की है'' अजीत ने करूणा से प्रेमाभिवादन किया पर करूणा के मन में भय व्याप्त हो गया क्योंकि अजीत की ऊँचाई छः फुट थी तथा देखने में वह एक सेना के हृष्ट पुष्ट नौजवान से किसी प्रकार कम न था। करूणा ने सोचा, ''यदि यह खलनायक बन गया तो मेरा जीना मुश्किल हो जायेगा । अतः सुधा को धोखा देना नहीं चलेगा उसकी राजी से ही सब काम करना पड़ेगा ।'' वह व्यवस्था करके चला गया ।

इसी समय टौन्सिल के मरीज राजीव की तबियत खराब हुई । ज्वर का तापमान १०३ तक पहुँच गया । सभी को अत्यधिक चिन्ता हुई, उसका रूम पार्टनर पांडेय बेचारा तो परेशान हो गया । निर्देशक साहब ने उसे कक्षा से छुट्टी दे दी । एक तो सुख था कि वह कक्षाओं से बच गया पर दूसरा दुख था कि वह मरीज की मुख्य इच्छा पूरी न कर सका अर्थात् वह अंजना को राजीव के सब समय पास रहने की व्यवस्था न कर सका । यह सम्भव भी न था क्योंकि अंजना के कक्षा से अनुपस्थित रहने से सभी के सामने सत्य आभासित हो जाता । परन्तु प्रातः, सायं एवं रात्रि को अंजना अपने मित्रों के साथ राजीव के समाचार पूछ जाती थी एवं यथा साध्य सहायता करती थी । उसने डाक्टर के निर्देशानुसार कमरे में खाद्य सामग्री तैयार कर दी अथवा मैस में निर्देशन देकर तैयार करवाती । गोया प्रमुख काम सभी अंजना के माध्यम से होता था पांडेय जी का काम सन्देशवाहक का था ।

तीन चार दिनों पश्चात् पांडेय जी बेचैन होने लगे कि राजीव का स्वास्थ्य शीघ्रातिशीघ्र उत्तम हो । इसी बीच करूणा ने टेलीग्राम द्वारा यह समाचार

राजीव के पिता जी को दे दिया। वे पाँचवे दिन नागपुर आ गये। करूणा एवं पाण्डेय जी उन्हें स्टेशन पर लेने गये।

उनसे मिलने पर राजीव के हृदय में विश्वास एवं प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गयी। उनसे वार्तालाप के दौरान राजीव ने पांडेय जी एवं अंजना की सेवा सुश्रुषा की अत्यधिक प्रशंसा की। सायं सुधा के साथ वह राजीव के कमरे में आयी। इस समय अंजना ने सुन्दर साड़ी पहन रखी थी। क्योंकि यह उसके राजीव के जीवन-साथी बनने का निर्णायक दौर था। करूणा एवं पांडेय जी वहां पूर्व से ही बैठे थे। उसने राजीव के पिता जी को प्रणाम किया एवं उनकी आज्ञा से कुर्सी पर बैठ गयी। कुशल मंगल के पश्चात् राजीव के पिता जी ने उससे उसके विषय में जानकारी ली। उसने केवल नम्रता पूर्वक उत्तर ही दिये।

राजीव के पिता जी को उसका व्यवहार अति सुन्दर एवं प्रिय लगा। वे दो दिन छात्रावास में रुके एवं एक दिन अंजना, सुधा, करूणा एवं पांडेय जी के साथ मैस में खाने भी गये। एक दिन जब सभी लोग कक्षाओं में चले गये, उन्होंने छात्रावास के एक विश्वासपात्र नोकर एवं बाहर चाय की दुकान पर अंजना के विषय में पूछ-ताछ की। सभी ने एक मत से कहा, "साहब, वही एक मेम साहिब है जो हमें बिल्कुल हमारे सभ्य घरानों जैसी लगती है। बकाया सभी मेम साहिबा तो अंग्रेज मेम साहिबान हैं।"

राजीव के पिता जी को जैसी बहू चाहिए थी, अंजना उनके विचारों की तस्वीर दृष्टिगोचर हुई। उन्हें जो जानना था, वह सभी कुछ सहज में ही प्राप्त हो गया। वे खुशी से घर लौटने की तैयारी में लग गये क्योंकि उन्हें अपने लड़के की क्षमता में विश्वास था। अंजना, करूणा एवं पांडेय जी उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आये। इस थोड़े समय में राजीव के पिता जी का अंजना पर से सभी क्रोध समाप्त हो गया था एवं उनके हृदय में एक विशेष दया एवं स्नेह-भावना पनप चुकी थी। उन्होंने अंजना को संकेत करते हुए कहा, "तुम लोग हमारे समाज के गौरव हो। तुम लोग जीवन में सभी जगह उन्नति करोगे। मेरा तुम सभी को आशीर्वाद।"

यह आशीर्वाद अंजना को करूणा एवं पांडेय जी को बीच में रखकर दिया गया था क्योंकि घर पर फायनल विचार-विमर्श होना बाकी था।

तीन चार दिन पश्चात् राजीव भी ठीक हो गया। कुछ दिनों पश्चात् अंजना के एक सम्बन्धी नागपुर से गुजरे। राजीव एवं अंजना एक ही रिक्शे पर उनसे मिलने गये। साथ में मिठाई, शुद्ध घी की गरम पूड़ी एवं सब्जी ले गये। दोनों को एक साथ देखकर एवं उनके परस्पर व्यवहार को दृष्टिगत करते हुए सम्बन्धी जी की श्रीमती ने आश्चर्य चकित होकर प्रश्न किया, "अंजना, ! ये आपके साथ कौन सज्जन हैं ?"

अंजना ने कहा, "ये हमारे साथ ही हमारे मित्र आफिसर प्रशिक्षणार्थी हैं तथा यू० पी० में इलाहाबाद के रहने वाले हैं।"

श्रीमती जी अपने विवाह के पूर्व इस अवस्था से गुजर चुकी थीं। अतः वे व्यापार समझ गयीं।

सुधा के साक्षात्कार का दिन आया। देहली में लोकसेवा आयोग में साक्षात्कार हुआ। सुधा का भाई दिल्ली पहुँच गया था अतः कोई असुविधा न हुई। सुधा से साक्षात्कार में दुर्भाग्य से सभी प्रश्न विषयों पर आधारित थे जिसके उत्तर केवल विश्वविद्यालय से ताजा निकला अभ्यर्थी ही दे सकता है। फिर प्रशिक्षण का कार्य एवं करूणा के साथ घूमने फिरने के पश्चात् अध्ययन के लिए समय न मिल पाता था।

प्रशिक्षर्ण कालेज के एक लक्ष्मन दास जी का साक्षात्कार उत्तम हुआ। वे इलाहाबाद के उन छात्रों में से थे जो उच्च नौकरियों में भी तैयारी करके सफलता प्राप्त करते थे। उनके पीछे कोई अच्छी पृष्ठभूमि अथवा पारिवारिक श्रेष्ठता नहीं थी, । "हॉबी" एवं भारत की विदेश नीति पर प्रायः साक्षात्कार में प्रश्न किये जा रहे थे। अतः उन्होंने अपनी रूचि के लिए "बागवानी" का विषय तैयार किया था एवं भारत की विदेश नीति में "नेपाल एवं भारत के परस्पर सम्बन्ध" तैयार किये थे। सौभाग्य से उनसे यही दोनों प्रश्न पूछे गये। लक्ष्मन जी ने उत्तर दिया, "मेरी हॉबी बागवानी है......." और तत्पश्चात् वे बागवानी

पर धारा प्रवाह बोलते चले गये जबकि वास्तव में उन्होंने कोई फूल का पेड़ कभी भी नहीं लगाया था। इसी प्रकार भारत-नेपाल सम्बन्ध पूछे जाने पर उन्होंने सभी उत्तर सन्तोष जनक दिये। यहाँ तक कि उन्होंने इस विषय पर एक विधि वेत्ता की भाँति अन्तर्राष्ट्रीय विधि की दृष्टि से दोनों के सम्बन्धों का विश्लेषण किया। उन्होंने अपना मत दिया, "नेपाल जैसे देशों को भी समुद्र की सीमा न होते हुए भी समुद्र में उपलब्ध खनिजों में भाग प्राप्त होना चाहिये।"

इस पर साक्षात्कार बोर्ड के पंडित उनसे अति प्रभावित हुए। लक्ष्मन जी के साक्षात्कार का समाचार तुरन्त फैल गया। इलाहाबाद के सभी लड़के मुस्करा रहे थे क्योंकि लक्ष्मन जी को बागवानी तो दूर कभी पेड़ पौधों के पास भी जाते हुए नहीं देखा गया था।

अन्ततः, साक्षात्कार के परिणामों की अपेक्षा होने लगी।

चौदह

आई. ए. एस. परीक्षा का परिणाम प्रकाशित हुआ। सुधा सहित लक्ष्मन जी भी असफल हो गये। सभी बोले, "साक्षात्कार बोर्ड की आँखों में धूल झोंकना बहुत कठिन है।" पर वास्तव में लक्ष्मन जी धूल झोंकने में सफल हो गये थे। उनके साक्षात्कार में पचास प्रतिशत अंक थे। वे तो लिखित परीक्षा में अन्यों की तुलना में उत्तम न करने के कारण असफल घोषित कर दिये गये थे। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले चार-पांच मौन साधक थे।

जहाँ यह दिन लक्ष्मन जी के लिए विराट सदमे का दिन था क्योंकि "ऊँची आशाओं के संघर्ष" में लक्ष्मन जीं स्वयं को साफल्यमंडित समझने लगे थे, वहाँ यह सुधा के लिये भी अति दुःखपूर्ण दिन था।

रात्रि में करूणा सुधा को अपने कमरे में ले गया एवं उसे अनेक प्रकार से

सन्तोष देने लगा। उसने कहा, "देखो, महिलाओं की इतिश्री उनके सुखी परिवार बनाने में है। अब तो तुम मुझसे प्यार करने लगी हो और मैं तुमसे हम दोनों का विवाह भी अब अन्य से नहीं हो सकता। यदि तुम आई. ए. एस. में आ जाती तो मुझसे विवाह मुश्किल था क्योंकि प्रथम तुम मुझसे श्रेष्ठ नौकरी में चली जाती एवं दूसरे तुम्हें आई. ए. एस में अन्य किसी प्रान्त में नौकरी के लिये भेजा जा सकता था।"

सुधा ने रुदनपूर्ण स्वर में कहा, "तुम बहुत स्वार्थी हो। तुम चाहते हो कि मैं आई. ए एस. में न आऊँ।"

करूणा ने कहा, "ऐसी बात नहीं है। मैं हृदय से चाहता था कि तुम सफलता प्राप्त करती। पर दु:ख को दूर करने के लिए हमें वर्तमान परिस्थितियों में खुश रहना सीखना चाहिए। चलो, इस वर्ष हम दोनों एक साथ परीक्षा में बैठेगें।" सुधा ने कहा, "पर हम दोनों प्रतिज्ञा करें कि हम गम्भीरतापूर्वक परीक्षा में बैठेगें।"

करूणा ने 'हाँ' कह कर सुधा के अश्रुकण पोछे तथा उसका प्रगाढ़ स्नेहालिंगन किया। सुधा उस स्नेहालिंगन में जैसे सभी कुछ भूलकर समा गयी हो। क्षण भर में दु:ख एवं चिन्ता के घनीभूत बादल अदृश हो गये।

इस परीक्षा परिणाम ने अनेकों को आई. ए. एस. में बैठने की प्रेरणा दी। इसके फलस्वरूप संस्थान का वातावरण परिवर्तित हो गया। संस्थान का छात्रावास एक विश्वविद्यालय के छात्रावास की भाँति ज्ञात होने लगा।

राजीव ने एक दिन अंजना से प्रस्ताव किया, "मैं भी सोचता हूँ कि इस वर्ष मैं आई. ए. एस. में बैठूं तथा खूब तैयारी से बैठूं।"

अंजना ने उत्तर दिया, "आई. ए एस. में क्या लाभ है? हम लोग पृथक-पृथक हो जायेगें तथा फिर एक साथ होना दुरूह होगा।" राजीव ने कहा, "यह हमारा तो आत्मा का मिलन है। इसे तो नौकरी क्या संसार भी पृथक नहीं कर सकता।"

अधिकांश लोग संस्थान के प्रेम को लैला-मजनू, नल-दमयन्ती अथवा हीर-

रांझा का प्रेम समझते थे पर राजीव एवं अंजना इसे स्वर्गीय प्रेम मानते थे। अंजना ने कहा, "मेरा पावन कर्तव्य है, आपकी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के पूर्ण होने में प्राणपण से सहयोग करना। अतः यदि आपको इसी में प्रसन्नता है, आप अवश्य प्रयत्न कीजिए मैं आपके साथ सदैव रहूँगी।"

इसी बिषय की चर्चा रात्रि में राजीव के कमरे में आरम्भ हुई। पांडेय जी ने राजीव एवं अंजना के समक्ष अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये, "भाई, प्रयत्न करने में कोई क्षति नहीं। इसमें कोई संदेह नहीं कि आई. ए. एस. हमारे देश की सर्वोत्तम नौकरी है। आई. सी. एस. की भाँति आई. ए. एस. भी आजकल राज्य करते हैं। दिल्ली में राज्य काज स्थल साउथ ब्लाक एवं नार्थ ब्लाक उन्हीं द्वारा संचालित होते हैं। फिर जीवन में पश्चाताप भी नहीं रहेगा कि प्रयत्न न कर सके। यह पश्चाताप की स्थिति सबसे खराब होती है, क्योंकि उम्र निकल जाने पर चाहते हुए भी आप आई. ए. एस. में नहीं बैठ सकेगें।"

पांडेय जी की इस विचारधारा से दोनों सहमत हुए एवं राजीव आई. ए. एस. की तैयारी में जुट गया। उसकी प्रेरणा स्रोत थी—अंजना, सभी महत् कार्यों में परोक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा स्रोत महिलाएँ ही रहा करती हैं। चाहे वह नैपोलियन हो या कालिदास अथवा गो० तुलसीदास पर जार्ज बर्नाड शां कैसे एक अपवाद निकल गया, पांडेय जी इसके मंथन में लग गये। पांडेय जी की उम्र सभी दृष्टि से गुजर गयी थी। इस नौकरी के अतिरिक्त जीविका का कोई साधन न था।

पांडेय जी ने आगे कहा, "देखो! आई. ए. एस. में विभिन्नता की रंगीन दुनियां है। आज आप कलैक्टर है तो कल आप सचिवालय में बैठे मंत्री की कलम से राज्य की नीति निर्धारित कर रहे हैं अथवा मंत्री के मुख से राज्य की नीति की उद्घोषणा कर रहे हैं। तीसरे दिन आप किसी मिल के या कारपोरेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर बने बैठे हैं तो चौथे दिन आप समाजकल्याण के विभिन्न कार्यों के संगठन में संलग्न हैं। भला, ऐसे जीवन्त

कार्य कोई आपको खर्च करने पर भी नहीं सौंपेगा। क्या टाटा, बिरला करोड़ों रुपया धार्मिक एवं समाज हित के कार्यो में खर्च करने के पश्चात् भी समाज पर कुछ प्रभाव छोड़ गये हैं ? आजकल सरकारी यन्त्र एवं सरकारी क्षमता का सामना करना एक दुस्साध्य कार्य है।"

करूणा ने कहा, "पांडेय जी, बस रहने दीजिए। आपको फौरन एक काफी पिलायी जाये।"

"अच्छा यार, जैसी आपकी इच्छा एवं सद्‌भावना। यह ब्राह्मण खाने के लिये कभी भी इन्कार नहीं करेगा। फिर मना करने से आप लोगों को अप्रिय लग सकता है।"

काफी की चुस्कियों के साथ यह निर्णय हो गया कि राजीव आई. ए. एस. परीक्षा में बैठेगा। इससे राजीव के घर वालों की भी इच्छा पूर्ण हो जायगी जो राजीव को आई. ए. एस. में चाहते हैं।

अंजना से बाद में मिलने पर राजीव ने कहा, "अंजना, तुम भी आई. ए. एस. में वैठो।"

अंजना ने उत्तर दिया, मैं तो नौकरी के साथ-साथ एक घरेलू महिला बनना चाहती हूँ। विवाह के उपरान्त हमारा एक छोटा सा घर संसार होगा जिसे मैं अपने हाथों से संवारूँगी। आई. ए. एस. की नौकरी में कार्य इस प्रकार का है कि उससे मेरा जीवन उद्‌देश्य पूरा नहीं होगा। अतः मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि मैं आई. ए. एस. के लिये प्रयत्न नहीं करूँगी।" अंजना ने आगे कहा, "पर आप जहाँ भी रहेगें, जिस नौकरी में रहेगें, मैं आपके साथ सहयोग करती रहूँगी। मेरा विचार है कि आई. ए. एस. नौकरी महिलाओं के लिए उत्तम नहीं है। आई. ए. एस. में प्रारम्भ के एस. डी ओ. से डी. एम. की पोस्ट तक पाँच-छः वर्ष बहुत कठिन बर्ष हैं, तथा इन स्थानों पर कार्य करना सभी के लिए अनिवार्य है। यदि यह न होता तो मैं अन्यथा सोच सकती थी। मैं चौ० चरणसिंह से सहमत हूँ कि महिलाएँ आई. ए. एस. के लिए उचित नहीं हैं।"

राजीव ने कहा, "यदि ऐसा ही होता तो हमारे देश की महिला प्रधान मन्त्री स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी इतनी सफल न होती। फिर कलक्टर का पद अस्वीकृत भी किया जा सकता है।"

अंजना ने कहा, "यह तो झमेले का काम है। डी. एम. को ही नहीं, एस. डी. एम. तथा ए. डी. एम. तक को भी अश्रु गैस, लाठी एवं बन्दूक चलाने का आदेश देना पड़ता है तथा कठिन-कठिन परिस्थितियों एवं स्थलों पर स्वयं जाना पड़ता है। वह रूचि मेरी नहीं है। मैं स्पष्ट रूप से अपनी कमी स्वीकार करती हूँ जो कई लोग करने से डरते हैं।"

वास्तव में आजकल के प्रतियोगितावादी संसार में लोग दौड़े जा रहे हैं। वे कभी आत्म विश्लेषण भी नहीं करते कि वे क्या चाहते हैं तथा उनकी क्या क्षमताएँ हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अन्तर्मन एवं बाह्य जीवन में एक चिरन्तन संघर्ष उत्पन्न हो जाता है जो आधुनिक जीवन में तनाव का मुख्य कारण है।

इस विचार-विमर्श में डूबे वे दोनों उस संध्या काफी दूर चले गये, समय निकल जाने पर ज्ञात हुआ कि उनकी जीवन-धारा पूर्ण निश्चित हो चुकी है।

राजीव ने विचार विमर्श के सारांश में कहा, "अच्छा, जैसी आपकी इच्छा मुझे स्वीकार है।"

राजीव ने पुस्तकों का सुन्दर संग्रह किया। अंजना ने उसके इस कार्य में यथासाध्य सहायता की। विज्ञान, गणित एवं इतिहास विषयों को उसने आई. ए. एस. में चुना। पर उसे इस बार विषय दुस्साध्य लगे क्योंकि वह छात्र जीवन की देहली से गृहस्थ जीवन के दिवास्वप्न देखने लगा था। दूसरे वह छात्र जीवन में चुने हुए ठोस अध्ययन करता था। "रट्टू तोते" एवं चुने हुए प्रश्न करने वाले विद्यार्थी भले ही क्षणिक एवं उच्चतम सफलता प्राप्त कर लें पर उनका भविष्य नौकरी प्राप्त करने के पूर्व मझदार में रहता है। भाग्य के जोर से ऐसे लोग आई. ए. एस. में भी सफलता उपलब्ध कर लेते हैं पर यह सफलता उनके जीवन का सदैव अंग नहीं हो सकती।

उसके लिए छात्र जीवन की ठोस पृष्ठभूमि एवं सभी वस्तुओं का अध्ययन चाहिए ।

इस अवस्था में राजीव चुने हुए प्रश्नों के अतिरिक्त कर ही क्या सकता था ?

प्रायः सभी ने इसी पथ का अनुगमन किया ।

पन्द्रह

शीत सिमटती जा रही थी एवं शनैः शनैः ग्रीष्म का आगमन हो रहा था। ग्रीष्म आने के पूर्व बसन्त आया । इसी दौरान आया वह शुभ दिन एवं शुभ पर्व, एक विराट आशा, उद्दीपन एवं उल्लास लिए जिसे सम्पूर्ण भारत में अपूर्व उत्साह से मनाते हैं। भला, भारत का एक छोटा-सा प्रतिबिम्ब यह प्रशिक्षण संस्थान होली के अतिरिक्त और कौन सा त्यौहार इस सार्वभौमिकता से मना सकता था। अतः पूरे पैमाने पर होली के उत्सव से आयोजन की तैयारियाँ हुई । इस आयोजन को सरकारी मान्यता भी प्राप्त हुई ।

होली की पूर्व संध्या में एक अशुभ घटना घटी । सुधा अपनी एक सहेली के साथ मेस जा रही थी कि कुन्डु ने आक्षेप किया, "क्यों सुधा ! इस बार होली क्या केवल करूणा के साथ ही मनायी जायेगी, हमारे साथ नहीं ।"

सुधा उस समय तो चुप रही पर इसके विरोध में उसने भोजन के उपरान्त रोते हुये सम्पूर्ण रिपोर्ट करूणा को दी। करूणा आग बबूला हो गया एवं उसका नायकत्व जाग उठा। वह तुरन्त कुन्डु के कमरे में गया एवं कुन्डु का कालर पकड़कर बोला, "साले ! तुम्हें मैं यही जमीन में मिला दूँगा । यदि साहस हो तो स्वयं लड़की को लेकर घूमो । दूसरों को देखकर क्यों जलते हो ?"

कुन्डु प्रत्युत्तर में करूणा को मारने वाला ही था कि उसके सहपाठी ने दोनों का बीच-बचाव कर दिया एवं करूणा से चले जाने का अनुरोध किया। करूणा के जाने पर कुण्डु बोला, "मैं पंजाबी हूँ। मैं तुम्हें एवं तुम्हारी कुड़ी को देख लूंगा।"

करूणा जैसे अनसुनी करके चला गया पर सुधा के सम्मुख जाकर उसने ऐसे आत्म प्रशंसा के तीर छोड़े जैसे कि वह विश्व-विजय करके लौटा है। यह समाचार कानाफूसी के माध्यम से सभी तक पहुँच गया। जहाँ सभी ने करूणा की बहादुरी की प्रशंसा की वहाँ कुण्डु की मनोवैज्ञानिक कुंठा की निन्दा की। इससे कुन्डु के "अहम्" को घोर धक्का लगा। कुन्डु ने रात्रि में बारह बजे सुधा के कमरे का दरवाजा खटखटाया एवं जैसे ही वह दरवाजा खोलने उठी, कुन्डु भाग गया। पर सुधा समझ गयी कि यह बदमाशी किसकी थी। प्रातः उठते ही यह सम्पूर्ण घटना राजीव ने सुनी एवं उसने करूणा एवं कुन्डु को अपने कमरे में बुलाकर दोनों का समझौता करा दिया ताकि होली का रंग भंग न हो। राजीव के सहपाठी श्री पांडेय जी ने समझौते का सिद्धान्त दिया, "भूल जाओ एवं क्षमा करो" यह संदेश लेकर वे एवं सभी होली के हुड़दंग में कूद पड़े एवं उस दिन के लिए फिलहाल सभी कुछ भूल गये। राजीव के नेतृत्व में भाँग डालकर बर्फी तैयार की गयी एवं मेवे, दूध डालकर भाँग की ठंडाई बनायी गयी। पांडेय जी ने अपने निरपेक्ष समुदाय को लेकर एक टंकी भर रंग तैयार किया।

सर्वप्रथम पाँडेय जी ने साथियों सहित राजीव को पकड़कर रंग भरी टंकी में डुबा दिया। किसी भी लड़के को न छोड़ा गया। कुन्डु का कुर्ता गले से चीर दिया इसके पश्चात् रंग में डुबाने का लगा रहा क्रम। लड़कियों को भी न छोड़ा गया कुछ लड़कियों ने अंजना को पकड़ कर डुबाया तो कुछ ने बन्दना को। लड़के पास ही में मौन दर्शक की भाँति खड़े रहे तथा सेना की द्वितीय पंक्ति की भाँति तैयार खड़े थे। स्वच्छन्दतापूर्वक गहरे हरे रंग आदि से एक दूसरे के चेहरों को रंगा गया एवं गिलास, बाल्टी तथा पिचकारी से

रंग की लगातार बौछार हो रही थी। लड़कियों ने लड़कों से अधिक चुस्त तरीके से लड़कियों की बागडोर सँभाली। ठीक दस बजे रंग से रंगी निर्देशक की कार आयी। सर्वप्रथम लड़कियों ने उनकी श्रीमती जी को विवशकर रंग की टंकी में डुबा दिया। निर्देशक की धर्मपत्नी अत्यन्त मोटी थी। अतः उन्हें लड़कियाँ टंकी के बाहर न निकाल सकी। लड़के धर्म संकट में पड़ गये कि कैसे उन्हें पकड़ कर निकाला जाये। अन्ततः लड़के और लड़कियों के मिलेजुले प्रयत्नों से उन्हें बाहर निकाला गया। तत्पश्चात् निर्देशक महाशय को भी टंकी में डुबा दिया गया एवं उनका बुरा हाल किया। सभी प्राध्यापकों, एवं कर्मचारियों ने इस कोलाहल में भाग लिया। इसके पश्चात् खाने के लिये बर्फी एवं पीने के लिए ठंडाई आयी। पूछताछ करने पर यह बताया गया कि इन दोनों चीजों में कोई भी मादकीय द्रव्य नहीं है। अतः लोगों ने दोनों चीजें जमकर खायी। ये दोनों चीजें काफी स्वादिष्ट तैयार की गयी थी एवं होली खेलने के कारण सभी की भूख भी बढ़ गयी थी इनके साथ महाराष्ट्र की प्रसिद्ध नमकीन भी थी। स्वभावतः कुछ लोग सीमा से अधिक खा गये।

इसके पश्चात् पंजाबी लड़कों ने भागड़ा नृत्य का प्रदर्शन किया। शेर सिंह ने लड़कों का तथा राजवंत ने लड़कियों का नेतृत्व किया। सभी साथ में नाचने लगे जैसे कि वे भागड़े में दक्ष हों। तत्पश्चात् बांसुरी वादन हुआ एवं कुछ "बुन्देली" फाग गीत सुनाये गये। सभी लोगों के शीर्षक पढ़कर सुनाये गये। शीर्षकों में पूरे छात्रावास जीवन की झलक थी पर नशे के प्रभाव में निर्देशक के सामने वह सब प्रकाशित हो गया। अंजना का शीर्षक था "मैं चुप रहूँगी" सुधा का शीर्षक मलयालम फिल्म के ऊपर था। "हरनाइट्स' राजीव का शीर्षक था "सत्यवान" जबकि करूणा को "राज बब्बर" का शीर्षक दिया गया। पांडेय जी "बर्नार्ड शॉ, कहलाकर ही खुश थे। सभी परस्पर गले मिल रहे थे पर लड़कियों ने आज लड़कों को हाथ मिलाने की साम्यवादी छूट दे रखी थी लज्जाशील लड़के-लड़कियों के लिए ऐसे उत्सव

जीवन स्मृति बन जाते हैं एवं ऐसे उत्सव नूतन अनुबंधनों के लिए भी याद किये जाते हैं। सभी समाजों में ऐसा उत्सव वर्ष में एक बार अवश्य आता है। जैसे बंगाल में दुर्गापूजा, पंजाब में बैसाखी, उड़ीसा में रथ-यात्रा एवं यूरोप-अमेरिका में समर। नई उम्र के लड़के-लड़कियाँ इन उत्सवों की पूरे वर्ष प्रतीक्षा में रहते हैं। इस प्रकार सामूहिक उत्सव समाप्त हुआ पर परस्पर होली मिलन चलता रहा।

जहाँ करूणा ने सुधा का प्रगाढ़ आलिंगन करके होली मनायी वहाँ राजीव ने अंजना की अबीर से मांग भर कर तथा मुख गुलाल से रंग कर होली मनायी। दोपहर के पश्चात् सुधा की अचानक तबियत खराब हो गयी। निर्देशक को फोन किया। बाद में कारण ज्ञात हुआ कि होली के सभी प्रसाद में भाँग मिश्रित थी। निर्देशक साहब को कारण समझते देर न लगी। क्योंकि उनकी धर्मपत्नी घर में चारपाई पर लेटकर उल्टी पल्टी बकवास कर रहीं थीं। अतः उन्होंने उसे गम्भीरतापूर्वक लेकर एक डाक्टर भेज दिया। डाक्टर ने सुधा को देख कर कहा, "इन्हें खटाई, दही, अचार, नीबू आदि खिला दीजिए। यह केवल नशे के कारण हुआ है।" पर सुधा की चिन्ता एवं बेवसी बढ़ती गयी। वह बोली, "डाक्टर साहब, मुझे आप इस बार ठीक कर दीजिए, यदि मैं मर गयी तो पापा-मम्मी और सभी लोग कहेंगे कि लड़की भाँग खाकर मर गयी।"

डाक्टर साहब ने सान्त्वना देते हुए कहा, "चिन्ता न कीजिए। आप दो-तीन घंटे में ठीक हो जायेंगी।"

अब करूणा के प्रेम की परीक्षा थी। करूणा ने मोटर साइकिल का सभी पेट्रोल खतम कर दिया एवं बन्द के दिन सभी आवश्यक वस्तुएँ जुगाड़कर डाली, फलतः मरीज भी स्वस्थ हो गया।

जहाँ एक ओर जोड़े होली का रसास्वादन पृथक रूप से कर रहे थे वहीं दूसरी ओर निरपेक्ष समुदाय कोलाहल के साथ होली का वास्तविक आनन्द ले रहा था। सभी एक दूसरे की खिंचाई में मग्न थे। केशवन दिल्ली में एक

समय रेखा के साथ पढ़ा था। अतः सभी ने उससे पूछा, "क्या रेखा तुम्हें आज पहचानेगी' तुम उससे विवाह का प्रस्ताव क्यों नहीं कर देते। तुम्हारा रेखा के चाहने वालों की पंक्ति में कौन सा नम्बर है? पांडेयजी ने बीच में टोककर कहा, "भाई मेरा तो उसकी क्यू में सौवां नम्बर है और मैं उससे ही खुश हूँ।"

हँसी के फव्वारे छूट गये पर केशवन बेचारा शर्मिन्दा हो गया। इसी बीच कुछ दूर खड़ी वन्दना एवं हेमलता की ओर सभी आकर्षित हुए। हेमलता केशवन की एक तरफी प्रेमिका थी। एवं शोभा पंजाबिनी लगती थी। विनोद ने पूछा, "ठंडाई कैसी बनी थी"? -

हेमलता ने टूटी फूटी पर मधुर हिन्दी में कहा, "ठीक है।" विनोद ने आगे कहा, "यही कारण है कि आजकल लड़कियाँ दूध पीकर खूब मुटा रही हैं।"

सभी फिर से अट्टहास मारकर हँसने लगे एवं लड़कियों को झेंपना पड़ा।

इस प्रकार होली समाप्त हो गयी पर होली की स्मृतियाँ सभी के हृदयों में सहृदयता एवं मधुरता का संचार कर गयी।

सोलह

कुछ अभ्यार्थी आई० ए० एस० परीक्षा की तैयारी में व्यस्त थे। संस्थान का प्रशासन सभी को प्रशिक्षण के विषय सिखाने के लिए भरपूर प्रयत्न कर रहा था पर प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण कार्य में मन नहीं लग रहा था। संस्थान में प्रशिक्षण कक्षाएँ केवल दो बजे तक होती थी अतः बाकी समय खाली-खाली ज्ञात होता था। प्रशिक्षणार्थियों को आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करने के अतिरिक्त चारा न था। शीत एवं ग्रीष्म की संध्या में

खेलकूद के कार्यक्रमों में वृद्धि होती जा रही थी। पंजाब के लोग हाँकी की ओर आकर्षित हो रहे थे, दक्षिण के लोग टैनिस एवं यू० पी० के लोग बैड मिन्टन में व्यस्त थे पर बंगाल के लोग फुटबाल लेकर अलग चले जाते थे। सुविधाएँ सभी उपलब्ध थीं पर उनका उपयोग करने वाले रुचि नहीं ले रहे थे। प्रशिक्षण संस्थानों में समय का पूर्ण सदुपयोग नहीं होता। शायद अधिक स्वतंत्रता देने के कारण संस्थान का उद्देश्य असफल हो जाता है। आजकल प्रशिक्षण संस्थानों को केवल नौकरी में प्रवेश के पूर्व दृष्टि परिवर्तन के लिए विराम-स्थल समझा जाता है। हमारे प्रशिक्षण संस्थानों के प्रति दृष्टि भंगिमा में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। देश के भावी कर्णधारों के सम्पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक विकास का दायित्व प्रशिक्षण संस्थानों को वहन करना पड़ेगा।

आजकल प्रशिक्षण संस्थानों के वातावरण में गम्भीरता का अभाव है। इस विचार के समर्थकों का कहना है कि नौकरी के पश्चात् सांस लेने का भी समय नहीं मिलेगा। इस प्रशिक्षण कालेज के अभ्यर्थी इस विचार के अनुयायी थे।

इस वातावरण में करूणा एवं सुधा की डेटिंग बढ़ती रही। वैसे, जैसे-जैसे प्रशिक्षण काल समाप्ति के पास आ रहा था, सभी युग्मों में प्रेम-भावना जोर पकड़ रही थी। करुणा एवं सुधा की प्रेम भावना चरम शिखर पर पहुँच रही थी। वे दोनों घन्टों करूणा के कमरे में बैठे बातें करते रहते थे।

एक दिन बैसाखी के काले मेघ आसमान में छाये हुए गर्जन कर रहे थे तथा बीच बीच में पानी के छोटें छोड़ रहे थे। करूणा एवं सुधा दोनों उस दिन बहुत खुश थे। करूणा ने सुधा से छेड़खानी आरम्भ की एवं वह बोला, "तुम तो आज कालिदास की शकुन्तला लग रही हो।" सुधा ने कटाक्ष किया एवं उत्तर में वह बोली, "कालिदास नहीं दुष्यन्त की।"

करुणा ने इस पर उसे बाहुपाश में बांध लिया एवं बोला, "आओ, "मैं तुम्हें बताता हूँ।"

करूणा ने तुरन्त कमरे की सिटकनी बन्द कर दी। दोनों की सांसे चलने लगी एवं आवाज अटपटी सी हो गई। पल भर में वे दोनों एक दूसरे में समा गये। वे क्षण भर के लिए परियों वाले संसार में चले गये। पाँच मिनट के पश्चात् ही दोनों को भूल का एहसास हुआ एवं वे दोनों एक दूसरे से अलग हो गये। पर एक काल गुजर चुका था।

सुधा ने दबी आवाज में कहा, "हमें विवाह के पूर्व ऐसा नहीं करना चाहिए था।

करूणा ने कहा, "हम एक दूसरे के हो चुके हैं अतः इतनी दूरी क्यों? अभी पता नहीं कि घर जाने पर कितने दिनों बाद हम दोनों मिलेगें। कितनी बाधाओं का विवाह के पूर्ण सामना करना पड़ेगा क्योंकि हमारे माता-पिता ने अभी "हाँ" नहीं की है।

छात्रावास के एक लड़के की दृष्टि बन्द कमरे पर पड़ी। यह प्रथम दिन था जब कि करुणा का कमरा पूर्णरूप से बन्द देखा गया। छात्रावास के नियमानुसार कमरे का दरवाजा अटका कर कमरे में किसी से भी वार्तालाप एवं मेल जोल किया जा सकता था। सुधा ने उठकर दरवाजा खोलकर अटका दिया। सुधा ने कहा, "अब जैसे भी हो तुम्हें मुझसे विवाह करना ही पड़ेगा नहीं तो मैं विष खा लूंगी।"

करुणा ने सुधा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "तुम इतनो पढ़ी लिखो होकर कैसी पागलपन की बात कर रही हो।"

सुधा ने कहा, "पढ़ी लिखी हूँ तो क्या हुआ, मैं प्रथम एक लड़को हूँ एवं एक लड़की की इज्जत लूट जाने के पश्चात् उसके पास कुछ नहीं बाकी रहता।"

करुणा ने वायदा करते हुए कहा, "मैं तुम्हें शक की थोड़ी भी गुंजाइश न दूँगा। यह कार्य तुरन्त सम्पन्न होगा।"

अंजना ने भी बिरह-रात्रि में अति प्रेम निवेदन किया एवं स्टेशन पर जाकर राजीव को भावभीनी विदाई दी।

बाकी सभी लोग परीक्षा के लिए अलग-अलग केंद्रों पर चले गये पर संस्थान में उनका मन रखा रहा। जोड़े प्रायः बिखर गये थे। एवं संस्थान का जीवन सुनसान एवं रेगिस्तान हो गया था।

छात्रावास में बाकी लोगों का ध्यान प्रतिदिन केवल आने वाली डाक पर रहता था तथा कक्षाओं में बैठकर केवल विरह पत्र लिखे जाते थे।

अंजना को भी राजीव के अनेक पत्र प्राप्त हुए जिससे स्पष्ट होता था कि राजीव का मन परीक्षा में कम नागपुर में अन्जना में अधिक था। पर उत्तर में अन्जना सदैव राजीव को प्रेरणा दायक पत्र लिखती रही जैसे राजपूताने में विरांगनायें पति के कर्त्तव्य से विपरीत होने पर अपना सिर काटकर भी भेज देती थीं। करुणा एवं सुधा का भी पत्र-व्यवहार चलता रहा। सभी ने भारी हृदय से परीक्षा दी।

सत्रह

लगभग एक मास में परीक्षा समाप्त हुई। परीक्षा समाप्त होने के पश्चात् तुरन्त ही संस्थान के अधिवेशन का अन्तिम चरण आरम्भ हुआ। सभी परीक्षा से लौटकर आ गये एवं पुनर्मिलन के आनन्द में समा गये। संस्थान के इस वर्ष के समाप्ति उत्सव पर केंद्रीय राज्य वित्त मन्त्री महाशय आये एवं उत्सव बड़े पैमाने पर सज-धज से मनाया गया। मंत्री महाशय बंग प्रान्त निवासी थे अतः उन्हें खुश करने के लिये जादू प्रदर्शन का आयोजन किया गया एवं विभिन्न प्रकार की मछली की व्यवस्था हुई। जिस प्रशिक्षणार्थी ने जादू दिखाया उससे मंत्री महाशय अति प्रसन्न हुए एवं जाते समय कह गये कि मुझसे दिल्ली में मिलना। कहते हैं कि वह बाद में फिर एक बार

स्थानान्तरण के लिए मंत्री महाशय से मिला और मंत्री महाशय ने चौबीस घंटे में उसका एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में स्थानान्तरण कर दिया।

उत्सव की लगभग समाप्ति पर निर्देशक साहब का अन्तिम भाषण था तथा संस्थान के जीवन में इसका सर्वोपरि स्थान था क्योंकि आने वाले प्रशिक्षणार्थियों के लिए यह पथ प्रदर्शक था । निर्देशक साहब ने भी मंत्री महाशय के समक्ष संस्थान से निकल भागने के चक्कर में पांडित्य प्रदर्शन में कमी न होने दी।

निर्देशक साहब ने कहा, "मैंने संस्थान में शीशा लाकर रखा था एवं एक वजन लेने की मशीन । मेरी आशा थी कि सभी प्रशिक्षणार्थी यहाँ आकर जीवन की वह ताजगी कायम रखेगें जो कि आजकल अनावश्यक रूप से नौकरी पेशे वाले लोगों के चेहरों से लुप्त होती जा रही है। किन्तु मैंने देखा कि कुछ पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थी जहाँ गृहस्थ जीवन की ओर मुखी हो गये तो कुछ लोग अभी से अपने कैरियर की बड़ी-बड़ी योजनायें बनाने लगे। वजन की मशीन की तो आप लोगों ने पूरी हँसी उड़ायी क्योंकि सामान्यतः खराब भोजन की शिकायत के बाद भी सभी का वजन यहां बढ़ गया है। महिलाएँ उस ओर भी अग्रसर रहीं। उन्हें तो मेस में खाना खाने तक जाने में कष्ट होता था मेस के निरीक्षण की तो बहुत दूर की बात। हो सकता है इसका कारण भी स्त्री सुलभ लज्जा हो। यदि आप लोगों की यही उन्नति की गति रही तो आप समाज के जोंक हो जायेगें, सेवक नहीं।"

नौकरी जीवन के गम्भीर पक्ष पर बोलते हुए उन्होंने आगे कहा, "पारकिन्सन का नियम आज भी नौकरशाही के लिए प्रयोग होता है। पर भारत जैसे मुल्कों में भ्रष्टाचार का सांप सभी को विषाक्त कर देता है। आजकल चौकीदार भी भ्रष्ट माध्यम से धन अर्जन करते हैं जो कि एक समय कल्पना के बाहर था। इस संक्रामक रोग से आप लोग दूर रहना। मेरे नौकरी जीवन में दो वर्ष और बाकी हैं और मैंने नब्बे प्रतिशत भ्रष्ट कर्मचारियों एवं अफसरों को देखा है कि मधुमेह, रक्तचाप अथवा हृदय की बीमारी के शिकार हो जाते

हैं उनका पारिवारिक जीवन दुखमय होता है एवं भगवान भी उन्हें या तो सन्तान नहीं देता अथवा संतान सुख नहीं देता है। बुरे माध्यमों से अर्जित धन बुरे कार्यों में ही खर्च होता है। वह काला धन उनके बच्चे ही उपयोग करते हैं तथा स्वयं की चरित्र एवं स्वास्थ हानि करते हैं।

दूसरी मेरी सलाह है कि सदैव अपने से बड़े अफसर के सामने नम्रता का व्यवहार करो। पर पुलिस की भाँति हाँ श्री हाँ "यस सर" केवल करने से काम नहीं चलेगा कुछ काम भी करना है। सदैव नौकरी में कागज देखकर उत्तर दो। तुम्हें याद रखना चाहिये कि छत पर खड़े लोग तुम पर थूक सकते हैं, तुम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। विनम्रता के साथ थोड़ी मक्खन बाजी की भी आवश्यकता है, तृतीय मेरा सन्देश है कि तुम लोग 'योगः कर्मसु कौशलम्" का पालन करो तथा सरकारी कोष की बृद्धि में दिन रात लगे रहो। कोष वृद्धि के लिए "साम दाम दंड भेद" का भी उपयोग करो। इसके पश्चात् निर्देशक साहब ने अभ्यर्थियों से प्रश्न करने के लिए आहवाहन किया। राजीव ने उत्सुकता पूर्वक पूछा "सर, मैं एक वर्ष से सुन रहा हूँ कि सरकार ने ऐसा आदेश दिया, सरकार ने वैसा आदेश दिया, आखिर में सरकार क्या चीज है तथा यह कहाँ बैठती है।" निर्देशक महाशय पशो-पेश में पड़ गये एवं मन में क्रोध लिए बोले, "यह सरकार नार्थ ब्लाक में है तथा प्रधान मंत्री साहिब बैठती हैं।" राजीव आगे कुछ जिज्ञासा करने वाला था कि अन्य प्राध्यापको ने इशारा करके उसे बैठा दिया। समाप्ति भाषण मंत्री महाशय का था। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा, "आप यहाँ से देश के कोने-कोने में जाकर देश की सेवा करो। मेरी एवं सरकार की शुभकामनाएँ आप लोगों के साथ है।" प्रशिक्षणार्थियों की ओर से सचिव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संस्थान के अधिवेशन की समाप्ति की घोषणा कर दी गयी एवं सभी प्रशिक्षणार्थियों को सरकार के हवाले दे दिया गया।

अठारह

दूसरे दिन सभो लोगों के स्थानान्तरण के सरकारी आदेश आ गये। राजीव एवं करूणा को बम्बई जाना पड़ा जबकि अंजना का स्थानान्तरण लखनऊ एवं सुधा का चंडीगढ़ हो गया। प्राय: सभी जोड़े बिखर गये। लड़कियाँ प्राय: सभी रोयी पर सुधा उस दिन सभालें न सभल रही थी एवं कमरे में पड़ी चीख-चीख कर रो रही थी, फिर करूणा के कुछ गुप्त वायदा करने पर ही वह चुप हुई। प्राय: सभी युग्मों ने दोनों के लिए एक स्थान की इच्छा प्रकट की थी किन्तु कानून में विवाह न होने के कारण सरकारी दृष्टि से उन्हें एक स्थान पर न दिया जा सका। पर कुछ दिनों के पश्चात् ही विवाह सम्पन्न होने पर दोनों को एक स्थान पर रखने के लिए अनेक निरपराध लोगों के स्थानान्तरण भले ही हो गये। यह है सरकारी तंत्र जो है भावहोन एवं संवेदनहीन। राष्ट्र की प्रधान मंत्री के इस कथन के बाबजूद "नियम व्यक्ति के लिए है न कि व्यक्ति नियम के लिए।" नियमो का बोझा लोग उठाये चले जा रहे हैं। बुद्धिमान मक्खन बाजों एवं पहुँच वालों को उत्तम स्थान मिले। अधिकांश लोगों का सरकारी तंत्र से प्रथम परिचय दुख पूर्ण था। सभी नागपुर में आखिरी रात्रि मनाने के लिए शहर के प्रसिद्ध होटलों एवं रेस्टोरेंट में गये एवं रात भर आपस में आनन्द भोग एवं कोलाहल करते रहे। आखिर विरह में ही आनंद की पराकाष्ठा हो सकती है। रात्रि में राजीव ने शांत संध्या मनायी क्योंकि उसे वास्तव में विरह का शोक था। वह अंजना से उसके कमरे में अकेले में मिलने गया। राजीव के सामने अंजना वियोग की कल्पना करके खूब रोयी एवं कहने लगी "हमें शीघ्राति शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए, मुझे उ० प्र० से कोई लगाव नहीं है। जहाँ आप जायेगें वहाँ जाने को मैं तैयार हूँ।"

राजीव ने कहा, "विवाह के पश्चात् कोशिश करके मैं ही लखनऊ आ जाऊगां उससे हम दोनों वहुत खुश रहेगें। अंजना ने तुरंत कहा, "पर बम्बई दोनों को मिलना आसान है। आपके हाँ करने से मैं बम्बई के स्थानान्तरण के लिए प्रार्थना पत्र दे सकती हूँ क्योंकि वहाँ मकान न मिलने के कारण कोई जाना ही नहीं चाहता है।" राजीव ने कहा, "मैं स्वयं यू० पी० आना चाहता हूँ। अतः मैं लिखूगां तब उपर्युक्त समय पर तुम प्रार्थना पत्र देना।" इस प्रकार एक बिस्तर पर बैठे अंजना एवं राजीव उस रात घंटों बाते करते रहे, अन्त में राजीव से न रहा गया उसने प्रस्ताव किया, "आज तक मैंने सांसारिक रूप में प्रेम का प्रस्ताव तुमसे कभी नहीं किया पर आज मुझसे नहीं सहा जा रहा है। आज तुम मुझे थोड़ी सी स्वतंत्रता दे दो।" अंजना ने मुस्कराकर अपनी प्रथम शर्त दोहरायी, "विवाह के पूर्व कुछ भी नहीं, एवं विवाह के पश्चात् कुछ भी मना नहीं।" राजीव ने इस दुर्बल 'ना" को मौन सहमति समझ लिया एवं कामाग्नि से उद्वेलित होकर अंजना को अपने बाहुपाश में समेट लिया एवं अपने आलिंगन एवं चुम्बनों से कृतार्थ कर दिया। अंजना जैसी साध्वी महिला "मौन साधक" की भाँति चुपचाप रसपान करती रही पर उसने राजीव को इससे आगे बढ़ने से रोक दिया। राजीव भी उसकी आँखों की भाषा पढ़कर तुरन्त ही दूर हो गया एवं शीघ्र ही दोनों एक दूसरे से "बाई" या "अलविदा" कहकर सोने चले गये।

समयाभाव के कारण सभी ने शीघ्रता में बिस्तर बांधे। संस्थान के प्रति प्रेम जैसे एक दिन में ही तिरोहित हो गया हो। सभी लोग आपस में आनन्द एवं विरह मिश्रित विदाइयां लेकर गन्तव्य की ओर चले गये। बंगाली एवं दक्षिण भारतीय अभ्यर्थी सबसे अधिक प्रसन्न थे क्योंकि उनकी संख्या कम होने के कारण उन्हें क्रमशः कलकत्ते, बंगलौर एवं मद्रास में स्थान मिल गये।

उन्नीस

सभी नागपुर को छोड़कर देश के विभिन्न भागों में चले गये। नागपुर का यह छोटा सा परिवार बिखर कर एक बड़ा शक्तिशाली यंत्र बना। अपने अपने स्थान पर स्थित प्रत्येक अभ्यर्थी एक विशाल स्वतन्त्र शक्ति एवं क्षमता का केन्द्र बना। जग्गू संस्थान के मेस में पन्द्रह वर्ष से नौकरी करता है जब उसे ज्ञात होता कि यहाँ से निकले लोग' बहुत बड़े साहब है, तो वह आश्चर्य से कहता, "साहब लोग यहाँ से जाकर क्या करेंगे? यहाँ तो वे लोग कालेजी लड़के लड़कियों की भांति खेलते कूदते थे?" बेचारे जग्गू को उन लोगों के जीवन के गम्भीर पक्ष में झांकने का कहाँ अवसर मिला? वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उनके यहाँ तक पहुँचने में उनके पूर्व विद्यार्थी जीवन के विशाल कठिन परिश्रम का हाथ है।

प्रायः सभी लोग अपने-अपने सोमित कार्यक्षेत्र के राजा बने। कुछ दिनों तक संस्थान की स्मृतियाँ ताजा रही एवं परस्पर एक ही नौकरी की भावना से तेज पत्र व्यवहार चला पर शनैः शनैः नये वातावरण में नया संग हुआ। नये परिवेश के साथ नये मित्रगण बने एवं धीरे-धीरे एक ही नौकरी भावना का ह्रास होता गया। पर पत्र-व्यवहार उन लोगों के मध्य जारी रहा जो या तो एक दूसरे को स्कूल या विश्वविद्यालय से जानते थे अथवा प्रशिक्षण संस्थान में परस्पर इतने नजदीकी हो गये थे कि उनके जीवन में एंक दूसरे के बिना उनमें स्वयं के अस्तित्व की भी कल्पना नहीं की जा सकती थी अर्थात् जिसे दूसरे नाम से "जीवन साथी" भी पुकारते हैं।

जो लोग बम्बई, कलकत्ते एवं मद्रास गये, वे कुछ दिनों तक छात्रावास के वातावरण में ही रहे क्योंकि आवास के अभाव में सरकार की ओर से दिये

एक-एक कमरे में पाँच-छः अफसर रहते थे। पिछड़े स्थानों पर जाने वालों का अत्यन्त सम्मान हुआ। नौकरशाही की बची हुई प्रतिष्ठा पिछड़े स्थानों पर या मध्य वर्ग में रह गयी है।

सभी के चेहरों पर अभी नौकरी को गरिमा आ नही पायी थी कि आई० ए० एस० की लिखित परीक्षा का परिणाम आया। राजीव, करूणा एवं सुधा के साथ अन्य कई लोग प्रारम्भिक परिणाम में सफल हुए। कई लोगों ने यह समाचार गुप्त रखा क्योंकि सभी कार्यालियों में कर्मचारी लोग अफसरों का आज्ञापालन बन्द कर देते हैं यदि वे जान सके कि या तो अमुक अफसर का तबादला होने वाला है अथवा यह नौकरी छोड़ कर जा रहा है। कुछ दिनों में साक्षात्कार की तारीख भी आ गयी। नौकरी करते-करते अध्ययन का समय निकालना बहुत मुश्किल है फिर विभिन्न भोजों एवं घूमने से फुर्सत कहाँ? साक्षातकार बोर्ड के महान विशेषज्ञों ने पूर्ण से नौकरी करने वाले अभ्यर्थियों की इस दुर्बलता को ध्यान में रखकर प्रश्न किए, पर अधिकांश लोग उन सहज प्रश्नों का भी उत्तर न दे पाये। सभी भविष्य के सहारे परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे।

एक दिन परीक्षा परिणाम प्रकाशित हुआ राजीव, करूणा एवं सुधा असफल घोषित हो गये, कुछ मौन साधक फिर सफलता की पंक्ति में बैठ गये। जाने-माने हिन्दुस्तानी श्री वाजपेयी जी भी इस बार आई० ए० एस० में सट लिए। सफलता एवं असफलता के मिश्रित समाचार पूरे समूह में पहुँच गये। पांडेय जी ने अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा, —"प्यार एवं ज्ञान साधना एक साथ नहीं चल सकती। प्यार के साथ जो चलती है वह है परीक्षा में तुक्केबाजी अर्थात एटम गैस पेपर की सफलता। वास्तव में योगियों को सफलता मिली। आई० ए० एस० को परीक्षा आज भी हमारे देश में न्याय एवं ईमानदारी की प्रतीक है।"

फिर भी पांडेयजी ने राजीव को एक सांत्वना पत्र दिया एवं अप्रत्यक्ष रूप से अंजना के साथ गृहस्थ जीवन में प्रवेश की सलाह दी। अंजना ने राजीव को

लिखा, "आप असफलता पर बिल्कुल ही चिन्तित न होइये। हमारे गृहस्थ जीवन के लिए यह शायद भगवान का निर्णय उत्तम था। अब हम सदैव एक स्थान पर रहेंगे तथा आप भी परिवार में कार्यालय के पश्चात् अधिक समय दे सकेगें।"

करुणा ने सुधा को लिखा, "तुम इस परिणाम से बिलकुल हो विचलित न होना। अपने आगे का कार्यक्रम मुझे लिखो।"

करूणा प्रेम में भी भौतिकवादी था। अतः उसके पत्रों में स्पष्ट किसी वायदे या सुस्पष्ट विचार का प्रकाशन नहीं होता था।

दूसरी ओर सुधा अति भावुक थी। उसने लिखा, —"मैं तो अब तुम्हारे चिरन्तन साथ की प्रतीक्षा कर रही हूँ। तुम लड़के हो। तुम्हारी ओर से ही मैं नेतृत्व की आशा करती हूँ।"

शनैः शनैः करूणा के पत्रों की संख्या का प्रति मास औसत कम हो रहा था। अब आठ-दस पत्रों के स्थान पर उसके सुधा के पास केवल तीन चार पत्र ही आते थे।

आयकर विभाग से सम्बन्धित चमचों ने असफल अफसरों के दुःख दूर करने में अति सहायता की। वे लोग कहते थे, "सर, इससे अच्छा कोई विभाग हमारे देश में नहीं है। आप बेकार की चिन्ता करते हैं।"

करूणा के पिता जी अभी भो उसके उस विवाह के कड़े विरोधी थे तथा उन्होंने करूणा का विवाह उसी विभाग के एवं अपनी जाति के एक उच्च अफसर की लड़की से लगभग तय कर दिया था। एक दिन पिता जी का पत्र पढ़कर करूणा ने अति दुःख में लिखा—

प्रिय सुधा, "मैं प्रयत्न कर रहा हूँ पर पिता जी की इच्छा इसके विपरीत है" सुधा बुद्धिमान हो गयी थी एवं उसने वह मामला अपने घर में किसी को भी नहीं बताया था क्योंकि उसे विश्वास था कि करूणा की ओर से हाँ मिलने पर वह रो-रो कर अपने माता-पिता से आज्ञा ले लेगी। फिर उसकी बड़ी बहन तो यह व्यापार जानती थी एवं उसने भी ऐसा ही किया था। कुछ दिनों

पश्चात करूणा के पिताजी बम्बई आये एवं उन्होंने कहा, मैं इस विवाह के लिए कदापि तैयार नहीं हो सकता। मैंने उस लड़की के विषय में अच्छा नहीं सुना है। वह हमारी जाति के बाहर भी है। फिर भी तुम इलाहाबाद एक दिन आ कर मां से पूरी बात कर सकते हो।"

करूणा छुट्टी में घर पर आया। प्रथम दिन अचानक ही उसे घर पर ही वह लड़की दिखा दी। करूणा लड़की की चंचलता, सुन्दरता एवं स्मार्टनेस देखकर मुग्ध हो गया। वह क्षणभर के लिए विस्मित हो गया कि संस्थान के बाहर संसार कितना विस्तृत एवं सुन्दर है। उसने सोचा, "हम कूपमडूंक की भांति केवल नागपुर की बातें सोचते हैं। इस लड़की में क्या कमी है ? यह सुधा से दस गुनी सुन्दर है, इसकी उम्र भी कम है, घरेलू है, पढ़ी लिखी है एवं तेज भी है। जीवन इसके साथ सुख शांति से कट जायेगा फिर मुझे आमदनी की क्या कमी है ?"

इस विचारधारा को अधिक बल माँ से मिला। करूणा की मां ने कहा, "तुम्हें इतना पढ़ने-लिखने के बाद भी यदि साथ-साथ रहने का सुख भी न मिले तो विवाह का क्या अर्थ ? चलो मैंने समय के परिवर्तन के कारण खाने के सुख की बात त्याग दी है पर बच्चों का क्या होगा ? मैं तो तुम्हारे साथ कभी नही रह सकूंगी।"

करूणा माँ को बहुत स्नेह करता था। अतः इलाहाबाद से बम्बई तक पूरी यात्रा में परेशान रहा। बम्बई पहुँच कर राजीव से उसने सलाह ली। राजीव ने स्पष्ट कहा, "भई, मुझे तो ज्ञात नहीं कि किस सीमा तक तुम्हारे प्रेम सम्बन्ध हैं पर मैं परिवार के इतने विरोध में नहीं जा सकता। इसलिए मैंने तो अपनी जाति की लड़की देखी है। फिर सुधा के विषय में सभी कहते हैं कि वह बहुत घमंडी है।" इससे करूणा के पुरुषत्व के अहम् को चोट लगी। वह कराहता रहा पर चोट सहन न कर सका। इस दर्द से निकली उसकी यह सुस्पष्ट विचारधारा—"कुछ भी हो। मैं सुधा से कभी भी विवाह न करूँगा।"

उसने इसके पश्चात् सुधा को पत्र भी लिखना बन्द कर दिया। एक

पंजाब का लड़का छुट्टी में घर गया एवं उसके द्वारा करूणा के प्रस्तावित विवाह का समाचार उसके कानों में पड़ा। सुधा समझ गयी कि अब विवाह होना दुस्सहाय कार्य है।

सुधा को बार-बार हृदय से विश्वास न हो रहा था अतः उसने पूर्ण क्षमता से ट्रंक काल मिला कर करूणा से विवाह के सम्बन्ध में बात की। उसके साथ वार्तालाप के पश्चात् सुधा आश्वस्त हो गयी कि करूणा उससे विवाह नहीं करेगा। वह फोन करने के तुरन्त पश्चात ही उस दिन कार्यालय से वापस आ गयी एवं अपने कमरे को बन्द करके घंटों रोती रही। माँ से उसने कह दिया, "मेरी तबियत आज खराब है।"

इसके पश्चात् उसने सभी प्रेम पत्र फाड़ दिये एवं करूणा से भी लिखित अनुरोध किया कि यदि वह विचार न परिवर्तित कर सके तो कम से कम उसके सभी पत्र जला दे। अब करूणा के हृदय से सुधा निकल चुकी थी एवं नयी लड़की की सुन्दरता बार-बार मानस-पटल पर आ रही थी। अतः करूणा ने ऐसा न किया क्योंकि उसे सुधा से भय था क्योंकि वह एक अफसर थी एवं उसके विरूद्ध अदालतों में जा सकती थी। पर करूणा नही जानता था कि लड़कियाँ लड़कों की भाँति प्रेम में मतलबी नहीं होतीं। वे साधारणतया अपने प्रेमी से प्रतिकार की भावना नहीं रखती हैं क्योंकि वे मुख्यतः प्रेम-व्यापार में अपराधी की भाँति स्वयं की भूल स्वीकार करती हैं। सुधा ने बड़ी बहन से मिलने पर संकेत दे दिया कि वह किसी से भी अब विवाह करने को तैयार है एवं यह बात उसके माता-पिता तक शीघ्र ही पहुँच गयी।

इधर अंजना सुधा की विफलता का समाचार सुनकर व्यग्र हो उठी एवं उसने राजीव को लिखा—

प्रिय राजीव,

तुम्हें परीक्षा के परिणाम के विषय में सभी कुछ भूलकर शीघ्र भावी पथ निर्धारित करना चाहिए। मैं सुनील एवं कामिनी के विवाह

में मुरादाबाद जा रही हूँ। अच्छा हो तुम भी आओ जिससे सभी बातें निश्चित हो जायेंगी।

कोटिश : शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारी अपनी,

अन्जना

राजीव ने शीघ्र आरक्षण एवं छुट्टी की व्यवस्था करके अपने सहकर्मी सुनील एवं कामिनी के विवाह में जाने का निश्चित कार्यक्रम बनाया। निश्चित तिथि पर धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह की मुख्य रस्म के पश्चात राजीव एवं अंजना धर्मशाला के पृथक एक कमरे में बैठे और जीवन का गम्भीरता पूर्वक विश्लेषण करते रहे।

राजीव के परम मित्र विनोद ने अवसर पाकर कहा – "राजीव! तुम्हें प्रथम तो ऐसी गंभीर भावुक एवं कर्तव्यपरायण लड़की से प्रेम नहीं करना चाहिए। यदि किया है तो विवाह करके उस प्रेम को निभाना चाहिए।"

आखिरी मुलाकात के समय एकान्त में अंजना ने रोते हुए कहा, "राजीव, अब बहुत हो चुका है। मुझसे अब तुम्हारा विरह सहन नहीं होता है। अकेले नौकरी करने में असुरक्षा अनुभूत होती है। हमें अगले मास में ही विवाह कर लेना चाहिए।

राजीव ने काफी मानसिक उथल-पुथल के पश्चात् तय करके कहा, "मेरी आई. ए. एस. में असफलता एक दृष्टि से उत्तम ही रही, नहीं तो शायद मेरे पिता जी इस विवाह के लिए तैयार न होते। भगवान जो करता है अच्छा ही करता है।"

अंजना ने उत्तर दिया, "मैं तो मौलिक रूप से नौकरी पेशे वाली महिला नहीं हूँ। कभी भी और कितने ही दिनों की छुट्टी ले सकती हूँ।"

राजीव ने प्रश्न किया "अगले मास तुम्हें कौन तारीख विवाह के लिए ठीक रहेगी?" दोनों की सहमति से विवाह का शुभ दिन तय होगा एवं अंजना ने कहा, "मेरी मम्मी इस विवाह के लिए पूर्णतः तैयार है। मैं उससे आपके पिता जी के साथ औपचारिक रूप से पत्र-व्यवहार करने को कहूँगी।"

दोनों इस बार गम्भीरतापूर्वक पृथक हुए पर दोनों के हृदयों में अपार प्रेम उमड़ रहा था। राजीव ने अपने सभी कार्यक्रम निरस्त कर दिये एवं विवाह के लिए एक मास का अवकाश बढ़ा दिया। वह वहाँ से निश्चिन्त होकर सीधा इलाहाबाद गया।

घर पहुँचकर उसने अपने पिता जी से प्रस्ताव किया, "पिताजी, अब तो कोई असुविधा नहीं है। यदि आप विवाह के लिए आज्ञा दे दें तो मैं अगले मास विवाह कर सकता हूँ। मैंने अंजना से सुनील के विवाह में बात की थी एवं तदनुसार छुट्टी भी ले ली है।"

राजीव के पिताजी को स्पष्ट हो गया कि अब लड़के की इच्छा पर नियन्त्रण लगाना ठीक नहीं होगा। इसी बीच अंजना की मां का औपचारिक रूप से अनुरोध-पत्र भी आ गया। उसी रात्रि को घर के सभी सदस्यों की बैठक में यह प्रस्ताव सर्वसम्मत से पारित हो गया। राजीव के पिता जी ने राजीव से कहा, "तुम एक कोने में बैठो। मैं समस्त विवाह का आयोजन करता हूँ।

विवाह का आयोजन लखनऊ से हुआ क्योंकि वहाँ पर अंजना के कार्यालय के लोग थे।

निमन्त्रण पत्र छप गये एवं निश्चित तिथि के अनुसार सभी तैयारियाँ पूर्ण हो गयी।

बीस

अंजना एवं राजीव का निश्चित तिथि पर विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह बड़े धूमधाम से एवं सनातन हिन्दू विधि से आयोजित हुआ। राजीव के पिता जी ने सुन्दर बारात की व्यवस्था की। राजीव एवं अंजना के सभी पास के

सहपाठी सम्मिलित हुए एवं अनेक विभागीय अफसर गण आये। लड़की के दरवाजे पर लगभग अस्सी कारें खड़ी थीं। दस पन्द्रह हजार की तो भेंटें ही आयीं। विवाह सुन्दर रीति से सम्पन्न हुआ। सभी प्रसन्न थे। बहू, वर एवं बारात को लेकर राजीव के पिताजी लखनऊ से इलाहाबाद लौट आये। अंजना का घर की लक्ष्मी की भाँति ससुराल में स्वागत हुआ। सभी लोग भूल गये कि यह एक प्रेम विवाह था। तीन दिन पश्चात् वे दोनों हनीमून मनाने के लिए आसाम की राजधानी शिलांग हवाई जहाज से गये।

शिलांग में तीन स्टार होटल के एक कमरे में वे दिन रात रहते थे एवं रात्रि में संसार की उन गहराइयों में खो जाते थे जिसे अन्यथा सामाजिक दृष्टि से एक कुकर्म माना जाता है, पर सात फेरों के बाद उसी को धर्म की संज्ञा दी जाती है जिसके आधार पर इस ब्रह्मांड की रचना होती है। हनीमून का समय स्वर्णिम समय था एवं वे पूर्ण आनन्द के साथ इसमें रसास्वादन करते रहे।

वे दिन में प्राकृतिक सौन्दर्य को खोज में बाग बगीचों एवं समीप में प्राकृतिक स्थानों की ओर सैर करने निकल जाते थे एवं सायंकाल किसी झील के किनारे या किसी होटल या रेस्टोरेंट में अथवा किसी सिनेमा हॉल में व्यतीत करते थे। राजीव ने एक रात अंजना से पूछा, "क्या तुम्हें हमारे प्रेम की सभी बातें एवं घटनाएँ स्मरण हैं ?" अंजना ने कहा, "चूंकि इस प्रेम ने हमें सदा के लिए जीवन-साथी बना दिया है, मैं तो वे सब बातें मरते दम तक भी नहीं भूल सकती हूँ।"

"वे दोनों उन यादगारों में प्रतिदिन घंटों खो जाते थे तथा उन्हें मजाक में दोहराते भी थे क्योंकि उन घटनाओं में काफी लड़कपन था एवं स्वर का अन्तर था। राजीव ने अंजना से पूछा, "करुणा एवं सुधा के सम्बन्धों में तुम्हारी क्या राय है ?"

अंजना ने स्पष्ट कहा, "मैं सुधा को अकेले में बहुत समझाती थी पर वह आधुनिका है। "खाओ पीओ मौज उड़ाओ" उसके जीवन का उद्देश्य है।"

राजीव ने करुणामय स्वर में कहा, "ईश्वर करे वह भी कहीं ठिकाने लग जाये। उसके बाद वह महान पति भक्त रहेगी।"

अंजना ने गम्भीरता से कहा, "यदि उसे पति पुरानी बातों को भूलने वाला मिल गया।"

राजीव ने कहा, "अब तो करुणा का भी विवाह हो गया है। सुधा को अब सभी कुछ भूलकर नया जीवन आरम्भ करना चाहिए। उसे नयी मित्रता होने पर भविष्य में तुरन्त विवाह का प्रस्ताव करके विधिवत विवाह कर लेना चाहिए क्योंकि अन्ततोगत्वा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में उत्सुकता ही आकर्षण का कारण है। यदि उत्सुकता एवं जिज्ञासा शारीरिक संसर्ग के माध्यम से समाप्त हो जाये तो दोनों में आकर्षण समाप्त हो जाता है फिर केवल कर्तव्य भावना या सम्बन्धों की मध्यस्थता के बल पर ही आकर्षण पनप सकता है जो बहुत कम लोगों में होता है।" अंजना ने मुस्कराकर प्रश्न किया, "इसका अर्थ यह है कि आपके लिए मुझमें आकर्षण समाप्त हो गया है।"

राजीव ने स्पष्ट किया और कहा, "विवाह की बात अन्य है। विवाह के पश्चात् जीवन ही दूसरा आरम्भ होता है जिसमें प्रथम एक वर्ष तक आकर्षण चोटी पर रहता है फिर क्रम से घटता है तथा फिर बढ़ता है। प्रेम के पतन की स्थिति में शिशु उपलब्धि प्रेम में अतिवृद्धि करती है तथा नवीनता ला देती है।"

अंजना अब राजीव को छोड़ने वाली नहीं थी। विवाह के पूर्व तो वह संयम रखती थी। उसने कहा, "तब आपके सिद्धांत के अनुसार एक वर्ष पश्चात् हमें शिशु के विषय में सोचना चाहिए अर्थात् "हम दो हमारे एक।"

राजीव ने सहमत होकर कहा, "हाँ, "लड़का" हम अपने पूरे जीवन की योजना इस हनीमून के समय ही फुर्सत से बनायेंगे।"

राजीव ने आगे कहा, "अपने प्रेम काल में मैं आन्तरिक रूप से तुम पर श्रद्धा करता था क्योंकि तुमने बिल्कुल लिफ्ट नहीं दी।" तुम्हारे आत्मबल एवं चरित्र में मुझे तभी विश्वास हुआ।"

आज राजीव का बहुत बात करने का मन था क्योंकि पाण्डेय जी के साथ रहकर लम्बे वार्तालापों एवं वाद-विवाद कि आदत पड़ गई थी। राजीव ने कहा, "बचपन के प्रेम को लोग भूल जाते हैं। केवल उनके जीवन में एक कसक रह जाती है जो बहुधा जीवनोन्नति में सहायक होती है पर शैशवावस्था का प्रेम यद्यपि गम्भीर नहीं होता पर उम्र ऐसी नाजुक होती है कि वह भूलने पर नहीं भूलता एवं जीवन में एक "कुंठा" या "यादगार" के रूप में जगह बना लेता है। इस प्रेम के उपरान्त यदि विवाह न हुआ तो विवाह क प्रति वह समर्पण भावना नहीं आती । इसके कुछ अपवाद भी है। यदि यह प्रेम केवल पत्रों के माध्यम से होता है तो वह "स्कूली प्रेम" कहलाता है तथा स्कूल या कक्षा का अधिवेशन समाप्त होने पर प्रेम का अध्याय भी बन्द हो जाता है। पर जहाँ वायदे होते हैं. परस्पर मिलन होता है, एवं शारीरिक सम्बन्ध हो जाते हैं वहाँ इस प्रेम की गाँठ खोलना मुश्किल होता हैं। प्रेम में विफलता के फलस्वरूप महिलाएँ या तो आत्म हत्या कर लेती है अथवा पतिता हो जाती है एवं पुरुष प्रतिकार को भावना से वीर खलनायक हो जाते हैं।

यौवनावस्था का प्रेम मुख्यतः वासना की दृष्टि से होता है एवं इसमें असफलता पर दोनों पक्ष अपने कार्यो में जुट जाते हैं किन्तु अपराध-भावना सभी समय दोनों पक्षों को सताती रहती है।"

अतः जिस किसी को प्रेम करना हो उसे यह सोच-समझकर करना चाहिए। जो पूर्व विवाहित जीवन में मस्ती करते हैं उनका गृहस्थ एवं समस्त जीवन काल दुःखमय एवं अशांत व्यतीत होता है। व्यक्ति कितना ही स्वयं के अपराध को छिपाये, वह छुपता नहीं है। अतः हमें वही करना चाहिए जो हम समाज में कर सकें। यौन सम्बन्ध भी इसके अपवाद नहीं है। विवाह के पश्चात् यौन-सम्ब्रन्धों की पवित्रता को हमारे रीति-रिवाजों ने पूर्ण समर्थन दिया है। यहाँ तक कि "हनीमून" की रस्म भी विवाह में एक महत्वशाली धार्मिक रहस्य है। अन्जना ने बीच में टोका और कहा, "कृपया भाषण बन्द कीजिए एवं योजना बनाइये।" सर्व प्रथम मेरा प्रस्ताव एक नौकर रखने का है।

राजीव ने कहा, "मैं घर में नौकर रखने का सख्त विरोधी हूँ। यदि नौकर पुरुष हुआ तो पति के मन में सर्वदा संशय रहेगा। यदि महिला नौकर हुई तो पत्नी के मन में संशय का बीज उत्पन्न होगा। यदि आकर्षण हो ही गया तब तो पूरा जीवन चौपट हो जायेगा जैसे कई राजा-महाराजाओं का हुआ था। यह तो जमींदारी प्रथा का द्योतक है। दूसरे परिवार में एक ऐसा बाहरी लोग आने से परिवार का स्तर गिर जाता है।"

अंजना ने तर्क देते हुए कहा—"हमलोग जब कार्यालय जायेंगे तब खाना कैसे तैयार होगा ?"

राजीव ने उत्तर में कहा, "हम परस्पर सहयोग करेंगे। मैं प्रतिदिन पानी भर दूँगा एवं सब्जी काट दूंगा, तुम गैस पर खाना चढ़ाकर रोटी बनाना। मैं यथा सम्भव कपड़ों की सफाई भी कर दूंगा।" अंजना राजीव के अव्यवहारिक प्रस्ताव से सहमत न हो सकी। उसने आगे तर्क किया "यदि बच्चा हो गया तो वह कैसे रहेगा ?"

राजीव ने उत्तर दिया, "अपनी अम्मा जी हमारे साथ रहने के लिए तैयार हैं। बच्चा होने पर उन्हें तुरन्त बुला लेंगे।"

अन्जना ने कहा, "मेरे सभी सम्बन्धी जो आपसे भी छोटे पदों पर हैं, नौकर अवश्य रखते हैं। मैं आपसे यद्यपि नौकर रखने के लिए नहीं कहती पर मुझे इस स्थिति में समायोजित होने के लिए थोड़ा समय दीजिए।"

वार्तालाप से थोड़ा कड़ुआपन आ गया। अन्त में दोनों इस बात पर राजी हो गये कि बर्तन, झाड़ू एवं कपड़े की सफाई के लिए प्रातः एवं सायंकाल एक वयस्क नौकरानी रखी जाये।

कुछ दिनों पश्चात् वे नौकर की अनिवार्यता भूल गये। जहाँ अन्जना घर में खाना पकाने का कार्य देखती थी, राजीव बाहर एवं बाजार का काम, घर की सफाई एवं सजावट तथा अतिथियों के स्वागत का कार्यभार सम्भालता था। अतिथियों को उनके घर जाने में अपूर्व सुख मिलता था क्योंकि वे लोग स्वयं अपने हाथों से सभी का स्वागत कार्य करते थे। उनका गृहस्थ जीवन मानों दौड़ने लगा हो।

इक्कीस

परस्पर सहयोग से उनके गृहस्थ जोवन में मधुरता की वृष्टि होने लगी। प्रायः सभी आधुनिक भौतिक उपादान उन्होंने अपने छोटे से घर को सजाने के लिए खरीदे । सोफा, फ्रिज, टेपरिकार्डर, रिकार्ड प्लेयर आदि उन्होंने स्वयं के परिश्रम से एकत्रित किये। जिन लोगों को ये वस्तुएं दहेज में प्राप्त हो जाती हैं, वे वैवाहिक जीवन के आरम्भ से ही परावलम्बी होने लगते हैं। यहाँ दहेज़ का प्रश्न ही नहीं था। अंजना मायके से अपने साथ केवल पांच साड़ी लेकर आयी थी।

अंजना की माँ जो थोड़ा कुछ कर भी सकती थी वह भी राजीव ने उन्हें करने से मना कर दिया।

कुछ दिनों के पश्चात् अंजना स्थानान्तरण करवा कर बम्बई आ गयी। बम्बई के कार्यालय में कार्याधिक्य था। दोनों प्रातः स्कूटर से कार्यालय के लिए निकल जाते थे एवं साथ में ही वापिस लौट आते थे। दोपहर में वे दोनों मिलकर अंजना के कमरे में भोजन करते थे। इस प्रकार दोनों मिलकर जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत कर रहे थे।

दशहरा एवं दीपावली की छुट्टी में अंजना एवं राजीव कश्मीर एवं गुलमर्ग घूमने गये। कश्मीर के सेव खाकर दोनों के मुखों पर लालिमा आ गयी थी। वहां से लौटते समय वे लोग लखनऊ रुके। लखनऊ में राजीव से मिलने एक खास उसका पुराना मित्र आया। परिचय आदि से ज्ञात हुआ कि उसका छोटा भाई अंजना के साथ कालेज में पढ़ चुका था तथा अंजना उसे भली-भाँति जानती थी। अंजना घबड़ा गयी, उसने सोचा, "यदि राजीव को मेरे

कालेज'' के प्रेम की घटना ज्ञात हो गई तो उसका विश्वास मुझपर से उठ जायेगा। अतः उसने राजीव से सम्पूर्ण घटना कह डाली।

राजीव के जैसे पैर के नीचे से धरती खिसक गई हो। उसका पति हृदय जैसे टूट गया हो।

धैर्य रखकर उसने कहा, ''तुमने जो सब किया था वह भूल जाओ। पर भविष्य में उससे कुछ सम्पर्क भी नहीं रखना। क्या अभी भी तुम्हारा उससे सम्पर्क है ? तुमने नागपुर में यह घटना मुझे क्यों न बतायी ? सभी कुछ मुझे पूरे विस्तार से सुनाओ।''

अंजना ने रोते हुए उत्तर दिया, ''मैं सच कहती हूँ कि अब मुझे उस घटना से बिल्कुल ही तात्पर्य नहीं है तथा उसने पहिले ही शादी कर ली थी। जब मैं कॉलेज में पढ़ती थी। मैंने उसी समय वे सभी पत्रादि भी जला दिये थे। इसके पश्चात् मेरी उससे कभी बात ही न हुई, न ही वह मुझे परेशान करता है। पत्रों के आदान-प्रदान के अतिरिक्त कोई बात न थी। हम कभी अकेले में मिले भी नहीं। हमलोग एक बार पिक्चर देखने गये थे। वह भी सहेलियों के साथ। हमलोगों का परिचय सेशन से प्रारम्भ में एक शैक्षणिक यात्रा में हुआ था। भगवान की कसम मुझे इस बात का अब बिल्कुल ध्यान भी नहीं आता है।''

राजीव प्रारम्भ से ही बहुत सामाजिक एवं लोकप्रिय था उसने अपने मित्र के भाई के माध्यम से लखनऊ जैसे शहर में भी अंजना के विषय में सभी विस्तार से पता लगा लिया एवं कुछ फोटो भी हस्तगत किये। उसके मित्र के भाई ने कहा, ''राजीव भाई साहब, आप विश्वास कीजिए कि यह केवल लड़कपन का प्रेम था जिसे अंग्रेजी में भाव-मल कहते हैं।''

यह सभी तथ्य प्राप्त करके राजीव ने चार पांच दिन तनावपूर्ण मंथन के बाद निर्णय निकाला, अंजना का प्रेम विशुद्ध स्कूली प्रेम था जिसमें केवल पत्रों का आदान-प्रदान ही हुआ था। दूसरों के लिए इस प्रेम का कोई महत्व नहीं था न ही विशेषतः उस लड़के के लिए। अंजना ने ही अनावश्यक रूप से अधिक

संवेदनशील एवं कर्तव्यपरायण होने के कारण मेरे सामने आत्म स्वीकृति कर ली है।"

यह दुःखपूर्ण आत्म प्रकाशन एक दृष्टि से उत्तम हुआ क्योंकि अंजना के मस्तिष्क की आखिरी ग्रन्थि खुल गयी एवं उसने अब अपने को पूरे खुले हृदय से पति को प्रेम करने का निश्चय किया। इस थोड़े समय में वह गर्भवती हो चुकी थी एवं पति के अतिरिक्त इस संसार में उसका कोई नहीं था। इस घटना से वह पति की दृष्टि में कुछ गिर गयी एवं बाकी जीवन में उसे राजीव से सदा दबकर चलना पड़ा।

चूंकि यह मिश्रित प्रेम एवं सामाजिक विवाह था अतः प्रम की सीमायें अभी बाकी थी। विशुद्ध प्रेम-विवाहों में ये छोटी-छोटी घटनाएं तलाक एवं तनाव का कारण बन जाती हैं। क्योंकि प्रेम-विवाह में प्रेम अतिरिक्त विवाह के पूर्व ही सीमान्त पर पहुँच जाता है तथा विवाह के प्रति उत्सुकता आदि का अभाव रहता है। वह विवाह के पूर्व किये पापों को न्यायसंगत सिद्ध करने का रंग है। इसलिए जहाँ भारत एवं विदेश में विशुद्ध प्रेम-विवाह पचास एवं सत्तर प्रतिशत असफल होते हैं वहां सामाजिक विवाहों के असफलता का प्रतिशत केवल तीस के लगभग है। तीस प्रतिशत में दस प्रतिशत प्रायः वे बेमेल विवाह हैं जो निर्धनता एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण एक पक्ष को करने पड़ते हैं। पाँच प्रतिशत दहेज आदि की समस्याओं को लेकर होते हैं एवं पाँच प्रतिशत ससुराल में सास एवं अन्य लोगों के दुष्ट स्वभाव एवं अत्याचार के कारण होते हैं। दस प्रतिशत में सामाजिक विवाह एक पक्ष के विशेष स्वभाव एवं सहयोग के अभाव में होते हैं। पुरुष की चरित्र हानि या स्त्री की चरित्र हानि या दूसरे पक्ष के संशय भी इसमें प्रमुख भूमिका का काम करते हैं। प्रेम विवाहों की विफलता का मुख्य कारण ऊँची-ऊँची आशाओं एवं वायदों की असफलता है।

काश! यह शिक्षा हमारे लड़के लड़कियों को स्कूलों में दी जाती कि उनका यह खेल उनके भावी जीवन में एक चिरन्तन दुःख का विराट कारण

बनेगा। भारतीय पति अपने को आधुनिक जितना ही कहे, वह अपनी स्त्री के विवाह के पूर्व-पवित्रता; कौमार्य एवं पूर्ण एकाग्रता का समर्थक है तथा उसके अभाव या शक में वह हिंसा, तलाक एवं निरन्तर मानसिक कष्ट पहुँचाने पर भी उतर सकता है। पर राजीव खुले मस्तिष्क एवं उदार हृदय का व्यक्ति था। उसने अंजना के विषय में पूर्व जानकारी प्राप्त की एवं उसके अपराध को उसने क्षमाकर दिया क्योंकि उसका ही नहीं करुणा आदि का भी विश्वविद्यालय में इस प्रकार का रूमानी एवं कागजी प्रेम अपने साथ की लड़कियों से चलता था। अतः दोनों के अपराध समान होकर निरन्तर हो गये। एक दिन उस स्थिति में "कभी-कभी" फिल्म देखने गये तथा इस फिल्म ने तो उनके जीवन में नव प्रकाश किरण फैला दी। इस फिल्म का नायक बीस वर्ष विवाह के पश्चात् यह जानकर विचलित हो उठता है कि विवाह के पूर्व उसकी पत्नी का कोई प्रेमी था, पर कुछ देर में उसको ज्ञान बोध होता है एवं वह एक सच्चे पति धर्म बोध उपलब्ध करके कहता है, "मैं कैसा पागल ? हजारों बार जिस पत्नी ने मेरे साथ सुनहरी रातें गुजारीं, उसके विषय में बीस साल पहिले एक रात की शंका वाली घटना मुझे क्यों विचलित करेगी ? कदापि नहीं।"

दोनों बम्बई लौट आये एवं कार्य में जुट गये। कार्याधिक्य एवं मानसिक उद्विग्नता के कारण राजीव अत्यन्त अस्वस्थ हुआ एवं उसकी भयावह एवं शोचनीय स्थिति हो गयी। उसे पूरे शरीर से एक गम्भीर प्रकार की एलर्जी होने के कारण रक्तस्राव होने लगा। अंजना ने इस स्थिति में राजीव की प्राणपण से सेवा-सुश्रुषा की, राजीव का हृदय आन्दोलित हो उठा। डाक्टर का कथन था, "आप मेरी चिकित्सा के कारण नहीं अपितु देवी अंजना की सेवा के कारण ठीक हुए हैं।"

वह मन ही मन अपने शकी मन को धिक्कारता रहा। शनैः शनैः कार्यालय में भी तनाव बढ़ा। उसके अनेक विरोधी हो गये एवं एक बड़े राजनीतिज्ञ से उसका झगड़ा हो गया। वह चिन्तित रहने लगा। तब अंजना ने उसे समझाया "राजीव, राजनीतिज्ञों एवं सरकारी नौकरों का मतभेद प्रजातन्त्र की मुख्य

देन है। सरकारी नौकर संविधान के समर्थक होने का दावा करके परिवर्तन के विरोधी होते हैं जबकि राजनीतिज्ञ उनसे सामयिक परिस्थिति में बदलते परिवेश में सरकारी नियम कानून को बदलने की आवश्यकता संविधान की ओट में दुहाई देकर स्वयं अपने दल की स्वार्थ पूर्ति कराना चाहते हैं। अतः इसमें कोई चिन्ता की बात नही है।''

अंजना ने राजीव के कहने पर कई लोगों को अपनी कलम से लाभ भी पहुँचाया पर अधिकता होने पर उसने एक दिन राजीव को सलाह दी, ''कई लोगों का पक्षपात करने से हमारा नौकरी में सम्मान कम हो जायेगा।''

राजीव ने अंजना का सुझाव स्वीकार करते हुए कहा, ''मैं भविष्य में इस बात का ध्यान रखूंगा।'' राजीव को जब बड़े अफसर ने डाँटा तब उसने निश्चय किया, ''आखिर कार्यालय में नियम कानून ही हमारी सच्ची रक्षा कर सकते हैं एवं घर में केवल पत्नी। अतः पत्नी से झगड़ने से क्या लाभ ? संसार में मेरे बहुत से शत्रु हैं। मुझे प्रथम उनसे निबटना चाहिए एवं घरेलू झगड़ों एवं अशांति में अपनी शक्तियों एवं क्षमताओं का क्षय नहीं करना चाहिए। हम दोनों मिलकर शीघ्र ही बड़े-बड़े शत्रु को परास्त कर सकते हैं।''

इस प्रकार समयान्तर में राजीव के हृदय में अल्प दुर्बलता ने प्रवेश किया पर अंजना की सेवा एवं प्रेम के कारण वह दुगुने साहस, धैर्य एवं आत्मविश्वास के साथ कार्यालय के कार्य करने लगा। ऊपर एवं नीचे वाले सभी लोग धीरे-धीरे उससे प्रसन्न हो गये क्योंकि वह सर्वदा प्रसन्न चित्त होकर बात करता था एवं बड़ी-से-बड़ी समस्या आने पर भी विचलित नहीं होता था। अंजना के जीवन साथी होने के कारण उसकी व्यक्तिगत पारिवारिक एवं आर्थिक उन्नति हो गयी।

बाईस

करूणा के विवाह के दो मास पश्चात् सुधा का भी एक इंजीनियर से सम्बन्ध तय हो गया। इंजीनियर साहब केन्द्रीय इंजीनियरिंग सेवा से आये थे एगं एक उत्सव में उनका सुधा से परिचय हुआ। प्रथम परिचय शीघ्र ही जीवन बन्धन में परिणत हो गया। सुधा अपने नये पति को अपने पुराने ज़ीवन के काले इतिहास से कोसो दूर रखना चाहती थी अत: वह अपने साथ के अफ़सरों से न के बराबर मिलती थी। कार्यालय में अवश्य उसे कांटे लगते थे क्योंकि लोक निन्दा का अपमान उसकी अब सह्य शक्ति के बाहर हो रहा था। ईश्वर ने भी उसकी सुनी। विवाह के कुछ काल उपरान्त उसके पति को विदेश में चार वर्ष के लिए सरकार की ओर से प्रस्ताव मिला। सुधा फूली न समाई। वह भी अपने पति के साथ दो वर्ष का लम्बा अवकाश लेकर कुवैत चली गयी। वह सभी कुछ भूलकर अपने पति की दिल और दिमाग से पूर्ण सेवा करना चाहती थी। उसके अपार विश्वास को देखकर कुवैत में लोग कहते, "आप इतना अधिक पति पर विश्वास करती हैं कि यह आपके धोखे का कारण हो सकता है।" पर सुधा करती भी क्या? उसका रोम-रोम पति पर मर मिटने को तड़प रहा था। पति कुछ पथ से विचलित हुआ भी पर अपनी पत्नी का अन्धा प्रेम एगं विश्वास ने उसके पैर, "अन्य घर" से वापिस कर दिये। वह सुधा से हार मान गया। जैसे-तैसे उसने दो वर्ष का और अवकाश बढ़ा दिया एगं पति की आर्थिक सहायता के लिए एक छोटी सी वहाँ नौकरी कर ली। जब वे चार वर्ष के पश्चात् विदेश से लौटकर आये तो चारो ओर का वातावरण काफी बदल चुका था। कार्यालय में सहकर्मियों को अब उसकी आलोचना करने का दुस्साहस न था क्योंकि इस समय में कुछ की पत्नियाँ विवाह के

पश्चात् पथ से उतर चुकी थी एवं कई लोग भी पथ से विचलित हो चुके थे।

दूसरी ओर राजीव वैचारिक संघर्ष की स्थिति में था। उसने एक दिन अंजना से कहा, "जीवन में प्रेम ही सभी कुछ नहीं है। प्रेम का ज्वार समाप्त होने के पश्चात पति-पत्नी में साम्य होना चाहिए एवं उनकी रुचियां लगभग एक सी होनी चाहिए।

अंजना ने कहा, "इसीलिए मैंने भी माँस खाना आरम्भ कर दिया है। मुझे अपने घर वालों से अब कोई प्रयोजन नहीं है। पर आपको मेरे ऊपर कभी-कभी दया करनी चाहिए।"

राजीव ने उसे समझाया, "स्त्री को सर्व प्रथम पति के सम्मुख सभी समर्पण कर देना चाहिए जैसा अर्जुन ने महाभारत में कृष्ण के सामने किया था। फिर तुम भारतीय पति को देखो। वह अपनी पत्नी के लिए अपना समस्त समृद्धि एवं सुख न्यौछावर कर देगा।"

राजीव ने आगे कहा, "भारतीय पति अपने को आधुनिक कहता हुआ भी अत्यन्त रूढ़िवादी एवं तानाशाह है पर उसे भारतीय पत्नी का त्याग, सेवा एवं समर्पण पानी-पानी कर देता है। आधुनिक स्त्रियां इस विषय में पहल नहीं करती पर भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाली स्त्रियां समर्पण करके पति का विश्वास, त्याग एवं प्रेम के आनन्द का पूर्ण उपभोग करती है।" अंजना ने स्वीकार किया, "मैं स्वयं को आपकी इच्छानुकूल ढालूंगी। आपको जैसे कपड़े अच्छे लगेगें वैसे कपड़े पहनूंगी। आप बाहर वालों से जैसा व्यवहार पसन्द करेगें वैसा ही करूंगी।"

एक दिन अतिथियों को लेकर राजीव अंजना से क्रोधित हो गया एवं घर में झगड़े एवं मनमुटाव की परिस्थिति आ गयी। राजीव की माँ पति-पत्नी के झगड़ों में प्रायः अंजना का ही पक्ष लेती थी।

राजीव ने माँ से कहा, "बेटे, तुम उस पर इतना रोब जमाते हो। वह

कार्यालय के कार्य में तुमसे अधिक दक्ष है। फिर बेचारी घर के काम एवं होने वाले बच्चे के कारण थक जाती है।"

राजीव ने अंजना से अपनी भूल स्वीकार करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे तुम पर तानाशाही नहीं करना चाहिए पर मैं क्या करूं ? मैं भारतीय पति की मानसिक स्थिति से नहीं उबर पाता हूँ। तुम इन सभी बातों को भूल जाया करो। मैं इस संसार में तुम्हें सबसे अधिक प्रेम करता हूँ एवं अपने दाम्पत्य जीवन पर मुझे गर्व है। मैं भविष्य में गृहकार्यों में तुम्हारा सहयोग करने का प्रयत्न करूंगा।"

विवाह के ठीक एक वर्ष पश्चात् उन्हें प्रथम पुत्र-रत्न की उपलब्धि हुई। अब उनके जीवन के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु उनका वह नन्हा शिशु बन गया जिसका नाम उन्होंने "राना" रखा।

बाहर वाले जब उनके घर जाते थे तो वे "अतिथि देवो भव" के भाव से उनके पूरे स्वागत सत्कार में स्वयं लगे रहते। उनके आस पास के समाज में उनके नाम की कथायें चर्चित होने लगी एवं उन दोनों का जोड़ा एक आदर्श दाम्पत्य जीवन का प्रतीक बन गया। वे अनेक बार बम्बई के टेलीविजन पर आये एवं कई पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने "दाम्पत्य जीवन कैसे सुखी हो ?" विषय पर लेख लिखे। यद्यपि उनका कार्य अत्यन्त विशिष्ट था पर घर पर वे अत्यन्त सरल भारतीय पति-पत्नी दृष्टिगोचर होते थे। ईश्वर ने भी उनकी कर्तव्य-साधना को खूब सराहा एवं उनके शिशु को पूर्ण शारीरिक क्षमता एवं सभी गुणों से सम्पन्न किया। उन्होंने अपने माता-पिता को लेकर चारों तीर्थों की यात्रायें की एवं बम्बई जैसे शहर में भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के पोषक बने रहे।

उनका दाम्पत्य जीवन एक संस्थान का रूप हो गया जो अनेकों के लिये एक अपार प्रेरणा स्रोत था और वे सफलता के पथ पर निरन्तर बढ़ते रहे...

□

काले हीरों का पंचकोट राज

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

एक

पश्चिमी बंगाल के पुरुलिया जिले में काशीपुर नामक स्थान पर पंचकोट राज के प्राचीन वैभव आज भी विद्यमान हैं। काशीपुर पंचकोट राज्य की राजधानी थी। पुरुलिया जिले के उत्तर में वर्धमान जिला एवं बिहार राज्य के धनबाद एवं हजारीबाग जिले हैं। दक्षिण में बिहार राज्य का ही सिंहभूम जिला है। पूर्व में बांकुड़ा एवं मेदिनीपुर जिले और पश्चिम में रांची जिला है। पुरुलिया जिले एवं पंचकोट राज्य की सीमा को लोग आजकल समानान्तर समझते हैं।

काशीपुर दक्षिण पूर्व रेलवे के मंडलीय केन्द्र आद्रा जंक्शन से केवल आठ किलोमीटर दूर है। प्राचीनकाल में पंचकोट राज्य का विस्तार वर्धमान जिले में सियरसोल, धनबाद जिले में झरिया, कतरास, रानीगंज, मैथान तक था। सिंहभूम जिले का चांडित्य इस राज्य का अंग था एवं हजारीबाग ओर रांची जिले के रामगढ़ तथा सिली इसी राज्य के अंग थे। आजकल के मापदण्ड से सर्वोत्कृष्ट धनी प्रदेश जैसे दुर्गापुर, बोकारो, टाटानगर के इस्पात कारखाने इसी प्रदेश में थे एवं कोयले की सर्वोत्कृष्ट खानों वाले प्रदेश जैसे झरिया रानीगंज इत्यादि इसी राज्य के सीमान्तर्गत थे। उत्तर में दामोदर नदी, दक्षिण में नदी, पूर्ण में कंसावती एगं पश्चिम में सुवर्ण रेखा नदी ने इस प्रदेश का प्राकृतिक सीमाकंन किया था। आजकल यदि पंचकोट राज्य का अस्तित्व पृथक होता तो यह भारत का सर्वाधिक धनी राज्य होता।

दामोदर नदी ने अपने उदर में सदियों से दाम (आग) छिपाये-छिपाये जहाँ एक काल में इस प्रदेश का सर्वनाश कर दिया है, वहाँ आजकल यह नदी

अपने पापों का प्रायश्चित करते हुए दोनों ओर कोयले का अजस्र स्रोत उत्पन्न कर रही है। आजकल के वर्तमान वैज्ञानिक युग में जिसकी प्रगति के मुख्य स्तम्भ कोयला एवं इस्पात हैं, इस प्रकार के प्राचीन राज्य का अध्ययन सभी को आकर्षित करे, यह स्वाभाविक ही है। इस राज्य के अध्ययन का आकर्षण इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि पुरूलिया जिला आजकल भारतवर्ष के सर्वाधिक पिछड़े जिलों में एक है। वास्तव में इसके प्राचीन एवं आधुनिक राज्य में पाताल आसमान का अन्तर है।

पंचकोट राज्य के इतिहास के साथ-साथ कोयले की भारत में खोज का इतिहास अन्योन्याश्रित है। पश्चिम के औद्योगिक विकास की किरणें जब समस्त विश्व में फैलीं तो ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीनस्थ भारत का प्रदेश कैसे इससे अछूता रहता ? ज्ञान एवं वैभव के अन्वेषी सभी स्थानों पर भ्रमण करते हुए पंचकोट राज्य में आ ठहरे एवं पंचकोट राज्य की राजदेवी कल्याणेश्वरी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। प्रथम पच्चीस सौ मन कोयले का निर्यात पंचेत से कलकत्ते हुआ १७७५ में। पंचेत पहाड़ के नाम पर ही इस राज्य का नाम पंचकोट राज्य पड़ा। अशुभ कार्यों के लिये विख्यात वारेन हेस्टिंग्ज को इस क्रांतिकारो शुभ कार्य का श्रेय प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में इन प्रयत्नों को एक विराट असफलता का सामना करना पड़ा एवं कोयले की खोज का कार्य १८१४ तक विलम्बित हो गया। विलियम्स जोन जो भारत में कोयले के खनन के सृजक माने जाते हैं, ने डामलिया एवं रानीगंज में धरती के नीचे स्तम्भ गाड़ दिये। जोन १८८२ में बिना किसी सफलता के तीस हजार के ऋण से दबकर मर गये पर वे मरने के पश्चात् और अमर हो गये जैसे शेक्सपियर एवं राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर ने एक कम्पनी की सहायता से उस अमर अन्वेषो की साधना को आगे बढ़ाया, रानीगंज तक रेलवे बनी एवं प्रति १५ वर्ष में उत्पादन ४०० टन से दस हजार एवं दस हजार से ३ लाख टन तक पहुँचा।

जहाँ गड्ढा किया गया, कोयला निकल आया। इसके पश्चात् लोहा

गलाने के कारखाने भी लग गये। टाटा भी १९११ में यहाँ दौड़कर आये एवं जमशेदपुर में उन्होंने टिस्को की स्थापना की। १९१४ तक कोयले का उत्पादन १६० लाख टन तक पहुँच गया।

जैसे-जैसे कोयले का उत्पादन बढ़ा पंचकोट राज्य की आमदनी भी बढ़ी क्योंकि उस समय कोयला निकालने का आज्ञा-पत्र इस राज्य से ही प्राप्त होता था। अंग्रेज जहाँ एक ओर भारत का धन विदेश ले गये, दूसरी ओर उन्होंने अपनी अन्वेषक एवं साहसी प्रतिभा के माध्यम से राष्ट्र का वैभव भी खोजा एवं भारत को औद्योगिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के पथ पर बढ़ाने के लिए अपूर्व कार्य किया। अन्यथा कुछ वर्षों के लिए भारत इस दिशा में पिछड़ जाता। ईस्ट इंडिया कम्पनी एवं ब्रिटिश राज्य के सहयोग से लोगों ने पंचकोट राज्य में कोयले के सुषुप्त भंडारों को खोजा। इससे पंचकोट राज्य जो भारत के अन्य राज्यों की तुलना में एक छोटा एवं निर्धन राज्य था, देश के समृद्धिशाली राज्यों की श्रेणी में आ गया। अब राज्य की आमदनी का मुख्य स्रोत हो गया—कोयले की खानों से प्राप्त राजस्व या अधिकार शुल्क जिसे रायल्टी भी कहते हैं। इसके लिए राज्य को विशेष कष्ट या श्रम नहीं करना पड़ता था क्योंकि देशी एवं विदेशी कम्पनियाँ परस्पर प्रतिद्वन्दिता के कारण कोयले के इन भण्डारों का पता स्वयं लगाती थी एवं राजा के पास पट्टे के लिए प्रार्थना पत्र देती थीं। जैसे कि ईरान, इराक अथवा अरब देशों में तेल के भण्डारों के लिए सत्य है एवं वहाँ पर शेखों को कुछ भी नहीं करना पड़ता है। भूमि राजस्व की अपेक्षा कोयले से प्राप्त राजस्व की अदायगी में प्रशासनिक खर्च कुछ भी नहीं होता था क्योंकि इसकी अदायगी के लिये शक्तिशाली साधनों अथवा बल-प्रयोग नहीं करना पड़ता था, राजस्व देने वाले सभी व्यक्ति अथवा कम्पनियाँ धनी थे। अतः राज्य की व्यवस्था दौड़ने लगी एवं निर्धन कृषकों को सुविधा मिली। राज्य के वैभव एवं सुख में दिन दूनी एवं रात चौगुनी वृद्धि हुई। आज भी अवैध साधनों के माध्यम से प्राचीन सनदों का आश्रय लेकर यहाँ कोयले की खुदाई चलती है। इस राज्य की सबसे बड़ी विशेषता

यह थी कि इस राज्य के सैकड़ों वर्षों के शासन काल में जनता का कोई बड़ा विद्रोह नहीं हुआ। स्वतन्त्रता संग्राम के समय यहां के राजाओं ने जनता का साथ दिया एवं अंग्रेजों से युद्ध किया। राज्य की सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को उन्नत किया। आजकल के माप-दण्ड से इस राज्य के दो प्रतापी एवं प्रसिद्ध राजा हुए। वे थे—नीलमणि सिंह देव एवं ज्योति प्रसाद सिंह देव। उनके शासनकाल एवं व्यक्तिगत जीवन की चर्चा हम करेगें।

दो

पंचकोट राज्य की कहानी भारत के आधुनिक इतिहास में राजा नीलमणि सिंह देव से आरम्भ होती है। उनका शासनकाल सन् १८५२ से सन् १८९८ तक था। उनके वंशज मौलिक रूप से मध्य भारत की क्षत्रिय जाति के बीर थे। समयान्तर में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन का जब देशव्यापी विस्तार हुआ तब वे भी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के उज्जैन राज्य के अधीनस्थ हो गये एवं उन्हीं के वंशज कहलाने लगे। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी विजय पताका सब जगह फहराने के पश्चात् अपने विश्वस्त सरदारों को छोटे-छोटे राज्यों का शासन दे दिया ताकि उनके सार्वभौमिक राज्य का स्थायित्व स्थापित हो सके। प्रारम्भ में वंशज उस दूरस्थ भूमि पर बस गये। उनकी एक ही कामना थी–वह भी–शासन करने की।

चूंकि उज्जैन की धरती का नाम शेखर भूमि था उनके नाम के पीछे शेखर सिंह लगाया जाता था एवं उज्जैयनी की परम्परा के अनुसार वे शेखर सिंह जू कहलाये। कालान्तर में बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा प्रान्तों के प्रभाव से वह अपभ्रंश होकर सिंहदेव जू हो गया। साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था के अंतकाल में केवल सिंह देव ही रह गया।

सिंहदेव के पूर्वजों ने यहां बसकर जनप्रियता प्राप्त की एवं इस प्रान्त की भोली जनता को विक्रमादित्य के न्यायप्रिय सरदार खूब पसन्द आये। अपूर्व बल एवं शक्ति के साथ-साथ विनम्रता का उनमें सुन्दर सम्मिश्रण था।

राजा नीलमणि सिंह देव उनके वंशजों की श्रेणी में ऐसे रत्न थे जिन्होंने इनके राजवंश का नाम उज्जवल किया।

राजा नीलमणि सिंह का प्रथम विवाह मध्य भारत में सरगोजा राज्य की राजकुमारी अनूप कुमारी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह सनातन हिन्दू रीति से सम्पन्न हुआ एवं विवाह के समय महारानी की उम्र केवल ११-१२ वर्ष की थी। इस वंश के राजा भी उसी प्रांत से आये थे। राजा अपने पुरातन सम्बन्धों को जीवंत रखना चाहते थे ताकि हजारों मील दूर रहते हुए भी वे अपने मौलिक प्रांत की सामाजिकता, खानपान एवं त्यौहारों को न भूल पायें। उन्होंने सोचा कि नवागत राजकुमारी के आगमन से वे सभी कुछ भूल जायेगें क्योंकि अधिकांश समय तो राजमहल के भीतर ही गुजरता था। उनकी आत्मा सदैव अपनी मौलिक संस्कृति की खोज में खोयी रहती थी। वे कृत्रिम साज-सज्जा एवं वैभव के परिवेश से व्याकुल हो उठते थे। पर नये वातारण का आक्रमण अत्यन्त शक्तिशाली था। विरोधाभासों के प्रचुर आक्रमणों से राजा को अपनी पुरातन संस्कृति को भूल जाना पड़ा पर अनूप कुमारी बाबुल की यादों को न भूल पायी। राजा उन्हें बहुधा समझाते—

"तुम्हें शीघ्र ही यहाँ की भाषा, रहन-सहन एवं खान-पान आदि सीख लेना चाहिए। अन्यथा तुम्हें नौकरों चाकरों पर शासन करने एवं उनसे काम लेने में असुविधा होगी। राजमहल के बाहर जीवन कठिन हो जायेगा। फिर सरगोजा में आदिवासी अधिक हैं तथा पंचकोट में भी आदिवासी अधिक हैं।

अनूप कुमारी के लिए इस अल्प आयु में विवाह एक खेल था। वे इसे एक आनन्द का जादू समझकर प्रसन्न थीं एवं राजा के अन्ध-प्रेम में खोयी रहती थीं। अवकाश के क्षणों में वे विपरीत परिस्थितियों से समझौता न करने के कारण बेचैनी महसूस कर रही थीं। उन्हें घर की बीमारी सताने लगी।

इस दुश्चिन्ता में उन्हें स्त्री-सुलभ व्याधियों ने घेर लिया। स्वास्थ्य लाभ एवं जलवायु परिवर्तन के लिए राजा ने उन्हें निकटवर्ती रम्य स्थल रांची भेजा पर मानसिक चिन्ता में लिप्त रहने के कारण कुछ प्रभाव न हुआ। राजा ने उन्हें काशीपुर वापस बुला लिया एवं सभी प्रकार का वैभव दिया। अनूप कुमारी अपने को इस योग्य न सिद्ध कर सकीं, अन्त में राजा को कहना पड़ा, "मैंने यह जानकर कि तुम कम उम्र की हो, विवाह किया। मुझे आशा थी कि तुम मेरे समझाने में आ जाओगी एवं उज्जैयनी की परम्परा की वृद्धि करोगी, पर तुम तो मुझे दाम्पत्य प्रेम की अपेक्षा विक्षोभ ही अधिक देती हो।"

अनूप कुमारी ने कहा, "मुझे एक बार अपने माता-पिता के पास हो आने दीजिए। मैं इसके पश्चात् आपकी पूर्ण सेवा में लग जाऊँगी।"

अन्ततः राजा नीलमणि सिंह से रानी का दुःख न देखा गया और उन्हें मायके सरगोजा भेज दिया। विरह को लम्बी अवधि में राजा अधिक निराश एवं उदासीन रहने लगे। फलतः रानी को वापिस बुला लिया गया। अब भी व्याधियों ने रानी का पीछा न छोड़ा। इस बेमेल विवाह से राजा के मन में आन्तरिक आक्रोश, असन्तोष एवं निराशा ने जन्म लिया यद्यपि बाह्य रूप से वे जनता के लिए प्रसन्न राजा-रानी थे। इस प्रकार दाम्पत्य जीवन पाँच वर्ष घिसटता गया, पर राजा की निराशा बढ़ती गयी क्योंकि पाँच वर्ष में कोई सन्तान ही न उत्पन्न हुई। राजा नीलमणि सिंह अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के राजा थे। अतः वे विवाह को भगवान का जोड़ा सम्बन्ध समझते थे जो केवल मृत्यु होने पर ही विच्छेद होता है एवं दूसरा विवाह यद्यपि हिन्दू धर्म के विपरीत राजघराने को चलाने की चाल में प्रचलित थे, वे एक अन्याय समझते थे।

राजा की एक दिन उचित मानसिक अवस्था देखकर राजपुरोहित ने कहा, "राजा साहब, मैं इस राज्य का वंश पुरोहित हूँ, अतः राज्य का सनातन हित देखना मेरा पावन कर्तव्य है। राज्य की वंशावलि चलाने के लिए वेदों उपनिषदों की सम्मति एवं राज्य की प्राचीन रुढ़ियों एवं परम्पराओं के आधार पर आप से एक और विवाह करने का अनुरोध करता हूँ।"

राज्य के सचिव एवं कोषाध्यक्ष भी इस प्रस्ताव के समय उपस्थित थे एवं उनका इस प्रस्ताव में पूर्ण समर्थन था। राजा नीलमणि सिंह अवाक् रह गये एवं कुछ न बोले। उसी रात्रि को रानी से मिलने पर उन्होंने कहा, "राजपुरोहित मुझे दूसरे विवाह की सलाह दे रहा है। तुम्हारी क्या राय है?"

यह सुनकर रानी अनूप कुमारी पर जैसे हिमखंड आ पड़ा। अजस्र अश्रुधारा के प्रवाह के मध्य बिलखते हुए उन्होंने कहा, "यदि आपको यही करना था तो मुझसे विवाह कर मेरे जीवन को क्यों नष्ट किया? प्रथम तो मैं स्वयं ही इस विपरीत जलवायु से परेशान हूँ, द्वितीय यदि आपका भी प्रेम मुझे न मिले तो मैं जी नहीं सकूँगी। आत्महत्या ही मेरे लिए एकमात्र पथ रहेगा। मैं तो यहाँ केवल आपके अजस्र प्रेम के सहारे अभी तक जीवित हूँ। राजा नीलमणिसिंह ने कहा, "ठीक है, मैंने तुम्हारा मत जान लिया। पर यह बात उचित नहीं कि द्वितीय विवाह के पश्चात मैं तुम्हें प्यार न दे पाऊँगा। प्रेम का सागर अनन्त है एवं वह बाँटने से कम नहीं होता। हमारे देश में अन्य राजा एवं रजवाड़े जो अनेकों रानियां रखते हैं, क्या उनकी रानियाँ खुश नहीं रहती? क्या उनका राज्य ठीक नहीं चलता? अनूप कुमारी बुन्देलखंड की विरागंना थीं। उनका सतीत्व जाग उठा। उन्होंने कहा–

"वे रानियाँ अवश्य खुश रहती हैं। पर राजा की स्त्रियाँ नहीं।"

उन्होंने आगे कहा, "रानियों को महल के बाहर निकल कर दुख प्रगट करने का अवसर कहाँ है? यदि तुम उनके स्त्री सुलभ हृदयों से पूछो तो वे भीतर रो रहे होंगे। प्रत्येक पत्नी अपने स्वामी पर एकाधिपत्य चाहती है। मैं भी अपने उसी अधिकार की आपसे भिक्षा माँगती हूँ। रहा आपके वंश को चलाने की समस्या, मैं आपको विश्वास देती हूँ कि मै अपने सतीत्व की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर आपको इस ओर भी सन्तुष्ट करूगी।" राजा को कहना पड़ा, "एवमस्तु।" पर रानी के भोले मस्तिक में प्रथम बार यह बात आयी कि राजवंश में विवाह का सब समय अर्थ नहीं है—जीवन की प्रसन्नता। इस

प्रकार राजा नोलमणि सिंह ने निर्णय लिया कि निकट भविष्य में दूसरा विवाह न करेंगें। इस निर्णय को सूचना सचिव एवं कोषाध्यक्ष तक पहुँच गयी। राजपुरोहित स्तम्भित हो गये। पर राजपुरोहित एवं सचिव महाशय ने हार न स्वीकार की क्योंकि राजा के वंश के भविष्य के साथ ही उनके परिवार का भविष्य बंधा था। उन्होंने राजा तक यह बात पहुँचा दी, "यदि सिंहदेव वंश में कोई सन्तान न हुई तो ईस्ट इण्डिया कम्पनी महाप्रभु ब्रिटिश कानून के अनुसार पंचकोट राज्य को कम्पनी के राज्य में मिला लेगी।" राजा के मस्तिष्क में यह विचार विद्युत की भाँति बार-बार कौंधता रहा। कुछ दिनों पश्चात् सचिव एवं राजपुरोहित काली दर्शन करने कलकत्ते गये। वहाँ उस समय पांडित्य में राजा पं० माइकेल मधुसूदन दत्त से एवं पंचकोट राज्य की भविष्य की समस्या को रखा। उन्होंने स्पष्ट कहा, "महाराज पंचकोट को दूसरा विवाह तुरन्त कर लेना चाहिए।" फिर क्या था। वे लोग आनन्द विभूरित होकर काशीपुर लौट आये। महाराजा नीलमणि सिंह के समाचार जिज्ञासा करने पर उन्होंने कहा, "राजा साहब, हम लोगों की इस बार मुलाकात पं० माइकेल मधुसूदन दत्त से हुई एवं पंचकोट राज्य के भविष्य के विषय में विशद वार्तालाप हुआ। राजा ने उत्सुकता पूर्वक पूछा "मुझे बिस्तार से सभी कुछ बताइये।" राजपुरोहित ने अनुनयपूर्वक कहा, "ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की इस प्रकार की नीति आ रही है कि यदि उसके अधीनस्थ राजाओं अथवा रजवाड़ों को कोई सीधे सन्तान न हुई तो कम्पनी राज्य के विस्तार के हित में कम्पनी उसका राज्य हड़प लेगी। इस परिस्थति में कोई राजा संतान को गोद न ले पायेगी।" सचिव महाशय ने विनम्रता पूर्वक कहा, "फिर राजा साहब, आपकी उम्र में भी बृद्धि हो रही है एवं अधिक देर करने से पंचकोट राज्य का दीपक बुझ सकता है।" राजा नीलमणि सिंह ने उत्सुकता पूर्वक पूछा, "फिर हमें क्या करना चाहिए ?" राजा की दुर्बलता से प्रथमबार लाभ उठाकर राजपुरोहित ने कहा, "विश्व के रचयिता मनु ने अपने ग्रंथ मनुस्मृति में नियोग का विधान रखा है। अर्थात जिस व्यक्ति को पुत्र उत्पन्न

न हो सके वह अपनी पत्नी को वंश चलाने के लिए पर पुरुष के साथ संगम की आज्ञा दे सकता है। पर इस राज्य में तो रानी की ओर से ही समस्या है। द्वितीय नियोग की व्यवस्था राजा महाराजाओं के लिए अपमान जनक है क्योंकि उनसे बड़ा कोई है हो नहीं। अतः दूसरा विवाह ही एक मात्र सहज पथ है। आप आज्ञा दे दें। हमलोग तुरन्त ही सभी प्रकार की व्यवस्था कर देंगे।''

अपने योग्य सचिव एवं विश्वसनीय राजपुरोहित के सुझाव का राजा ने हृदय से स्वागत किया। राजा ने कहा—

''पर मैं इस प्रश्न का अंतिम उत्तर एक सप्ताह पश्चात् सोच विचार कर दूँगा''। राजा नीलमणि फिर से यह प्रस्ताव रानी अनूप कुमारो के पास ले गये। विवाह के लगभग छः वर्ष गुजर चुके थे अतः महारानी सरगोजा भी मानसिक रूप से निराश थीं एवं सोचती थीं कि उनका आपत्ति का अधिकार समाप्त हो चुका है। राजा का इस दुश्चिन्ता के कारण रानी को दुःख नहीं देखा जाता था, रानी मुँह नीचा करके बैठी सुनती रहीं, ''मैंने इस राज्य की बंशावलि चलाने के लिए सर्व सम्मति से दूसरा विवाह करने का निर्णय ले लिया है।''

रानी बिलखती हुई बोलीं, ''जब सभी यह चाहते हैं तो मैं कब तक इसका विरोध करती रहूँगी। दूसरे राज्य के हित में भी यही है एवं आपका मुझसे दुःख नहीं देखा जाता। मैं एक राजपूत पत्नी हूँ एवं अपने पति की खुशी के लिए अपनी खुशी एवं जीवन भी दे सकती हूँ। आप विवाह तो कर लीजिये पर मेरी उपेक्षा मत करना।''

इस पर राजा ने रानी को गले से लगाकर कहा, ''मेरी प्रियतमा ! प्रेम की सीमा तो अनन्त हैं। उसको बांटने से घटता नहीं अपितु बढ़ता है'' रानी ने कटाक्ष पूर्वक कहा, ''दूसरे विवाह के पूर्व सभी यह कहते हैं, पर दूसरी स्त्री के जीवन में नये सिरे से प्रवेश करते ही सभी रंग ढंग बदल जाते हैं। चलो ! मैं तुम्हारी सेविका बनकर ही जीवन निर्वाह कर लूंगी।'' राजा नीलमणि ने करुणामय स्वर में कहा, ''ऐसा न कहो, प्रिये !''

सप्वाह समाप्त होने के पूर्व ही राजा ने सचिव एवं राजपुरोहित को यह सूचना दे दी कि वे दूसरा विवाह करने को तैयार हैं।

यह समाचार दावाग्नि की भाँति समस्त राज्य में फैल गया। आस-पास के क्षेत्रों में भी यह सूचना चली गयी। सचिव एवं राजपुरोहित का सम्पूर्ण समय दूसरी रानी की खोज में व्यतीत होने लगा। ज्ञात होता था कि राज्य के सम्पूर्ण कार्यों का केन्द्र राजा था एवं सम्पूर्ण कार्य उसके एवं उसके परिवार की प्रसन्नता के लिए हो रहे थे।

तीन

पार्श्ववर्ती छोटे-छोटे जमींदारों, सरदारों एवं राजवाड़ों की अविवाहिता कन्याओं की आशा बंधी कि शायद उनका विवाह पंचकोट के राजा से हो जाये एवं वे राज्य की मल्लिका बनकर राजमहल में प्रवेश करें। प्रस्तावों का तांता बंध गया। उस समय सभी प्रस्ताव नापितों के माध्यम से ही आते थे। राजपुरोहित ने उनमें से तीन वस्तुएँ देखी, प्रथम-प्रस्तत्व किसी राज्य परिवार से ही होना चाहिए। द्वितीय, प्रस्तावित कन्या का गर्ग गोत्र से विभिन्न होना चाहिए। तृतीय, कन्या की उम्र राजा की उम्र से कम से कम पांच वर्ष कम होनी चाहिए।

तत्कालीन कन्याओं की विवाह योग्य उम्र तेरह वर्ष से उन्नीस वर्ष तक ही मान्य थी। इससे अधिक उम्र होने पर समझा जाता था कि कन्या की विवाह योग्य उम्र निकल गयी है। आजकल तो अठारह वर्ष जब कि कम से कम उम्र विधि द्वारा मान्य है।

राजपुरोहित एवं सचिव महाशय ने सभी प्रस्तावों को देखा एवं जो राजा के योग्य समझे उनका सत्यापन करने के लिए अन्य स्थानों के भ्रमण के लिए

निकल पड़े और पाँच प्रस्ताव अन्तिम रूप से राजा नीलमणि के समक्ष रखे। इनमें राजा नीलमणि को कतरास, झरिया एवं सरायकेला के प्रस्ताव उत्तम लगें। राजा की आज्ञानुसार राजपुरोहित ने प्रस्तावों का विश्लेषण किया- "कतरास की कन्या में सभी विशेषताएँ है पर उसके वंश के इतिहास से ज्ञात होता है कि ये जहाँ भी विवाहोपरान्त गयीं वहाँ राजकुमारों की संख्या में विशेष वृद्धि न हो सकी। दूसरे, यहाँ की राजकुमारी की उँचाई भी अधिक है एवं रंग भी साँवला है।"

सचिव ने आज्ञा पा कर कहा, "सरकार, अधिक उँचाई तो उत्तम है। हमारे भविष्य के राजा महाराजा ऊँचे, बलशाली, साहसी एवं बीर होंगे।"

राजा नीलमणि ने कहा, "मंत्री, ऊंचाई से बीरता का कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारे देश एवं विदेश के प्रसिद्ध राजा एवं सेनानायक जैसे चन्द्रगुप्त, अशोक एवं नैपोलियन विशेष लम्बे शरीर वाले नहीं थे।

राजा नीलमणि ने झरिया का प्रस्ताव इसीलिए अस्वीकार कर दिया क्योंकि कन्या की शिक्षा दीक्षा अंग्रेजी माध्यम में हुई थी एवं उसका अधिकांश जीवन अंग्रेजी मिशनरी स्कूल के छात्रावास में व्यतीत हुआ था। वह कार एवं घुड़सवारी में भी तीव्र थी।

राजा ने कहा, "जो लोग अंग्रेजी वातावरण में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करते है उन्हें भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू धर्म का गहन अध्ययन नहीं होता। वे देशभक्त नहीं होते।"

तृतीय प्रस्ताव पर सभी सहमत हो गये राजा ने यह प्रस्ताव रानी अनूप कुमारी को भी दिखाया। उन्होंने कहा—'

"यह प्रस्ताव सर्वोत्तम हैं। इनके गुण भी ठीक हैं। मुझे इन्हें बहिन बना कर रखने में विशेष असुविधा न होगी।"

अतः प्रस्ताव के सर्वसम्मत से पारित होने के पश्चात् राज्य के नापित को आवश्यक निर्देश हुए। रामशंकर परमानिक दूसरे दिन ही उनका यह प्रस्ताव लेकर सरायकेला पहुँचा जहाँ उसका पंचकोट राजा के प्रतिनिधि की मान्यता

से भव्य सत्कार हुआ। उसे सुन्दर-सुन्दर बग्घी चढ़ने को मिली एवं उसे पूरे राज्य का भ्रमण कराया गया। सरांयकेला के राजघराने से उसे बेश कीमती एवं जड़ाऊ रेशमी वस्त्र भी मिले। वहाँ से लौटकर नापित ने कन्या की कोटि-कोटि प्रशंसा तब तक करता रहा जब तक उसके शब्दकोश में प्रशंसा योग्य शब्द रहे। ऐसा ज्ञात हुआ कि उससे बढ़कर सुन्दर एवं भव्यशाली कन्या उस समय देश—देशान्तर में दूसरी नहीं है, यह था अपूर्व आवभगत का प्रभाव। एक छोटे से उत्सव में उसने सरांयकेला राजा की कन्या के विवाह की स्वीकृति स्वरूप भेंट के रूप में राजा नीलमणि को तषर रेशम का कुर्ता, पाजामा एवं बेशकीमती जड़ाऊ लम्बा बन्द गले का कोट अर्पित किया।

राजा नीलमणि ने यह सहर्ष स्वीकार किया। कुछ दिनों पश्चात् पंचकोट राज्य का मुख्य दरबार लगा एवं सरांयकेला राज्य के कन्यादान को सर्वसम्मति से समर्थन प्राप्त हुआ। औपचारिक रूप से राजपुरोहित ने घोषणा करते हुए कहा, "आज से दोनों राज्य एक अमर बंधन में बँध गये हैं। अब इन दोनों को कोई भी पृथक नहीं कर सकता। हमारी प्रजा को एवं उस राज्य की प्रजा को किसी भी राज्य में भ्रमण की स्वतन्त्रता है। हम एक दूसरे के हैं और हमारा सभी वैभव एक दूसरे के लिए है। उस छोटे राज्य की रक्षा करना पंचकोट के महान् राज्य का पुनीत कर्तव्य है।"

काशी से राजघराने के पंडितों को बुलाया गया एवं राजपुरोहित से मंतव्य करके विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला गया। यह तारीख सरांयकेला भेज दी गयी एवं उसी दूत के माध्यम से कन्या पक्ष वालों ने सहर्ष स्वीकृति भेज दी। दोनों ओर से विवाह की विराट तैयारियां आरम्भ हो गयी।

समय पर बारात की तैयारी हुई एवं पंचकोट के सभी सरदार एवं रजवाड़े बारात में गये। आस-पास के राजा एवं उनके प्रतिनिधि भी आये। बारात में पन्द्रह घोड़े की दो बग्घी, पाँच ऊँट एवं पांच घोड़े तथा नाना प्रकार के अन्य प्रचलित वाहन गये। राजा के साथ राजघराने के पुरुष सदस्य थे। पूर्ण सजधज के साथ राजा का कारवां चल दिया। पंचकोट राज्य की सीमा

में सरदारों के द्वारा बड़ा स्वागत किया गया। पंचकोट राज्य के पश्चात् सरायकेला की रियासत का पूरा प्रबन्ध था ताकि सात फेरो के पूर्व बारात शान्त रहे। तीन चार दिन यात्रा के पश्चात् बारात गन्तव्य पर पहुँची। एक धर्मशाला में बारात की व्यवस्था थी। वहाँ मोची, नापित से लेकर धोबी तक का भी प्रबन्ध था। खाने एवं पीने के लिए रसोई चौबीस घण्टे खुली थी,। सरायकेला के राजा ने बारात की आगवानी को। प्रथम ही फलों एवं चाय का नाश्ता कराया एवं हिजड़ों के द्वारा बारात के मनोरंजन का आयोजन हुआ। उन्होंने राजा नीलमणि एवं उनके शासन की प्रशंसा में कोई शब्द बाकी नहीं रखा। नाना प्रकार के भाव-भंगिमाओं एवं ताली बजाकर राजशाही भीड़ का मनोरंजन किया। बारात का गौरव भी ऊँचा हो गया।

इसके पश्चात चाट आयी एवं विभिन्न प्रकार के खाने पीने का क्रम बना रहा जब तक कि बाराती छुपकर अपने कमरों में नहीं चले गये। एक बाराती के पीछे एक स्वागत करने वाला था।

बारात सरांयकेला के मुख्य बाजार से निकली। सरांयकेला वासियों ने शहर को रानी की भाँति सजाया था। चारों ओर रजनीगंधा एवं बेला की सुगन्ध आ रही थी। वातावरण में उल्लास एवं आनन्द ही बह रहा था। राजा नीलमणि पंचकोट के हाथी पर बैठे, हाथी की हौद सोने का था एवं हाथी के पैरों में चाँदी के आभूषर्ण पहना रखे थे। हाथी पर मखमल बिछा था, घोड़ों के भी पैरों में झुमके पहनाये गये जिनका नाच देखते ही बनता था। विभिन्न प्रकार के सुसज्जित नगाड़े एवं ऊँच और एक मोटर गाड़ी भी बारात के साथ चल रही थी—रास्ते में अनेकों स्थानों पर बारूद लगी थी एवं उसके जलने से बिजली सी कौंध जाती थी।

जब बारात सरांयकेलां के राजमहल पर पहुँची तो प्रचुर ध्वनि के साथ बारात का बारूद एवं गोलों ने स्वागत किया। दरवाजे पर महिलाओं ने शंखों से पवित्र ध्वनि निकाली एवं बैन्ड के साथ नर्तकियों ने अपना पूरा नृत्य

दिखाया जिस पर रुपयों की जहाँ बौछार हो रही थी वहाँ विवाह की पवित्रता अदृश्यमान हो रही थी।

इतने लोग वर एवं बारात को देखने के लिए उमड़ पड़े मानो सरांयकेला राज्य के सम्पूर्ण मानस सागर में ज्वार आया हो चाहे वे निमंत्रित हो या नहीं। राजा उनका है एवं राजा के यहाँ विवाह उनके यहाँ विवाह है। सभी कार्यकर्ता कार्य छोड़कर राजा नीलमणि के व्यक्तिगत एवं राज्य के वैभव को देखने में व्यस्त हो गये। इसके फलस्वरूप महिलाओं को अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

सर्वप्रथम सरांयकेला की रानी ने वर की आगवानी की एवं उसकी आरती उतारी, बारातियों को चन्दन लगाया गया एवं फूलमाला पहनायी गयी। इसके पश्चात् सरांयकेला राज्य की राजकुमारी लावण्यप्रिया राजा नीलमणि को औपचारिक रूप से अपनी सहेलियों के साथ चुनने आयी एवं उन्होंने राजा नीलमणि के गले में जयमाला पहना दी। राजा नीलमणि ने भी एक जयमाला लावण्यप्रिया को पहनाया एवं दोनों जीवन की एक जयमाला में बंध गये। लावण्यप्रिया ने लज्जा से विभूषित होते हुए भी चोरी से राजा नीलमणि की ओर देखा एवं प्रथम दृष्टि में ही दोनों में प्रेम हो गया।

तत्पश्चात् दोनों ओर से कवियों, चारणों एवं गायकों ने प्रशंसा गीत पढ़े एवं दोनों पक्षों को धन्यवाद दिया। उसके पश्चात् बनारस से आये सगीतज्ञों का कार्यक्रम हुआ क्योंकि राजा नीलमणि बनारस के संगीतज्ञों के प्रेमी थे। बीच-बीच में गुलाब जल की मधुर फुहार एवं इत्र की भीनी सुगंध फैल जाती थी। भोज का आयोजन हुआ। भोज में सभी मिलकर दो हजार के लगभग लोग थे। इसके उपरान्त कलकत्ते से आयी हुई नर्तकियों का नृत्य हुआ। कुछ ने (क्लैसीकल) नृत्य किया तो कुछ ने मुजरा। बारातियों में नाचने वालियों को पुरस्कार देने की प्रतियोगिता लगी थी। अत्यधिक मद्य सेवन के कारण कुछ अप्रिय भी घटते-घटते बच गया। नर्तकियाँ तो तीन हजार के लगभग पुरस्कार ले कर चली गयीं।

इसके पश्चात् विवाह की मुख्य रस्म का आरम्भ हुआ। विवाह के रस्मों

में कुछ बंगाल का प्रभाव था पर वस्तुतः खानपान से लेकर धार्मिक रस्मों का मौलिक आधार उनके क्षत्रिय रीति रस्म थे जो वे अपने पूर्व स्थल से लाये थे। दोनों राजपुरोहितों ने परस्पर मंतव्य करके एक समन्वयकारी विधि का निर्माण किया। सर्वप्रथम सप्तपर्दा अर्थात् सात फेरों का आयोजन हुआ। दोनों राजपुरोहितों ने मंत्रोच्चार के साथ अग्नि को प्रज्वलित किया एवं सात फेरों के साथ ही हिन्दू धर्मानुयायी विवाह हुआ। वर ने कहा, "हे पत्नी ! तुम मेरे चित्त के अनुकूल रहना एवं मेरी आज्ञा का पालन करना। तुम एकाग्र होकर मेरे वचन सुनना।" कन्या ने कहा, "हे पति ! तीर्थ यात्रा, व्रत, उद्यापन, यज्ञ दान इत्यादि कार्य आप मेरे साथ ही करना। दूसरे होम यज्ञादि करके देवों का पूजन करना एवं श्राद्ध तर्पण आदि में पितरों की पूजा करना।

तीसरे कुटुम्ब की रक्षा करना और पालन पोषण करना तथा गाय, भैंस आदि पशु रखना और उनकी सेवा करना। चौथे धन धान्य का हिसाब-किताब मुझे दिखाना एवं दूसरे को घर में मुझसे पूछ कर रखना। पाचवें मन्दिर, बाग, तालाब, कुआँ इत्यादि का निर्माण करवाना। छठवें विदेश के या अपने देश के व्यापार से पैसा कमाना। सातवें जब मैं अपनी सहेलियों के मध्य बैठी रहूँ तब मेरा उनके सामने अपमान नहीं करना एवं कितना ही मन करे परन्तु पर स्त्री गमन मत करना। कन्या ने कहा, "यदि आपको मेरी ये सभी शर्तें मंजूर हों तो मैं आपके वाम अंग में बैठकर आपकी जीवन पर्यन्त सेवा करूँगीं।" राजकुमारी ये सभी शर्तें स्वयं बोली एवं राजपुरोहित के मुख से बोलने की रस्म मात्र, न रखी। राजा नीलमणि भी शास्त्रों में निपुण थे। उन्होंने कहा, मुझे तुम्हारी सभी शर्तें स्वीकार हैं। यदि तुम मेरी कुछ शर्तों का पालन करो।" राजकुमारी लावण्यप्रिया ने कहा, "अवश्य ही आप कहिए"। राजा नीलमणि बोले, हे पत्नी ! मेरे चित्त के अनुकूल तुम्हारा चित्त रहेगा और सदैव मेरी आज्ञा पालन करोगी एवं पतिव्रत धर्म में परायण रहोगी तो सब तुम्हारा कहा हुआ मैं यत्नपूर्वक करूँगा।" लावण्यप्रिया ने कहा, "मैं निश्चय ही आपकी शर्तों को मानूंगी।"

उसके पश्चात् राजा नीलमणि ने लावण्यप्रिया की मांग में सिन्दूर भरा एवं दोनों जीवन के दृढ़ बंधन में बँध गये ।

चार

बारात के लौटाने की यात्रा आरम्भ हो गयी । चूंकि बारात धीरे-धीरे चल रही थी और विवाह विषयक चर्चाएँ जोर पकड़ रही थीं । सरांयकेला से लौटते समय कालीमाटी वर्तमान टाटानगर में बारात का पड़ाव हुआ एगं राजा को अच्छी मुद्रा में देखकर मंत्री महाशय ने कहा, "हुजूर यदि आप गुस्ताखी क्षमा करें तो मैं कुछ कहूँ । "सचिव ! जो कुछ मन में आये कहिए । सभी माफ है !"

राजा का ऐसा स्पष्ट मत प्राप्त करना दुस्साहय था । अतः सचिव ने साहस इकट्ठा करके कहा, "मुझे राजपुरोहित को लाने दीजिए ।" सचिव ने राजपुरोहित को पहले से ही कह रखा था । भाई ! जिस समस्या का हम समाधान करना चाहते थे वह तो नहीं हुआ । नयी रानी तो सम्भवतः अभी भी रजस्वला नहीं हुई, राजा को कैसे संतान सुख प्राप्त होगा एगं राजा साहब की चिन्ता का कैसे निराकरण होगा ? हमें चलकर तुरन्त राजा से यह कहना चाहिए तथा अन्य विवाह के लिए अनुरोध करना चाहिए नहीं तो हमारी नौकरी न रहेगी । रास्ते से जो ठाकुर गाँव की रियासत पड़ती है, वह लड़की प्रारम्भ में अस्वीकृत होने वाली लड़कियों में प्रथम थी । उसे रास्ते में ले लेगें एगं काशीपुर जाकर विवाह की रस्म कर लेगें ।" सचिव के साथ राजपुरोहित भी हो लिए एगं दोनों ने जाकर राजा नीलमणि से कहा, "महाराज; इस विवाह में सभी पूर्णताएँ हैं पर सन्तान-सुख के लिए आपको अति अपेक्षा करनी पड़ेगी । शायद आपको स्मरण होगा कि गिजों ठाकुर गाँव का सम्बन्ध भी आपको उत्तम लगा था । अतः आप आज्ञा दे तो गिजों ठाकुर गाँव की राजकुमारी को रास्ते

में ही ले चलें एवं काशीपुर जाकर विवाह की अल्प रस्म कर लेगें।" राजा नीलमणि पशो पेश में पड़ गये पर मन-ही-मन क्रोधित होते हुए भी सचिव एवं राजपुरोहित पर क्रोधित न हो पाये क्योंकि यह सुअवसर निकल जाने पर दुबारा आने वाला नहीं था। उनके मन एवं मस्तिष्क में सदैव रहता था—

"हमारे पश्चात् हमारा नाम लेने वाला एवं रियासत चलाने वाला कौन होगा ?" इस मनोवैज्ञानिक दुर्बलता के आवेश में उन्होंने सचिव महाशय के प्रस्ताव को स्वीकृत किया एवं कहा, "परन्तु इस कार्य के पूर्व सभी की सहमति प्राप्त करना तुम्हारा कर्तव्य है।" राजा की आज्ञा शिरोधार्य करके सचिव एवं राजपुरोहित चले गये। उन्हें विश्वास हो गया कि उनके पदों से अब उन्हें कोई पंचकोट राज्य से नहीं हटा सकता। सचिव महाशय ने चमचों एवं कारिंदों को इस काम के लिए लगा दिया। चारों ओर यह प्रचार हो गया कि राजा का तीसरा विवाह होना अति आवश्यक है क्योंकि राजा नीलमणि की उम्र शनैः शनैः बढ़ रही है एवं अभी राज्य के उत्तराधिकारी का निश्चय नहीं हुआ। राजा बहुत देश भक्त हैं। कभी भी अंग्रेज महाप्रभु से युद्ध हो सकता है एवं युद्ध में क्या होगा ? यह तो ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं कह सकता।

सभी को ज्ञात हो गया कि इस प्रकार के प्रचार को राजा का वरद हस्त प्राप्त है, भला कौन इसका विरोध करता ? नयी नवेली पालकी में बैठी रानी तो कुछ समझती ही नहीं थी। उस समय एक राजा को एक से अधिक रानियाँ रखने की परम्परा थी। यह राजा के वैभव एवं पुरुषत्व का प्रतीक समझा जाता था। नयी रानी की भी तीन सौतेली माताएँ थीं। अतः लावण्यप्रिया ने सुनकर भी आपत्ति नहीं की। आजकल नारी स्वतन्त्रता के युग में ऐसी घटना अविश्वसनीय नहीं है।

जब राजा के पक्ष से सहमति प्राप्त हो गयी तब राजपुरोहित एक सिपाही एवं नापित को लेकर द्रुतगामी वाहन से गिजों ठाकुर गाँव गये एवं वहाँ के राजा से इस सम्बन्ध में वार्तालाप किया। प्रस्ताव को सुनकर तुरन्त ही वहाँ के जमींदार सहमत हो गये, उन्होंने सोचा, "प्रथम तो मेरी कन्या की उम्र बीस वर्ष

से ऊपर हो चुकी है जो विवाहोपयुक्त उम्र से अधिक है। द्वितीय पंचकोट के राजा उस क्षेत्र के सबसे बड़े राजा हैं। अतः उन्हें अपनी कन्या देना गौरव की बात है। इतने बडे राजघराने से सम्बन्ध स्थापित होने से राजघरानों में हमारे सम्मान की वृद्धि होगी। हमारे पूर्वजों का नाम उज्जवल होगा एवं हमारा वंश धन्य हो जायेगा।" वहाँ के राजा ने रानी, घर के अन्य सभी सदस्यों एवं मंत्री से सलाह करके राजपुरोहित से कहा, "हमारा प्रस्ताव है कि हम विवाह की मुख्य रस्में जयमाल एवं सप्तपदी यहाँ कर देगें पर मुख्य भोज का आयोजन मुश्किल होगा। वैसे बारात हमारी अतिथि है। बरातियों का हम पूरी तरह से देखभाल करेगें। आप उसकी चिन्ता न करें।" राजपुरोहित ने कहा, "मुख्य भोज एवं बाकी रस्में हम काशीपुर जाकर आयोजित कर लेगें।"

दोनों पक्ष सहमत हो गये एवं राजपुरोहित 'एवमस्तु' कहकर आशीर्वाद दे गये। उन्होंने जाते समय कहा—

"आप विवाह की यथासाध्य तैयारियाँ कीजिए। मैं तीसरे दिन बारात के साथ पहुँच रहा हूँ। हम रात्रि के एक पड़ाव के पश्चात् ही राजकुमारी को विदा कराकर प्रस्थान करेंगे।"

माधुर्य समाये हुए छोटे क्षेत्र गिजो ठाकुर गाँव में प्रस्तावित विवाह-अनुष्ठान का समाचार बेतार से जैसे समस्त क्षेत्र में प्रसारित हो गया हो। छोटे से राजनगर को देखने से ऐसा ज्ञात होता था जैसे वहाँ संकट कालीन अवस्था लगी हुई थी। निर्धारित समय पर बारात का आगमन हुआ। राँची अंचल में बसे इस रियासत के वासियों ने राजा नीलमणि एवं उनके बारात का पूर्ण उल्लास, उत्साह से आतिथ्य सत्कार किया—मानों 'अतिथि देवो भव" कथन साकार हो उठा हो। बाराती भी इस अल्प किन्तु भव्य एवं प्रेममय सत्कार से गद्‌गद हो उठे। आदिवासी जनता ने अपने कुछ नृत्य पेश किये, तो अन्य लोगों ने विभिन्न भावनात्मक गीत एवं संगीत। यद्यपि राज्य की सड़कों को विशेष सुसज्जित न किया जा सका पर लोगों की पंक्तियों

से ज्ञात होता था कि वे ही स्वागत में सजकर खड़े हैं। खान-पान की उत्तम व्यवस्था थी एवं सबसे ऊपर थी महान् आत्मीयता एवं अत्यधिक आवभगत। थके हुए बरातियों के लिए यह जैसे रेगिस्तान में उद्यान सिद्ध हुआ। स्वभावत: राजा नीलमणि ही नहीं, उनके परिवार के सभी सदस्य एवं साथी गिजों ठाकुर गाँव के राजा एवं नयी राजकुमारी के प्रशंसक एवं भक्त हो गये।

आदेशानुसार राजपुरोहित ने अनावश्यक रस्मों को स्पर्श नहीं किया। अल्प पर आवश्यक सभी रस्मों के मधुर एवं पावन गुंजन में राजा नीलमणि का तृतीय विवाह राजकुमारी चित्रकुमारी के साथ सम्पन्न हुआ। चित्रकुमारी अपूर्व शीघ्रता के मध्य अपने मायके से विदा ली। एक लड़की के लिए इतना शीघ्र जीवन-परिवर्तन असह्य हो सकता है। रानी चित्रकुमारी को विवाह के पूर्व की साधना, चिन्तन एवं अपेक्षा का अपूर्व सौभाग्य न मिला। पर चित्रकुमारी एक स्वस्थ विचार एवं दृढ़ मन की महिला थीं। उन्होंने यह सब सहन ही नहीं किया बल्कि सोचा, "मैं, विवाह-पूर्व एवं विवाह पर सभी सुखों में एक साथ निमज्जन करूंगी एवं राजा को अपने प्रेम और साधना से गद्‌गद् कर दूँगी।"

उनकी उम्र भी इस चिन्तनधारा के योग्य थी। अश्रुपात के मध्य राजा नीलमणि रानी चित्रकुमारी को सरांयकेला से नव-विवाहिता रानी लावण्य प्रिया के पड़ाव तक ले गये। सभी महिलाओं ने औपचारिक रूप से आवभगत की।

एक ही बारात दो पालकियों को लेकर आगे चली। काशीपुर में पहले ही बारात के आगमन की सूचना कर दी गयी। गिजो ठाकुर गाँव से भी लगभग पच्चीस लोग बारात के साथ चले ताकि विवाह का वे पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकें। काशीपुर में सम्पूर्ण पथ में बंदनवार लगाये गये, दरवाजे सजे एवं लोगों की पंक्तियाँ फूल मालाएँ लेकर आयीं। राजमहल को नव-विवाहिता की भाँति सजाया गया। राजा के स्वागत की भव्य तैयारियाँ हुईं एवं भोज की व्यवस्था के लिए कलकत्ते से लोग आये।

सरगोजा की रानी अनूपकुमारी ने मानसिक रूप से स्वयं को तैयार कर लिया था, वे सभी तैयारियाँ स्वर की स्वामिनी की भाँति उत्साह एवं उद्दीपना लिए करवा रही थीं। उन्होंने सोचा, "राजा को राज कार्य एवं राज वंश चलाने के लिए एक से अधिक रानियों की आवश्यकता होती है। चलो, कई रानियों के आने से हमारा बहुमत बढ़ेगा एवं रखैलों की संख्या कम होगी एवं काशीपुर के राजमहल का वातावरण गन्दगी से दूर होगा।"

राजा नीलमणि का राज्य की सीमा से ही भव्य स्वागत हुआ। काशीपुर पहुँचते ही तुमुल ध्वनियों से आकाश गूंज उठा, घोड़े हिनहिनाने लगे एवं राजा नीलमणि की जय, सिंह देव जू वंश जिंदावाद, एवं चिर चिर जिओ के नारों से काशीपुर का छोटा कस्बा कम्पित हो उठा। सर्वप्रथम महल में राजा नीलमणि का स्वागत रानी अनूपकुमारी ने किया। उनके मुख पर फैली हँसी, उल्लास एवं भाव गरिमा को दृष्टिगोचर कर राजा आत्मविभोर हो उठे। रानी अनूपकुमारी ने राजा नीलमणि की पूजा अर्चना से स्वागत किया। राजा नीलमणि ने कहा, "प्रिये, इस महान खुशी के अवसर पर तुम जो चाहोगी, वही मिलेगा।"

रानी अनूपकुमारी के इस प्रकार की सम्भावना को अपने आंचल में पहले से ही संजोयी थीं। यह सुनकर वे तुरंत ही राजा के कान में कहीं, "इस खुशी के महान एवं अद्भुत उत्सव पर मैं एक भिक्षा-याचना करती हूँ या इसे पारितोषिक ही समझिये। आप अपने हरम से अब अन्य सभी की छुट्टी कर दीजिए।"

राजा ने एक ही राजाज्ञा के द्वारा सभी रखैलों की छुट्टी दी एवं उन्हें भी इस खुशी के अवसर पर अनेक धन संपत्ति देकर काशीपुर से अस्सी कि० मी० दूर आसनसोल क्षेत्र में दस एकड़ के लगभग जागीर देकर भेज दिया। आसनसोल जाकर उन सभी का मन लग गया, वे अरब शेखों की भाँति घर पर बैठी रहीं, बाहर के उद्योगी लोग उनकी जमीन से कोयला निकालते थे एवं उसके लिए उन्हें खूब पैसा देते थे।

उधर राजमहल धार्मिक मंत्रोच्चारों से गूंज रहा था। भोज का आयोजन हुआ। राज्य के गरीबों के लिए एक विशेष भोज का आयोजन हुआ। जो रस्में बाकी थीं उनकी पूर्णता के लिये राजा व्यस्त हो गये। सचिव ने कुछ दिनों के लिए राज्यभार संभाला, तीनों रानियों के निवास की पृथक-पृथक व्यवस्था हुई एवं राजा भोग-विलास के साथ जीवन काटने लगे।

पाँच

पंचकोट राज एक जनमुखी राज्य था। यहाँ की जनता राज्य संचालन से अति प्रसन्न थी। ऐसे दृष्टान्त नहीं हैं कि राजा ने दबाव डालकर राजस्व वसूल किया, पर कुछ दृष्टान्त ऐसे अवश्य हैं जहाँ राजा के कुछ रजवाड़ों ने बलपूर्वक आदिवासियों की भूमि ले ली तथा उन्हें भूमिहीन एवं बेघर कर दिया। एक मत के अनुसार इस राज्य के अत्याचार से राज्य की आदि जनता आदिवासी एवं महतो इस कारण पर्वतों अथवा सुदूर ग्रामों में वास करने चले गये एवं आदिवासियों का बन ही जीविका का साधन हो गया। इस मत के समर्थक नगण्य हैं क्योंकि देश के सभी भागों में आदिवासी प्रारम्भ से ही बनों में देखे गये हैं। पर-इतना निश्चित है कि राजा नीलमणि सिंह के शासनकाल से जनता पर अत्याचार होना प्रायः बन्द हो गया एवं जनता के आनन्द एवं कल्याण के लिए राज्य की ओर से अत्यधिक प्रयत्न किये गये।

राजा नीलमणि ने विशेषतः ललित कलाओं को शासन का सक्षम वरदहस्त दिया एवं राज्य की प्रधान जनता भूमिज, मुंडा, संथाल एवं कुर्मी जाति के महतो लोगों की संस्कृति, नृत्य एवं उत्सवों को मान्यता दी। इस राज्य का यह एक प्रमुख अंग हो गया। कहते हैं कि सम्पूर्ण दिन राजमहल में

संगीत की मधुर ध्वनि गूंजती रहती थी अथवा गानों पर नर्तकियां थिरकती रहती थीं। राज्य-भर में पूरे वर्ष उत्सवों एवं विभिन्न अनुष्ठानों का आयोजन होता रहता था। स्पष्ट है कि इन उत्सवों के आयोजनों का सम्बन्ध वर्ष में ऋतुओं एवं कृषि उत्पादन से था। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जीवन के सभी अंशों का कृषि पर आश्रित होना स्वाभाविक ही है।

ऐसी किवदन्ती है कि राजा स्वयं सभी उत्सवों में भाग लेते थे। पंचकोट राज्य की ओर से नये-नये त्योहारों को जन्म मिला एवं राज्य का अधिकांश राजस्व इस ओर खर्च होने लगा।

राजा के विवाह के तीन चार वर्ष हुए थे। राज्य में शांति विराजमान थी। अतः राजा ने कुछ तो अपने विलास के लिए एवं कुछ ललित कलाओं के विकास के लिए प्रयत्न किया। स्थानीय घोंघा ग्राम के कोथक लोगों को राज-दरबार में गान करने के लिए रखा गया। झुमुर गान के माध्यम से पूरी रामायण, महाभारत एवं राधाकृष्ण लीला का गान हुआ, पर्व के अनुसार विभिन्न नृत्यों का जन्म हुआ। छो नाच तो जैसे पंचकोट राज्य का वैशिष्ट्य हो गया। इस नृत्य में विभिन्न देवताओं, राक्षसों एवं पशुओं के मुखस्थ के द्वारा, भावभंगिमाओं के द्वारा पौराणिक कथाओं का प्रदर्शन हुआ। धामसा, ढोल, ढोलक एवं बासुरी के द्वारा गान निकाले गये एवं गाने की भी व्यवस्था थी। यह नाच मयूरभंज राज्य से मानभूम एवं सिंहभूम प्रदेश में आया। नाचनी-नाच आदि को राजदरबार में पूरा प्रश्रय दिया गया।

बैसाख में बैसाखी काले मेघों को आमंत्रित करने के लिए, इस सूखा श्रवण क्षेत्र में सायं एव रात्रि में राज्य एव राजदरबार में बृहद "हरिबोल" के आयोजन हुए। राज्य के विभिन्न स्थलों से हरिबोल के दल आते थे। इन दलों में छोटी-छोटी लड़कियां, नौजवान एवं विशेषतः वयस्क लोग रहते थे। वे भगवान की मूर्ति को सामने रखकर रात दिन चौबीस घंटे, "हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे" की ध्वनि पर विभिन्न प्रकार के नृत्य एवं विभिन्न भावभंगिमाओं का प्रदर्शन करते थे। इसी

एक बोल पर संगीत की सैंकड़ों ध्वनियाँ निकलती थीं। बड़े-बड़े ढाल, ढालक, एवं मजीरों के मध्य सुनने वाले स्वर्गीय आनन्द में खो जाते थे, जीवन का सुख-दुःख सभी अनन्त ईश्वर को समर्पित कर देते थे।

जून मास में गंगा पूजा का उत्सव राज्य की ओर से आयोजिन होता था एवं इस प्रदेश में जल के लिए राजा सिंहासन से उतर कर गंगा माँ से प्रार्थना करते थे।

अगस्त मास में सम्पूर्ण राज्य में मनसा पूजा का आयोजन होता था। यह पाषाण एवं लाल मिट्टी का देश था, जो बन से आच्छादित था। अतः साँप को पूजा करना अनिवार्य था। नागपंचमी की भाँति यहाँ के लोग साँप को दूध पिलाते थे एवं सर्प देवता के लिए बकरा बलि एवं हांस बलि देते थे ताकि सर्प समाज हित में रहें।

सितम्बर मास में कुँआरी पूजा का आयोजन होता था। पूरे राज्य में कुँआरी लड़कियाँ एक वृक्ष के नीचे जाकर विवाह के लिये योग्य वर की प्रार्थना करती थी। उसी उल्लास एवं उद्दीपन में एक साथ मिलकर नाच करती थीं। आदिवासी लड़कियाँ एक दूसरे की कमर में हाथ डालकर दायें बायें झुककर घंटों झूमती रहती थीं। इस उत्सव के पीछे किंवदन्ती है कि एकबार पंचकोट राज्य में सभी लोग युद्ध के लिए निकल गये थे, तब एक काशीपुर राजवाड़ी की कुँआरी लड़की भद्रवती ने पूरे राज्य-शासन को उस दौरान सफलता पूर्वक चलाया। उसी समय से कुँआरी पूजा अथवा भादू उत्सव का आरम्भ हुआ। इस युद्ध में पंचकोट राज्य की विजय हुई। सभी स्थान पर खुशियाँ मनायी गयीं। राज्य के एक सरदार ने विजयी दल का अपने क्षेत्र में स्वागत किया, तब से चाकलतोर नामक स्थान पर छाता पर्व मनाया जाता है। विजय के पश्चात् ग्रामीणों ने उल्लास मनाया एवं दल की पूजा अर्चना की, छाता लगाकर वृष्टि से रक्षा की। पूरे महीने राजमहल में इसी विजय के उपलक्ष में गाना-बजाना चलता रहा। राजा नीलमणि स्वयं रानी चित्रकुमारी के साथ इसमें अंश लेते रहे। अन्य रानियों को इससे बड़ी

ईर्ष्या होती थी पर क्या करें ? यह यथार्थ है कि विवाह सिर्फ एक शारीरिक मिलन ही नहीं बल्कि मानसिक स्तर भी दोनों का समान होना चाहिए ।

अक्टूबर मास में सम्पूर्ण बंगाल में त्योहारों का वातावरण ही रहता है जैसे दुर्गा पूजा, लक्ष्मी पूजा एवं काली पूजा । राजा नीलमणि ने इन सभी त्योहारों को भी प्रश्रय दिया । दुर्गा-पूजा में विभिन्न प्रकार की भव्य प्रतिमाएँ निर्मित कर उनकी पूजा का आयोजन होता था जिसे देखने देश के कोने-कोने से लोग आते थे । दशहरा या दुर्गापूजा के दिन राजा सभी को स्वयं पान देते थे एवं राज्य के सभी सरदार अपनी क्षमता के अनुसार राजा को नजराना देते थे । दुर्गा पूजा में विजयादशमी के दिन राजा की ओर से एक भव्य रथ एवं राजा की सवारी निकलती थी । दुर्गा पूजा के रथ को सौ दो सौ लोग खींचते थे और राजा हाथी के हौद पर रखे चाँदी के सिंहासन पर बैठ कर निकलते थे हाथी को विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनाये जाते थे ।

राजा की ओर से तीर धनुष प्रतियोगिता का आयोजन होता था । आदिवासी लोग सभी ओर से अंश ग्रहण करते थे एवं राजा के हाथ से पुरस्कार ग्रहण करते थे । राज्य के राजकुमार भी इस प्रतियोगिता में भाग लेते थे । इस पर्व पर राजा निर्धन जनता में विभिन्न प्रकार के कपड़े, धन, धान्य आदि वितरित करते थे । नानाप्रकार के मुर्गे की लड़ाइयाँ आयोजित होती थीं, दोनों मुर्गों के पैर में तेज धार वाले चाकू का फल बाँध दिया जाता था तथा दोनों मुर्गे भरपूर शक्ति से एक दूसरे पर तब आक्रमण करते थे जब तक कि दोनों में एक मर नही जाता अथवा पीछे नही हटता । इस युद्ध के लिए लोग पूर्व से ही मुर्गे को खूब खिला पिलाकर निपुण करते थे तथा जीत जाने पर राजा से बड़े-बड़े पुरस्कार प्राप्त करते थे । ऐसे वक्त राजा को खुश देखकर एक चाटुकार ने कहा—राजन् ! इस बार सियाल बहुत कराह रहे हैं । ज्ञात होता हैं कि राज्य में अत्यंत शीत पड़ रही हैं । आप यदि एक सौ कम्बल दे दें तो राज्य की शीत कम हो सकती है । राजा ने कहा, "एवमस्तु, सचिव तुरन्त निर्धनों हेतु कम्बल दो ।" वास्तव में एक सौ कम्बल खरीदे गये

पर राजमहल से बाहर पंचानबे कम्बल नहीं गये। सभी ने मिलकर बाँट लिये। उस युग में न तो कोई राजा से माँग करता था और न ही कोई डेपूटेशन या हड़ताल अथवा घरना। अतः इस प्रकार की बातों से ही यदि राजा की बुद्धि खुल गयी तो ठीक था अन्यथा जनता के भाग्य का मालिक ईश्वर ही था। भादू को भाँति टुसु उत्सव पंचकोट राज्य को देन है। यह उत्सव मकर-संक्रान्ति के समय जनवरी मास में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस त्योहार के समय सभी घरों में धान आ जाता है। लोग नये-नये कपड़े खरीदते हैं तथा तालाबों में जल होने से खूब मछली पकड़ते है, खाते हैं। टुसु का त्योहार मुख्यतः कृषि से सम्बन्धित है। टुसु एक निर्धन आदिवासी की लड़की का ही नाम है। यह मुख्यतः ग्रामीण उत्सव है। इस दिन लोग तरह-तरह के भेष बनाते है तथा सभी मन लगाकर नदियों, तालाबों एवं पोखरों में स्नान करते हैं जैसे हिप्पी लोग गोआ में समुद्र के किनारे स्नान करते हैं। सभी लोग एक डंडी में कुछ सुन्दर कागज बाँध लेते हैं तथा उसे नदी में डाल देते हैं। इस यात्रा में खूब गाना, बजाना एवं नाच होता है। इस प्रकार पंचकोट के राज्य में उत्सवों की भरमार थी। लोग इस सांस्कृतिक जीवन में इतने व्यस्त थे कि अभाव उन्हें दृष्टिगोचर ही नही होते थे। आज भी इस प्रदेश में अत्यधिक निर्धनता है पर यहाँ के लोगों के मुख प्रसन्नता से सभी समय खिले रहते हैं वे उत्सवों में सदैव व्यस्त रहते हैं। अर्थशास्त्र का पंडित विश्वास ही नहीं कर सकता कि इस प्रकार के अभावमय जीवन में संस्कृति कैसे इस बड़े पैमाने पर पनप सकती है? यद्यपि राजा नीलमणि ने अनेक तालाब खुदवाये, पीने के पानी के कुएँ बनवाये एवं कुछ स्कूल बनवाये पर लोगों की आवश्यकता की दृष्टि से सभी नगण्य था, पर बाहरी लोग कर ही क्या सकते थे जब राजा पर प्रजा का इतना मोह एवं श्रद्धा हो।

छह

राजा नीलमणि बड़े प्रतापी, धार्मिक एवं राष्ट्र भक्त राजा थे। उन्हें अंग्रेजों के रीति रिवाज, भाषा एवं खान-पान बिल्कुल पसन्द नहीं था। अतः उन्हें मन ही मन अंग्रेजी शासन पर रोष था। पर अकेले क्या कर सकते थे ? वह ईस्ट इन्डिया कम्पनी के सर्व प्रभुता सम्पन्न एवं सार्वभौमिक राज्य का काल था। चुआड़ विद्रोह एवं गंगा नारायण का विद्रोह उनके आदर्श थे। अतः वे अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। समय से, छोटा राज्य होने के कारण वहाँ अंग्रेजों का कोई राजनैतिक प्रतिनिधि अथवा मैनेजर नहीं रहता था। वे अंग्रेजों के विरुद्ध गुप्त कार्यवाहियाँ करते रहे। पुरूलिया स्थित जिले के कलक्टर ऑक्स से भी उनका मेल जोल नहीं था। किंबदन्ती है कि एक बार कलक्टर ऑक्स का दरवान चिल्लाया, "साहब घुड़साल में चीता आ गया है !" के० ऑक्स को विश्वास नहीं हुआ, स्त्री के विरोध के बावजूद वे उसे लालटेन लेकर देखने चले गये। फिर क्या था, शाही बंगाल टाइगार के० ऑक्स पर उछल पड़ा, दोनों में भयंकर भिड़न्त हुई। कैप्टन ऑक्स ने भी अपूर्व शौर्य एगं साहस से उस पर आक्रमण किया।

आसपास एवं उनके घर के सदस्य चिल्लाये पर इसो बीच चीते ने उन्हें घायल कर दिया। आवाज सुनकर बगल के घर से एस० पी० आये और उन्होंने चीते को गोली मारकर उसका अन्त कर दिया। उस रात शनिवार था अतः रविवार को मालखाना बन्द था। बाहर चिकित्सा के लिए केवल पंचकोट राजा से रुपये प्राप्त हो सकते थे। उन्होंने पंचकोट राजा के विश्वास पात्र व्यक्ति को बुलाकर यह सन्देश राजा नीलमणि तक भेजा। राजा नीलमणि ने कहा, "अंग्रेज कलक्टर के लिये मैं राजकोष से एक पैसा भी नहीं दे सकता। वह

अपवित्र हो जायेगा। हाँ, यदि आप व्यक्तिगत रूप से चाहें तो मैं आपको उधार दे सकता हूँ।'' अपमान के बावजूद कलक्टर को वह उधार पैसा परिस्थिति बस लेना पड़ा, पर वे दोनों और शत्रु हो गये। राज्य का कार्य सुचारू रूप से चल रहा था, ललित कलाएँ चोटी पर थी एवं राजा नीलमणि भी राजकाज में सक्रिय भाग लेने लगें। रानी चित्रकुमारी ने भी पुत्र को जन्म दिया अतः राजा सभी ओर से स्वतंत्र हो गये। उधर १८५७ में बैरकपुर की छावनी से विद्रोह की ध्वनि राजा के कानों में आयी। राजा प्रसन्न हो उठे। पंचकोट राज्य के संथाल आदिवासी जो लम्बे, स्वस्थ्य एवं काले थे, अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये। परम्परागत वे इकट्ठे अपने छोटे-छोटे दूर दराज ग्रामों में रहते थे एगं तीर चलाने में अत्यन्त पटु थे, पर वे स्वाधीनता प्रेमी थे। टैक्स देना तो उन्होंने कभी सीखा ही नहीं। रुपये का वे अर्थशास्त्र नहीं जानते थे। वे केवल वस्तु के बदले वस्तु के अर्थशास्त्र से ही जीवन चलाते थे। दूसरे उनका व्यापारियों ने आर्थिक शोषण उनके श्रम को खरीदकर किया एवं अंग्रेजों ने उनकी महिलाओं के साथ अत्यचार एवं बलात्कार। सिंधु, कानू, चाँद एवं भैरव भाइयों ने संथल परगना से विद्रोह आरम्भ किया एवं पूरा संथाल क्षेत्र विद्रोह की अग्नि में धधकने लगा। सदर अमीन ने छोटे नागपुर के कमिश्नर से रामगढ़ लाइट इन्फैन्टरी बटालियन के कुछ और सिपाही इस विद्रोह से सुरक्षा के लिए माँगें जो उन्हें मिल गये। इसके पूर्व इसी बटालियन के सिपाही केवल कोषागार, कचहरी एवं कारागार की ही सुरक्षा देखते थे। मेदनीपुर जिले में संथालों का विद्रोह पूरे तौर पर हुआ एवं पुरुलिया के सदर अमीन का हृदय कापनें लगा।

राजा नीलमणि का पुरूलिया काफी आना होता था। उन्होंने अपनी लोकप्रियता का लाभ लिया। वे गुप्त रूप से पुरूलिया सदर के कर्मचारियों एवं पुलिस में प्रवेश कर गये। गुप्त रूप से बारूद एवं शस्त्र निर्माण का कार्य भी काशीपुर एवं पुरूलिया में जोरों से चल रहा था। उधर १८५७ में मंगल पाण्डेय द्वारा बैरकपुर छावनी के विद्रोह की गूंज सभी के कानों में पड़ी। मानभूम में भी प्रशासन एवं प्रजा में राष्ट्र-भक्त अंश भड़क उठा। राजा नीलमणि ने पुरूलिया

आकर सरकारी कोषागार को लूटने की योजना बनायी। चक्रधरपुर एवं रामगढ़ की रियासतों ने सहयोग का आश्वासन दिया। पर ऐन मौके पर सभी विमुख हो गये, केवल राजा नीलमणि अपने सुख वैभव को त्यागकर एक सौ सैनिकों के साथ देश की स्वतंत्रता के दीवाने बनकर पुरुलिया की ओर चल दिये।

पूर्व योजना के अनुसार राजा नीलमणि की उपस्थिति पाकर रामगढ़ बटालियन के सिपाहियों ने जो पुरुलिया में तैनात थे, विद्रोह कर दिया। कलक्टर आक्स को दूसरी सूचना प्राप्त हुई। राजा नीलमणि की लोकप्रियता को दृष्टिगोचर करके एवं स्वयं के सिपाहियों का विद्रोह देखकर कलक्टर ने विद्रोह को कुचलना असम्भव पाया। जनता का सहयोग भी अंग्रेज कलक्टर को नहीं था। अतः उसने रानीगंज भाग कर शरण ली, कोषागार बन्द करवाया और छोटे नागपुर के कमिश्नर को दो सौ अंग्रेज सिपाहियों के भेजने की अर्जी भेजी। इस प्रशासनिक शून्यता में विद्रोहियों ने जो समझा, किया। उन्होंने सर्वप्रथम जिला जेल का दरवाजा तोड़कर कैदियों को मुक्त कर दिया। कैदियों ने बाजार में दुकानों को लूटा एवं अनेक प्रकार के अन्याय किये। राजा नीलमणि ने उत्तेजित भीड़ को नियंत्रित करने का काफी प्रयत्न किया पर भीड़ में मिश्रित उत्पाती एवं कैदियों ने ऐसा न होने दिया। फलस्वरूप राजा नीलमणि ने कहा—"हमारा केवल उद्देश्य है सरकारी कोषागार को लूटना क्योंकि कोषागार ही सरकार एवं यहाँ के कलक्टर का प्रथम प्रतिनिधित्व करता है। पर हम पैसे को पृथक रखेगें क्योंकि हम डकैत नहीं हैं, जो धन को लूटने के पश्चात् बाँटते हैं। जनता पर अत्याचार करने से जनता हमारे विरुद्ध हो जायेगी और हम कहीं के भी न रहेंगे। हमारा नारा है "बन्दे मातरम्" एवं "अंग्रेजों भारत छोड़ों" राजा नीलमणि ने देखा कि भीड़ को नियंत्रित करना असम्भव है। अतः वे सक्रियता पूर्वक पृथक हो गये। विद्रोही भीड़ ने जिले के रिकार्ड-घर को सम्पूर्ण रूप से जला दिया एवं कचहरी के कुछ पहरेदारों को गम्भीर चोटें पहुँचायी। इसके पश्चात वे लोग कोषागार के दरवाजे पर पहुँचे पर कोषागार का ताला तोड़ना पाँच छः घंटे से कम का कार्य नहीं था। अतः उन्होंने कोषागार के लकड़ी के

दरवाजे में स्प्रिट से आग लगा दी एवं सभी ने जो पाया लूट लिया और सभी भाग गये। कलक्टर के. जी. एन. ओक्स के अनुसार उस कोषागार से १०,८४४१ रुपये लूटा गया एवं लगभग १६००० रूपये के स्टाम्प लूटे गये। छः मन सरकारी अफीम भी विद्रोही ले गये साथ ही अड़तीस मन पकड़ी अवैध अफीम भी लूट में चली गयी तथा ३०० रु० के आभूषण एवं अन्य सामग्री भी लूटी गयी। इतनी बड़ी लूट के पश्चात् विद्रोही शांत न हुए एवं उन्होंने पुरूलिया–रघुनाथपुर सड़क पर घोर अत्याचार एवं लूटपाट की। उस समय बैंक इत्यादि न थे, अतः इतनी बड़ी लूटपाट से जिले के वित्त का ढाँचा पंगु हो गया। आजकल के हिसाब से यह राशि ३० करोड़ से कम की न होगी। अन्ततोगत्वा अंग्रेजों की बिल्ली की कूटनीति सफल हुई। मानभूमि के जमींदार मुकुन्द नारायण देव, झालदा के राजा जमींदार, बराभूमि के जमींदार राधा कृष्ण सिंह, बागमंडी के जमींदार राजा हृदयनाथ सिंह, मुदाली स्टेट के अरूना राय, सुन्दरी एवं सिरकाबाद के जमींदार दुलार सिंह ने लगभग एक हजार सिपाही इकट्ठे करके अंग्रेज कलेक्टर का साथ दिया एवं विरोधियों के सभी दरवाजे बन्द कर दिये, पर जयपुर में सिद्धी नामक स्थान पर संथाल भड़क उठे। जयपुर के जमींदार ने चार सौ घर वालों को उनका सामना करने भेजा, पर उन्होंने तीर धनुषों की सहायता से जयपुर का बाजार लूट लिया। पुरूलिया सदर से सिक्खों की नई बटालियन न भेजी जा सकी क्योंकि जिले के सदर में पुलिस का रहना आवश्यक था। अतः ओक्स ने तीन सौ सिपाही बन्दूकधारी लोग और कमिश्नर से माँगे। राजा नीलमणि बराबर संथालों को भड़काते रहे एवं उनकी सहायता करते रहे। गंगा नाम के एक संथाल के नेतृत्व में संथालो ने चास से लेकर रामगढ़ का क्षेत्र बुरी तरह लूटा एवं अनेक हत्याएँ कीं। कैप्टन मांटोगोमरी के नेतृत्व में सिक्खों की बटालियन ने जयपुर से संथालों पर विजय की। इससे जिले के प्रशासन को शांति मिली। इसके पश्चात् कैप्टेन ओक्स ने कमिश्नर को लिखा—

"राजा नीलमणि का ठाकुर विश्वनाथ सहाय विद्रोही के साथ सम्पर्क है। वह सरकार को लगातार सहायता नहीं दे रहे हैं एवं विद्रोहियों का खुले आम समर्थन करते हैं।

फलतः २४ नवम्बर १८५७ को राजा नीलमणि को गिरफ्तार करके अलीपुर जेल कलकत्ते भेज दिया गया जहाँ वे मार्च १८५६ तक बन्दी रहे। जहाँ नीलमणि की गिरफ्तारी के पश्चात् पंचकोट में क्रांति की आग शांत हो गई वहीं दूसरी ओर ईस्ट इंडिया कम्पनी का दीपक भी सदैव के लिए बुझ गया।

सात

कारागार में राजा नीलमणि का स्वास्थ्य गिर गया। चूंकि राजा नीलमणि विशुद्ध शाकाहारी थे एवं पूजा के बिना खाना नहीं खाते थे। अतः अंग्रेजी शासन ने उन्हें चारो ओर से परेशान किया। उन्हें जेल में साधारण कैदियों की भाँति रखा गया। गवर्नर जनरल उनसे प्रतिकार लेने के लिए पूर्ण प्रयत्न कर रहे थे। सरकारी तन्त्र उनके अधीनस्थ था, अतः कैंदी राजा कर ही क्या सकता था? एकबार की घटना है कि अंग्रेज जेलर ने कहा, "राजा नीलमणि, तुमको गौमांस देने के अतिरिक्त हमारे पास कुछ भी नहीं है। यदि तुम्हारे धर्म में शक्ति है तो उसी को बदल दो।"

राजा नीलमणि ने भगवान को सिर नवा कर उसे स्वीकार किया। पूर्व की भाँति वे काली मूर्ति के समक्ष गये एवं गोमांस रखकर बोले, "देवि! अपने भक्तों की रक्षा करो।"

अल्प क्षणों में गोमांस फूलों में परिवर्तित हो गया और आसपास स्थित सभी लोग देखते ही रह गये। यह प्रसाद उन्होंने अंग्रेज जेलर सहित सभी में वितरित कर दिया।

अलीपुर केन्द्रीय जेल की इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हैं। जिन्होंने राजा नीलमणि को जेल के भीतर लोकप्रिय कर दिया एवं वे कारागार में बिना मुकुट के राजा बन गये। उनके नियमित धार्मिक कार्यकलापों ने जेल के

अनेकों अभियुक्तों एवं कैदियों का हृदय परिवर्तन किया। एक वर्ष की अवधि में वे कारागार में इतने अधिक लोकप्रिय हो गए कि जेल प्रशासन के लिए उनके प्रति अत्याचार का अर्थ था, जेल के भीतर विद्रोह को निमन्त्रण देना।

राजा नीलमणि जेल के भीतर पूरे दिन धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते थे एवं कैदियों को नैतिक और देशभक्ति की शिक्षा देते थे।

यहीं उन्हें भारत में उभरती एक प्रतिभा माइकेल मधुसूदन दत्त का पता चला। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने राज्य में उन्हे ले आयेगें एवं शासन व्यवस्था में उनकी योग्यता का लाभ उठायेंगे।

दूसरी ओर पंचकोट राज्य में राजा की गिरफ्तारी से अनेक विद्रोह खड़े हुए। मिदनापुर स्थित अंग्रेज रेजीडेन्ट ने असिस्टेन्ट डिप्टी कमिश्नर पुरूलिया के माध्यम से भूमि राजस्व की दरें बढ़ा दीं। राजस्व अदायगी के लिए स्वतंत्रता पूर्वक पुलिस बल का प्रयोग होने लगा। राजा नीलमणि की अनुपस्थिति से काशीपुर की राजवाड़ी शनैः शनैः सुनसान होने लगी। सभी उत्सवों का आयोजन बन्द हो गया। रानी अनूप कुमारी एवं लावण्यप्रिया अपने-अपने मायके चलीं गईं। पर रानी चित्रकुमारी अपने छोटे राजकुमार को लेकर राजवाड़ी के बाहर निकल पड़ीं एवं राजा की मुक्ति के लिए जनता से विभिन्न प्रकार की अपील करने लगीं। रानी के इस प्रकार प्रजा में आने से जनता बौखला उठी और उसने सोचा "इस अंग्रेजी शासन ने हमारे पिता तुल्य राजा को गिरफ्तार किया है। हम इसका प्रतिकार करेंगे।"

ब्रिटिश राज्य ने नाराज होकर पंचकोट राज्य से कतरास एवं झरिया जैसी अच्छी रियासतों को पृथक कर दिया। इससे पंचकोट राज्य की आमदनी अत्यन्त कम हो गई। ब्रिटिश राज्य ने स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् पंचकोट राज्य को सीधे ब्रिटिश राज्य के अन्तर्गत कर लिया और राज्य के नीलामी को घोषणा की। कलकत्ते के एक धनी व्यक्ति ने इसे नीलामी में खरीदा पर वह एक पैसा भी पंचकोट राज्य की जनता से वसूल नहीं कर सका फलतः उसने नीलामी का प्रस्ताव वापिस कर दिया। अन्य एक व्यक्ति जो अपने को काफी

चालाक एवं शक्तिशाली समझता था, दुबारा पंचकोट राज्य को नीलामी में राजस्व अदायगी के लिए लिया, पर वह भी बुरी तरह असफल हुआ। हजार-हजार आदिवासी एवं कुर्मी जनता ने इसका विरोध किया और "वन्दे मातरम्" एवं "अंग्रेज राजा भारत छोड़ो" के नारों से उन्होंने राज्य के मुख्य नगरों में आन्दोलन कर दिया। फलतः दूसरा व्यक्ति भी वापिस चला गया।

कुछ लोगों ने राज सचिव के निर्देश पर यह बात जनता में फैलाई कि अंग्रेजी शासन का प्रतिनिधित्व यहाँ का असिस्टेन्ट डिप्टी कमिश्नर ओक्स करता है। इसलिये यदि इसके ऊपर दबाव डाला जाये तो सरकार राजा नीलमणि को छोड़ने के लिये बाध्य होगी।

फलतः छोटे-छोटे नेता उत्पन्न हुए एवं पूरे राज्य में विद्रोह पनप उठा। अनेक स्थानों पर लोगों ने भूमि राजस्व देना बन्द कर दिया। जयपुर के क्षेत्र में तो कुछ कृषकों ने घेरकर सरकारी कर्मचारी की हत्या कर दी, जो उनके पास भूमि राजस्व की माँग करने गया था। बाद में कलक्टर ने पुलिस भेजी पर किसी भी अभियुक्त का पता न लगा क्योंकि किसी ने अपना अपराध स्वीकार न किया, कुछ लोगों को सन्देह में गिरफ्तार भी किया गया पर वहाँ के लोग विशेषतः भूमिज एवं संथाल आदिवासी उन्हें तीर धनुष लेकर छुड़ाने आ गये। इसके फलस्वरूप चार आदिवासी तो मारे गये पर तीन पुलिस के लोग भी। अन्ततोगत्वा कलेक्टर की पुलिस अभियुक्तों को पुरूलिया ले जाने में सफल तो हो गयी पर पूरे प्रशासन में संत्रास व्याप्त हो गया। इस घटना की प्रतिक्रिया अत्यन्त प्रतिकूल हुई। सम्पूर्ण राज्य में जनता ने भूमि राजस्व का बहिष्कार कर दिया। विभिन्न स्थानों के जमींदारों के नेतृत्व में लोगों ने असिस्टेन्ट डिप्टी कमिश्नर को पचास-साठ प्रार्थना पत्र दिए। वह सौ दो सौ लोगों को हथियारों से लैस कर के लाते थे एवं कलेक्टर को प्रार्थना-पत्र के साथ धमकी भी दे जाते थे। फलतः पुरुलिया के कलेक्टर ने छोटे नागपुर के कमिश्नर के माध्यम से राजा नीलमणि को छोड़ने की सरकार से सिफारिश की।

उन्होंने लिखा, "यदि राजा नीलमणि को न रिहा किया गया तो जिले में विद्रोह का सामना करना असम्भव होगा। विद्रोह को कुचलने के लिए दो हजार सिपाही लगेंगे। यदि इतनी बड़ी वाहिनी न प्राप्त हो सके तब राजा नीलमणि को रिहा करने के लिए शीघ्र कदम उठाये जायें।

जब तक यह पत्र गवर्नर जनरल तक पहुँचा तब तक जेल के अधिकारी गण भी राजा नीलमणि की जेल में उपस्थिति से तंग आ चुके थे।

अतः उन्होंने भी राजा नीलमणि के गिरते स्वास्थ्य का बहाना दिखाकर रिहा करने की सिफारिश की। रानी चित्रकुमारी ने अपने छोटे राजकुमार की देख-रेख के लिए जमानत के लिए प्रार्थना पत्र दिया। राज्य के वकील ने कोई विशेष विरोध नहीं किया एवं राजा नीलमणि को बिना शर्त जेल से मुक्त कर दिया गया। जब राजा कलकत्ते से छूटकर आये, हजारों की संख्या में जनता ने आद्रा स्टेशन पर राजा का स्वागत किया। इस प्रकार की भीड़ पूर्व में कभी नहीं हुई। कहते हैं कि इस अपूर्व भीड़ एवं उत्सव में एक व्यक्ति कुचल कर मर गया क्योंकि जिले की पुलिस का वहाँ रहना खतरे से खाली नहीं था। जनता का रोष पुलिस पर केन्द्रित हो सकता था।

आठ

कारागार से छूटने के पश्चात राजा नीलमणि की लोकप्रियता में और भी वृद्धि हुई। उनकी लगभग डेढ़ वर्ष की अनुपस्थिति से राज्य में अनेक अव्यवस्था आ गई थी। राज्य के राजस्व में अपूर्व कमी आ गई थी जिससे राज्य-काज चलाना दुष्कर लगने लगा, पर वे ईश्वर के विश्वास का सम्बल लेकर बढ़ते रहे एवं सफलता प्राप्त करते रहे।

जहाँ १८५७ के स्वाधीनता संग्राम का सेना एवं पुलिस के अनुशासन पर

खराब प्रभाव पड़ा वहीं राजस्व के विरोध में समय-समय पर श्याम गंगम एवं सुबल सिंह के द्वारा आयोजित चुआड़ विद्रोह, संथाल विद्रोह आदि ने राजस्व प्रशासन की कमर तोड़ दी। राज्य के लिए राजस्व अदायगी करने का अर्थ था – लोकप्रियता को खोना एवं विद्रोह को आमंत्रित करना। दूसरी ओर पूरे वर्ष उत्सव, त्योहारों एवं अनुष्ठानों के आयोजन से राजकोष खाली हो गया। राजा के बच्चे भी बढ़ते गये एवं राजमहल के खर्च में भी वृद्धि होती गई। शनैः शनैः राजा नीलमणि को समाज-कल्याण के कार्यों जैसे कुएँ बनवाना, तालाब खुदवाना, स्कूल खुलवाना आदि बन्द करने पड़े, पर राजा नीलमणि की आत्मा कराह रही थी पर वे कर ही क्या सकते थे? जैसे पेट में रोटी न रहने से भजन नहीं होता उसी प्रकार राज्य में राजस्व न रहने से राज्य नहीं चलता।

सात आठ वर्ष राजा के प्रतिनिधियों ने यह कहकर टाल दिया—"पन्द्रह मास की अव्यवस्था को ठीक करने के लिए राजा को पन्द्रह वर्ष लगेगें।" जनता ने धैर्य किया पर अब धैर्य के बाँध भी टूटने लगे। राजा नीलमणि जनता के सुख-दुख को भली-भाँति जानते थे अतः उन्होंने एक दिन कहा, "सचिव! अब राज्य के काम-कर्म हमारे नियंत्रण के बाहर जा रहे हैं। तुम कुछ करो।" सचिव ने कहा, "हुजूर, आपकी कृपा एवं श्याम रघुवर की कृपा से सभी ठीक हो जायगा।" राजा इस पर क्रोधित हो उठे एवं बोले, "तुम्हारी इन चाटुकारी बातों से ही आज राज्य का सर्वनाश हो गया हैं। राजपुरोहित को बुलाकर अभी मुझे इस समस्या का हल चाहिए।"

राजपुरोहित ने कहा, "महाराज,! आपके समक्ष मैं इस युग के एवं बंगाल के गौरव हिन्दुस्तान के महान विद्वान, बुद्धिजीवी पण्डित माइकेल मधुसूदन दत्त का परिचय कराता हूँ। वे आज विश्व की दस भाषायें जानते हैं, लिख सकते हैं, बोल सकते हैं। अंग्रेज महाप्रभु उनकी प्रतिभा का लोहा मानते हैं। हम ऐसे व्यक्ति को अपने समाज का युवावतार कह सकते हैं। आज भी गुलाम भारत में प्रतिभा की कमी नहीं है। हमें सोते हुए हिन्दुस्तान में दीपक लेकर प्रतिभा को खोजना होगा।

महाराज नीलमणि ने तुरन्त राजी होकर कहा, "राजपुरोहित जी का प्रस्ताव अति सुन्दर है। मैंने भी अपने जेल-जीवन काल में पण्डित माइकेल मधुसूदन दत्त के विषय में अनेक कुछ सुना था और पढ़ा था। पर क्यों इस छोटे से राज्य में नौकरी करने आयेगें ?"

सचिव ने राजपुरोहित का पलड़ा भारी होते देखकर कहा, "राजन ! यह कार्य आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।"

एक दो दिन में ही सचिव महाशय कलकत्ते पहुँचे एवं बिना निमंत्रण के माइकेल के घर पधारे। उन्होंने प्रारम्भिक वार्तालाप के पश्चात माइकेल को पुरुलिया आने का निमंत्रण दिया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार भी कर लिया।

कुछ माह पश्चात एक मुकदमे के सिलसिले में माइकेल मधुसूदन दत्त पुरुलिया पधारे। तुरन्त ही कानों-कान यह समाचार राजा तक पहुँच गया जैसे आजकल नानी पालकी वाला के आगमन की सूचना तुरन्त ही हो जाती है अथवा अमिताभ बच्चन और हेमामालिनी को। कोई प्रचार को आवश्यकता ही नहीं होती। राजा ने सचिव को बुलाकर कहा, "भाई ! क्या आपने सुना है कि हमारे राज्य में श्री माइकेल मधुसूदन पधारे हैं ? उन्हें राज दरबार में आने का निमंत्रण मेरी ओर से दो। राज दरबार को पूर्ण रूप से सजाया जाय। राजाज्ञा पाकर सचिव एवं पुरोहित माइकेल मधुसूदन को लेने पुरुलिया चले गये। माइकेल का काशीपुर में राजसी सम्मान हुआ। स्वयं राजा ने अभ्यर्थना करते हुए कहा, "यह राज्य आप जैसें विद्वान के पदार्पण से उपकृत हैं। मैं अपनी एवं राज्य की जनता की ओर से आपका स्वागत करता हूं।" सचिव एवं राजपुरोहित ने भी माइकेल की प्रशंसा में गीत गाये। अपने उत्तर भाषण में माइकेल ने सभी को कृतज्ञता एवं राजा के प्रति अपार श्रद्धा प्रकट की। राजा नीलमणि ने प्रस्ताव रखा, "मैं चाहता हूं कि आप हमारे राज्य में रहकर कला, संगीत एवं साहित्य का विकास करें एवं इस राज्य के राजस्व में वृद्धि करें। यह राज्य आपका सभी खर्च वहन करेगा एवं सभी शर्तें मानने को तैयार है।" माइकेल भी शराब पीकर अपने सभी रुपये गंवा चुका था

और आर्थिक अभाव के दौर से गुजर रहा था। अतः माइकेल ने कहा, "महाराज मेरी शर्तें हैं कि मेरा एक पृथक भवन हो जिसमें मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता हो क्योंकि मैं विदेशों में पढ़ा हूँ।

दूसरे साहित्य साधना के साथ मुझे राज्य कर्म में भी एक महत्वपूर्ण पद चाहिए ताकि मैं अपने सभी सिद्धान्तों का मुक्तहस्त प्रयोग कर सकूँ।" राजा ने इस अन्तिम निर्णय में किसो की राय न ली क्यों कि यह निर्णय स्वयं सचिव आदि के विरूद्ध था।

राजा ने कहा, "एवमस्तु !"

कुछ महीनों पश्चात् माइकेल मधुसूदन सभी सामान सहित काशीपुर आ पहुँचे। शानदार उत्सव के माध्यम से उन्होंने पंचकोट राज्य के मैनेजर (स्टेट) का पद सम्भाला। उन्हें जो कार्य दिए गए—वे थे—साहित्य, कला एवं संगीत का विकास, कोयले से प्राप्त राजस्व की उपलब्धि, तत्सम्बन्धी सभी विवादों का निबटारा एवं अदालतों के कार्य। उनके निर्णय सीधे राजा तक जाने थे। सचिव एवं राजपुरोहित को उनमें आपत्ति करने की आज्ञा न दी।

माइकेल ने राज्य के अविकसित अनेकों वाद यन्त्रों को मंगाया एवं प्रसिद्ध शिल्पियों एवं संगीतज्ञों को उन्हें उन्नत करने को दिया। बड़े-बड़े ढोलों, नगाड़ों आदि का विकसित रूप तैयार हुआ। उन्होंने आदिवासियों की भाषा लिपि एल्चिकी को एक बद्ध करवाया, संगीत एवं भूमिजों के साहित्य के विकास में अपना अधिकांश समय व्यतीत किया। बनारस एवं कलकत्ते से नृत्यिकाओं के स्थान पर उन्होंने राजदरबार एवं राजमहल में आदिवासियों के मुँखस्थ नृत्य अर्थात् दो नृत्यों का आयोजन करवाया एवं उन नृत्यों में रामायण एवं महाभारत की मौलिक कहानियों के आधार पर अनेक संशोधन किए। राज्य की आमदनी में भी वृद्धि होने लगी। राजा नीलमणि अपने नये मैनेजर के कार्य से अधिक प्रसन्न हुए एवं शनैः शनैः सभी विषयों में माइकेल की राय लेने लगे। माइकेल के बढ़ते हुए प्रभाव एवं राजा से उसके सानिध्य को देखकर सचिव एवं

राजपुरोहित एक दिन माइकेल के निवास पर गये और कहने लगे, "हम लोग ही तुम्हें यहाँ लाये थे अब तुम हमारे ही पेट में लात मार रहे हो।"

माइकेल ने कहा, "मेरा यह उद्देश्य नहीं है। मैं अपनी प्रतिभा का दमन कैसे कर सकता हूँ ? अच्छा, मैं आप लोगों का ध्यान रखूंगा।

एक दिन राजा एवं रानी बैठकर माइकेल से पंचकोट एवं पुरूलिया पर कविता सुन रहे थे। महल का सभी स्त्री-वर्ग माइकेल के व्यक्तित्व से मन्त्र-मुग्ध था। राजा को प्रसन्नचित्त देखकर माइकेल ने कहा, "सुना है कि गवर्नर जनरल की ओर से पंचकोट को राज्य की सीमा पर कोयले खोजने एवं निकालने का आज्ञापत्र दिया जा रहा है। यह आपकी सार्वभौमिकता के विपरीत है। एवं इससे राज्य के राजस्व को क्षति पहुँचेगी।

राजा नीलमणि ने कहा, "ज्ञात होता है कि इन गोरों के विरूद्ध एक और स्वतन्त्रता संग्राम करना होगा। माइकेल ने बीच में ही पटुता पूर्वक कहा, "राजा साहब ! ब्रिटिश राज्य इस क्षेत्र में आज सर्वप्रभुता सम्पन्न हैं। वे पंचकोट राज्य के विरुद्ध किसी भी दिन और किसी भी प्रकार का जेहाद खड़ा करके आपकी शान्ति भंग कर सकते हैं। मैं इस विषय को अदालतों के माध्यम से प्रिवी कौन्सिल तक ले जाऊंगा जहाँ न्यायप्रिय अंग्रेज जज हमारे पक्ष में निर्णय देगें। यह कैसा विरोधाभास हैं ? भूमि के धरातल पर पंचकोट राज्य का स्वामित्व हैं, जबकि जमीन के नीचे आज्ञापत्र ब्रिटिस राज्य दे रहा हैं। अन्त में राजा नीलमणि ने कहा, "अच्छा, मैं आपके ही निर्णय को इस विषय में अन्तिम मानूंगा। राज्य के राजस्व में वृद्धि अति आवश्यक है। आप जो चाहें सो करें।"

राज्य की आमदनी एवं खर्च का विवरण पेश किया गया। उससे भी यह स्पष्ट हो गया कि राज्य के राजस्व एवं सम्पत्ति का दिन पर दिन ह्रास होता जा रहा है।

माइकेल एक बड़े विधि-वेत्ता थे। उन्होंने जिला अदालत से इस विषय में कई मामले जीतकर पंचकोट के लिए आमदनी का नया स्रोत खोल दिया।

राज्य के खर्च में भी उन्होंने अपार कटौती की, चाटुकारों एवं बाहरी नाच-गान पर अपव्यय कम किया। उन्होंने आदिवासी जनता के प्रेम में अनेकों गीत लिखे एवं पुरूलिया को पाषाण देश कहकर इसकी धरती के अपार प्रेम में कुछ समय के लिए खो गये।

राज्य की आय बढ़ाने के लिए माइकेल ने कर्मचारियों एवं घटवाल सरदारों को खूब बुरा भला कहा एवं राजा नीलमणि से कहकर एक दो कर्मचारियों को तो नौकरी से ही बर्खास्त कर दिया। नये मैनेजर की बढ़ती हुई शक्ति एवं नियम पूर्वक कार्य से राज्य में निहित स्वार्थों को आघात पहुँचा, जो अभी तक जनता से राजस्व अदायी करके राजा तक नहीं पहुँचाते थे एवं राजा की ओर से व्यय धन को जनता के कल्याणमूलक कार्य में न लगाकर स्वयं के हित में लगाते थे। शनैः शनैः राजमहल के सभी कर्मचारी एवं चाटुकार ऋण में दब गये क्योंकि अब खर्च कम करना उनके बस में नहीं था। माइकेल ने एक दिन राजा से अकेले में कहा, "सरकार! आप से ये लोग मिथ्या बोलकर पैसा लेते हैं। इससे राज्य की जनता के धन का क्षय एवं आपकी जनता में लोकप्रियता कम हो रही है। इस प्रकार राजा ने माइकेल पर अत्यधिक विश्वास करना आरम्भ कर दिया। सचिव राजपुरोहित सभी ने संगठन किया एवं प्रस्ताव किया, "जब तक माइकेल मधुसूदन दत्त रहेंगा, हम लोगों के सभी स्वार्थों को अत्यन्त खतरा है। भविष्य में हमलोगों का जीविका-निर्वाह भी संकट में पड़ सकता है। अतः जितना शीघ्र हो उसे राज्य से निकालने का षड्यन्त्र करना चाहिए।"

पर माइकिल की प्रतिभा से सभी चमत्कृत एवं भयभीत थे। अतः बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधे ? अन्त में सभा में बैठे राज्य नापित ने कहा, पर उसकी शर्त थी, 'यदि इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ हुआ तो राजा या तो मुझे मार ही डालेगें अथवा मेरी नौकरी तो अवश्य ही जायेगी! इस परिस्थिति में आप लोगों को मेरे परिवार की देखभाल करनी पड़ेगी।"

सभी ने एक स्वर में कहा, "अवश्य ही।" इसके पश्चात् सभी ने श्याम रघुवर राज्य देवता की शपथ लेकर प्रतिज्ञा की कि वे उसे रहस्य ही रहने

देगें। दूसरे ही दिन जब वह नापित बाल काट कर राजा की मालिश कर रहा था, तब राजा को अच्छे मिजाज में देखकर उसने कहा, "राजन्! यदि आप मुझे दंडित न करें और आज्ञा दें तो मैं आप को एक रहस्य की बात बता सकता हूँ।" राजा ने उत्सुकता पूर्वक कहा, "तुम निर्भय हो कर बोलो।"

नापित ने कहा, "श्रीमान्! शायद आप अपने नये मैनेजर के विरुद्ध कुछ भी नहीं सुनना पसन्द करेंगे।"

राजा की उत्सुकता और भी बढ़ी एवं उन्होंने नापित को रहस्य बताने के लिए आदेश दिया। नापित ने हाथ जोड़कर कहा, "महामान्य! ज्ञात होता है कि नये मैनेजर को आपके कमल मुख से कुछ बदबू आती है इसलिए वह वार्तालाप के दौरान सब समय स्वयं के मुख पर रूमाल रखे रहता है। और जब भी आप उसके पास जायेंगे, वह दूर हटता जायगा।"

अगले दिन ही राजा ने माइकेल को अपने पास बुलाया एवं इस सत्य का परीक्षण किया। राजा ने देखा कि वास्तव में मधुसूदन उनसे बात करते समय रेशमी रूमाल अपने मुँह पर रखता है एवं राजा को ज्ञात हुआ जैसे वह राजा से घृणा करता था। वास्तव में जैसे ही राजा आगे बढ़ते गये, माइकेल पीछे हटता गया। फलतः राजा का विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि मधुसूदन में उच्च भाव हैं एवं वह सिंह वंश से घृणा करता है।"

रानी से सलाह करके दूसरे दिन ही राजा ने मधुसूदन दत्त को बिना कारण दर्शाये राज्य से निकल जाने का आदेश दे दिया। माइकेल कुछ भी न समझ सका। उसकी व्यक्तिगत आर्थिक अभावस्था पर एक और बज्रपात हुआ। भ्रष्ट समाज की जीत हुई और ईमानदार तथा स्वच्छ प्रशासन का पक्ष हार गया। माइकेल राजा के धार्मिक विचारों एवं देशभक्ति से इतना खुश था कि वह राजा के लिए तन और मन से काम कर रहा था। अतः इस घटना से माइकेल को इतना भावनात्मक आघात पहुँचा कि वह थोड़ा भी समय नष्ट न कर सम्मान सहित कलकत्ते लौट गया। उसके मन में बार-बार यह बात आन्दोलन कर रही थी "मैं तो राजा को अधिक सम्मान दिखाने के लिए अपने

मुख पर रूमाल रखता था ताकि राजा को मेरे मुख से मद्य की बदबूं न आये क्योंकि मद्य की बदबूं उन्हें अप्रिय थी। मैं इस प्रकार उनका सिद्धान्त अथवा धर्म भी नष्ट करना नहीं चाहता था क्योंकि राजा मद्य सेवन से घृणा करते थे।

जीवन से निराश होकर माइकेल अपने एक मित्र के साथ, जिसके लड़के के विवाह में उन्होंने पुरूलिया के लूथरन चर्च में पिता की भाँति हस्ताक्षर किये थे, सरांयकेला आ गये। सरांयकेला में उनका एवं उनकी प्रतिभा का भव्य स्वागत हुआ एवं उनके सम्मान में उच्च कोटि के दो नृत्य का आयोजन हुआ। वह हताश होकर कलकत्ते लौट आये। उन्हें दुःख था कि पंचकोट राज्य में नौकरी करके भी वे अपने ऋणों का शोध नहीं कर पाये। कुछ समय पश्चात् उनके मित्र ने उनको दो तीन मास का बकाया वेतन उनके पास पहुँचा दिया।

माइकेल का यह शोक उनके परवर्ती लेखन एवं कविता में व्यक्त हुआ। आश्चर्य है भ्रष्टाचारी संगठन की शक्ति के ऊपर।

नौ

माइकेल मधुसूदन दत्त तो पंचकोट राज्य छोड़कर चले गये पर वहाँ के प्रशासन पर एक अमिट छाप छोड़ गये। उनके प्रस्थान पर राजा नीलमणि ने उनके किये गये सुधारों को द्विगणित उत्साह से लागू किया एवं राज्य में स्वच्छ प्रशासन की शपथ ली। माइकेल के सिद्धान्त चारों ओर गूंजने लगे, राज्य के अभाव कम न हुए।

राजा नीलमणि सिंह की राष्ट्रभक्ति कष्ट एवं अभावों के कारण कम नहीं हुई। अपितु विशुद्ध सोने की भाँति अग्नि में देने पर उसमें और चमक आ गयी। इसी समय कांग्रेस का सूर्य पूर्ण तेज के साथ दीप्तिमान हो रहा था एवं राष्ट्रभक्ति के क्षेत्र में सभी दीवाने प्रवेश कर रहे थे। स्वतंत्रता

एवं कांग्रेस में ऐसा सम्बन्ध था जैसे दो शब्दों के एक ही अर्थ हों। अतः राजा नीलमणि सिंह ने कांग्रेस का साथ दिया और वे महात्मा गांधी के अनुयायी हो गये।

तत्कालीन अंग्रेजों के विरूद्ध एवं सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध जैसे राजा राममोहन राय द्वारा जो आन्दोलन सारे प्रांत में आरम्भ हुआ, इस क्षेत्र में उनका निवास स्थान सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुधारों का जीवंत केन्द्र बना। इन सभी कार्यों से राज्य का धन एवं राजस्व पूर्व से कम हो गया एवं राजमहल में भी खाने का अभाव होने लगा। सामाजिक कार्यो में उनकी अत्यधिक अभिरूचि के कारण अन्य राजमहल के कार्यों में वे ध्यान न दे सके। इसी उपेक्षा के कारण उनके लड़कों की उचित शिक्षा नहीं हो सकी। धीरे-धीरे राजमहल में गाना, वजाना, ऐशो-आराम एवं बिलासिता कम होती गयी एवं महल के भीतर के अनेक चाकरों एगं नौकरानियों ने स्थानीय एवं वाहरी धनी व्यक्तियों का सहारा लिया। राजा की उपेक्षा-दृष्टि से परेशान होकर सरगुजा की रानी अनूपकुमारी अपने पिताके घर चली गयीं एवं वही उन्होंने प्राणत्याग किया। राजा को राष्ट्रभक्ति का इतना गहरा नशा हो गया कि राज्य के अन्य सभी नशे उसके सामने फीके एवं श्रुतिहीन ज्ञात हुए। चाटुकारों एवं चमचों का ह्रास हो गया।

उनके सबसे बड़े लड़के जयनारायण सिंह की आसमयिक मृत्यु हो गयी। राष्ट्र भक्ति एवं राजमहल में सामंजस्य करते-करते राजा का हृदय दुर्बल हो गया। राज महल के सभी लोग राजा से अप्रसन्न रहने लगे एवं अन्य देश भक्तों की भाँति इस राजा देशभक्त का अन्तिम जीवन कष्ट में व्यतीत हुआ एवं १८९८ में वे चल बसे।

उनकी मृत्यु पर भारत के तत्कालीन बड़े-बड़े कांग्रेस सेनानियों ने श्रद्धांञ्जलि अर्पित की। अंग्रेजों ने भी बन्द हृदय से उन्हें श्रद्धाञ्जलि दी एवं इस राज्य के प्रति प्रजातंत्र प्रेमो ब्रिटिश राज्य की प्रतिकार भावना न रही।

उनकी मृत्यु के पश्चात रानी चित्र कुमारी से जन्मे राजा के छोटे पुत्र हरि-

नारायण सिंह गद्दी पर बैठे। हरिनारायण सिंह का स्वास्थ्य उत्तम नहीं रहता था तथा वे राज के कार्यो में कुशल नहीं थे। अपने शासनकाल १८९९-१९०७ के ८ वर्ष किसी प्रकार निकाल कर चल बसे जैसे आजकल अनेक अफसर अपने समय को न कार्य करके गुजारना चाहते हैं।

हरिनारायण सिंह के शासनकाल में राज्य के राजस्व को कुछ भी सहारा नहीं प्राप्त हुआ। सेना को कम करना पड़ा एवं राजमहल में सभी को अनुभव हुआ कि पूरे दिन गाने बजाने एवं सायंकाल नृत्य देखकर जीवन व्यतीत करना एक दुस्साध्य कार्य है।

आधुनिक काल के हाथ तेजी से इस राज्य की मान्यताओं पर अधिकार कब्जा कर रहे थे एवं राज्य के चारो ओर विकास से राज्य पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ रहा था। फलस्वरूप इस राजतंत्र की मान्यतायें भंग हो रही थी। राज्य की आदिवासी एवं पिछड़ी जाति सोच रही थी कि सभी अव्यवस्था एवं शोषण के रहते हुए भी आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति के सत्य को स्वीकार एवं आत्मसात करना ही पड़ेगा। पंचकोट के राजाओं ने उस सत्य को शीघ्र एवं उचित समय पर आत्मसात कर लिया। इसलिये भारत के रजवाड़ों एवं रियासतों के इतिहास में पंचकोट राज्य एवं उसके राजा आधुनिक विचारधारा में अग्रणी माने जाते हैं। राज परिवार के कुछ सदस्यों ने अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया एवं उन्होंने राजकुमार कालेज, रायपुर में शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की। राज्य में प्राप्त कोयले का महत्व दिन दूना एवं रात चौगना बढ़ रहा था। बाहर की विभिन्न देशी-विदेशी कम्पनियाँ इस कोयले को भू-गर्भ से निकालने के लिये राजा से पट्टा प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन खड़ी रहती थी। यूरोप में जो औद्योगिक विकास हुआ था उसकी किरणें भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम पर पड़ीं, इस विकास का केन्द्र था स्टील एवं कोयले का उत्पादन। जमशद ज़ी टाटा पंचकोट राज्य में काली माटी, पार्श्ववर्त्ती प्रदेश में स्टील का कारखाना स्थापित करने के प्रयत्न में यहाँ चक्कर लगाने लगे। इस प्रकार राजा की ज़मीदारी का महत्व अधिक बढ़ गया एवं राज्य को

कोयले के पट्टों के लिये अधिकार पत्र देने के लिये काफी राज़स्व प्राप्त होना आरम्भ हो गया। इसका कार्यभार राज़ा हरि नारायण सिंह देव ने अपने सबसे बड़े पुत्र एवं राज्य के उत्तराधिकारी ज्योति प्रसाद देव को सौंपा। वे अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से राजकुमार कालेज़ में पढ़े थे एवं विधि विषयक कार्यों में निपुण थे। राज्य का राजस्व बढ़ने लगा, साथ में काशी पुर के राजमहल में फिर से नाच गाना आरंभ हो गया, दान दक्षिणा बढ़ने लगी तथा धार्मिक सामाजिक उत्सवों का राजमहल से आयोजन होने लगा। इस प्रकार पंचकोट राज्य देश के आधुनिक नक्शे पर आ गया।

इस राज्य के अन्तर्गत रानीगंज एगं झरिया क्षेत्रों में विराट कोयले की सतह पायी गयी। इस कोयले की किस्म इतनी उत्तम थी कि ब्रिटिश प्रभु भी स्पृहा करने लगे। यूरोप के अनेक व्यापारी भी जहाजों की खोज में लग गये ताकि इस सर्वोत्तम प्रकार के कोयले को उनके देश निर्यात किया जा सके यद्यपि इस राज्य की धरती के नीचे प्राय: सभी स्थानों पर कोयला था पर कोयले के दाम कम एवं निकालने में निहित श्रम एगं अर्थ व्यय की दृष्टि से कोयला सभी जगह निकालना उचित न हुआ।

बन समाप्त हो रहे थे, जीवन मान में उन्नति हो रही थी। अतः कोयले की माँग भी बढ़ने लगी। भूमि के नीचे का अधिकार पंचकोट राज्य का ही था। ब्रिटिश राज्य के पूर्ववर्ती समझौतों के अनुसार केवल भू राजस्व से प्रयोजन था। अतः पंचकोट राज्य का महत्व बढ़ गया एगं भारत के बड़े-बड़े राज्य इस उभरते हुये छोटे राज्य के उज्जवल भविष्य को देखते हुये उस राज्य के राजाओं से पारिवारिक सम्बन्धों के लिये आकांक्षी होने लगे। ऐसा ज्ञात होता था जैसे यह काला कोयला पंचकोट के भविष्य को धवल कर देगा।

दस

हरिनारायण सिंह देव के स्वर्गारोहण के पश्चात् श्री ज्योति प्रसाद सिंह देव राज सिंहासन पर बैठे। उन्हें राज-काज की काफी जानकारी थी। वह एक पढ़े-लिखे एवं बुद्धिमान व्यक्ति थे। पंचकोट राज्य के वैभव एवं भविष्य की आशाओं को दृष्टिगोचर करते हुए मयूरभंज उड़ीसा के राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह ज्योति प्रसाद सिंह देव से किया। मयूरभंज राज्य पूर्वी भारत का एक अत्यन्त विस्तृत एवं विकसित राज्य था। राज्य-कार्य की अधिकांश शिक्षा एवं प्रेरणा राजा ज्योति प्रसाद को अपनी ससुराल मयूरभंज से प्राप्त हुई। मयूरभंज राज्य में भी खनिज प्रचूरमात्रा में उपलब्ध थे तथा उस राज्य की आमदनी का यह मुख्य स्रोत था। मयूरभंज के राजा पंचकोट के राजाओं की भाँति संतोषी एवं धार्मिक नहीं थे। वह उस युग की भौतिक दौड़ में भाग रहे थे। राजा ज्योति प्रसाद में कार्य प्रवणता एवं कुशलता वहीं से जागृत हो चुकी थी। वे अपनी ससुराल के धन से अपने राज्य की तुलना करके पीछे नहीं रहना चाहते थे। अतः राज्य की बागडोर सम्भालते ही वे राज्य के बहुमुखी विकास में लग गये। उनके कार्यों में प्रेरणा स्रोत थी उनकी धर्मपत्नी रत्ना मंजरी देवी। वे सब समय अपने अनुभव से राजा को राज्य-विकास के लिए सलाह देती थीं। रानी उस समय की इंटर कक्षा तक पढ़ी थीं। रामायण, गीता और महाभारत तो उन्हें मुखस्थ था एवं सुन्दरता में वे खजुराहो की किसी पत्थर प्रतिमा से कम नहीं थी। उनका रंग साफ, ऊँचाई उत्तम एवं शरीर दुबला-पतला था। वे राजमहल के भीतर योग्य शासन में दक्ष थीं एवं शासन सुचारु रूप से करती थी। सभी उनकी प्रतिभा से प्रभावित थे तथा आदर सहित उनके आदेशों का पालन करते थे। राजा ज्योति प्रसाद सिंह की एक मात्र रानी से

तीन पुत्र रत्न प्राप्त हुये। पुत्रों को उन्होंने उचित एवं उच्च शिक्षा हेतु रायपुर के राजकुमार कालेज में भेजा। यहाँ पर विभिन्न स्थानों के राजाओं एवं सरदारों के लड़के आदि शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

इस कालेज में घुड़सवारी, सभी प्रकार के खेल, रजवाड़ों एवं रियासतों के प्रशासन के विषय में शिक्षा दीक्षा सभी अंग्रेजी माध्यम से दी जाती थी। पूर्वी अंचल से सभी राजघरानों के लड़के यहाँ पढ़ने आते थे। राजस्थान के राज घरानों के लिये अजमेर कालेज खुला जबकि उत्तरी भारत के राज घरानों के लिए कालिवन तालुकेदार कालेज। आजकल भी ये कालेज विख्यात हैं पर वर्तमान में तथाकथित राजघरानों के लड़के अधिकांश दून स्कूल, देहरादून, सेन्ट जोसेफ, दार्जलिंग एवं शेरकुंड, नैनीताल में पढ़ते-लिखते है।

जैसा कि राजा-महाराजाओं के विषय में प्रचलित है कि जैसे-जैसे राज्य का वैभव बढ़ता है, वैसे-वैसे राजा का हरम बढ़ता है। राजा ज्योति प्रसाद भी इस संक्रामक व्याधि से दूर न रह सके। उनका हरम अत्यन्त खुशहाल था। उनके हरम में उनकी सात-आठ रखैल थी। रानी रत्ना मंजरी देवी प्रथम रानी थीं जिन्होंने राजा के इस कार्य को तनिक भी घृणा की दृष्टि से नहीं देखा, वह तो उस समय की सामान्य परम्परा थी एवं उनके मायके मयूरभंज में भी यह और बड़े पैमाने पर व्याप्त थी। किंवदन्ती थी कि यदि राजा सुरा-सुन्दरी का उपभोग न करता तो वह सभी कुछ भूल कर अपने जीवन का खतरा उठा कर कैसे युद्ध में जीवन बलिदान दे सकता था। आजकल के नियमों से बंधे एवं विधि पुस्तकों से संचालित नूतन राजा वर्ग या उच्च राजनीतिक वर्ग या उच्च अफसर वर्ग जितना ही नियमों के पालन में अपनी आहुति दें दें पर वर्तमान मान्यताओं के ढांचे में शारीरिक आनन्द भोग नहीं कर सकते। उस समय राजा को कलम एवं तलवार दोनों एक साथ समान शक्ति से पकड़नी पड़ती थी। यही कारण है कि सैन्य संगठनों में आज भी इस पर पाबन्दी नहीं है, विशेषतः सुरा पर। दूसरी ओर इस विचार के समर्थकों का कहना है कि प्रेम की सीमा अबाध है अतः यदि यह एक से अधिक लोगों में विभाजित हो जाये तो कोई भय नहीं।

यदि प्रेम के साथ कर्तव्य रानी की ओर रहे तो निरपेक्ष वासना दूसरी ओर होने से कोई क्षति नहीं। आजकल पश्चिमी देशों में दूसरी विचार धारा का कुछ मूल्य है पर दिल और दिमाग वासना के साथ कहीं चला जाये, यह नियंत्रण करना दुस्ताहय कार्य है। असामान्य व्यक्ति ही ऐसा कर सकते हैं।

राजा ज्योति प्रसाद सिह देव को पंचकोट राज्य का अकबर कहा जाता है। उनके समय में राज्य का विस्तार सर्वाधिक था एवं वह इक्कीस कहान के राज्य का कथन चरितार्थ हुआ। समृद्धि की दृष्टि से कहा जाये तो यह पाँच करोड़ वार्षिक राजस्व का राज्य था जिससे नीलमणि सिंह देव के समय कहा जाता था कि दूसरी नीलामी पाँच बार हुई थी। पर यह सत्य है कि राजा ज्योति प्रसाद एक सुलझे मस्तिष्क के व्यक्ति थे। उन्होंने कोयले उद्योग में लगी कम्पनियों से बातचीत की ताकि उन्हें पट्टे कुछ नियमों के अनुसार दिये जा सके। इनमें तीन कम्पनियाँ प्रसिद्ध थी—बंगाल कोल कम्पनी, जिसमें देवेन्द्र नाथ टैगोर भी एक निर्देशक थे, ओरियन्टल कोल कम्पनी एवं ईस्ट इंडिया कोल कम्पनी। वे राजा ज्योति प्रसाद को चार पैसा अथवा एक आना प्रति टन सलामी देते थे। इन कम्पनियों का राजा ने अनेक क्षेत्रों में बन्दोबस्त किया एवं इनके माध्यम से कोयले की खुदाई मनों से लाखों टनों में पहुँच गयी। इन कम्पनियों के प्रबन्धक उन दिनों के प्रसिद्ध व्यक्ति थे, जिनका आर्थिक ही नहीं, सामाजिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में भी नाम था। कोयले का उद्योग अभूतपूर्व विकसित हुआ।

कोयले के क्षेत्र में धोखेबाजी, कालाबाजारी एवं भ्रष्ट प्रशासन का आरम्भ कम्पनियों की परस्पर प्रतियोगिता के कारण आरम्भ हुआ यद्यपि कोयले का अधिकार शुल्क प्रति टन अति कम था पर सलामी या पगार का प्रारम्भिक मूल्य बहुत अधिक था। सलामी न प्राप्त होने से कोयले के क्षेत्र में कार्य करने का आज्ञा-पत्र प्राप्त नहीं हो सकता था। अतः सलामी राज्य मान्यता प्राप्त एक रिश्वत थी। राजा ज्योतिप्रसाद ने लगभग एक करोड़ रुपये का अधिकार शुल्क प्राप्त करके अधिकांश कोयले के क्षेत्रों को पट्टे पर दे दिया। अस्सी प्रतिशत

अंश उपयुक्त तीन कम्पनियों को प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त दिन-प्रतिदिन कोयले को अधिकार शुल्क से बचाने के लिए कम्पनियों ने सभी प्रकार से राजा की सेवा करने में होड़ आरम्भ कर दी। एक जनसम्पर्क अधिकारी को काशीपुर में तैनात कर दिया गया जिसका कार्य था—राजा के मिजाज को ठीक रखना। राजा को सुन्दरियों का शौक इन्हीं कम्पनियों ने आरम्भ करवाया। इसके पूर्व पंचकोट के राजा अपने राज्य के सौन्दर्य तक ही सीमित थे, अब वे बाहर निकल पड़े एवं ये लोग राजा के विश्वास पात्र हो गये। तीनों कम्पनियों ने राजा को एक-एक कार भेंट दी। जमशेद जी टाटा में, राजा ने एक ईमानदार एवं लगनशील भारतीय उद्योगपति का भविष्य देखा एवं उन्होंने सभी प्रकार से उनकी सहायता की। कालीमाटी भी उनके बिहार का एक नया स्थान हो गया।

इस कोयले के वैभव से राजा ज्योतिप्रसाद की आँखे चकाचौंध हो गयीं पर उनकी अर्धांगिनी ने उन्हें वैभव के पंक में फसने से थाम लिया। राजा फिर से पंचकोट राज की प्राचीन धार्मिक परम्परा की ओर मुड़े एवं उन्होंने सलामी से प्राप्त इस अजस्र धन को चरित्र हानि पर खर्च न करके दान पुण्य में लगाया एवं एक नवीन महल बनवाने की सोची। भूमि राजस्व भी बढ़ गया एवं कोयले से दिन प्रतिदिन अधिकार शुल्क के माध्यम से मोटी आय हो गयी। नूतन कर्मचारियों को राजस्व अदायी के लिये नियुक्त किया गया। पंचकोट का राजकोष समृद्ध था। वेतन देने से लेकर प्रति दिन के राज खर्च तक कोई असुविधा न हुई। ऐसा ज्ञात होता था जैसे कि पंचकोट का कोष हिमालय था जिससे पूरे वर्ष हिमखंड पिघलकर भागीरथी में जल का अभाव नहीं होने देते थे।

ग्यारह

राजा के विवाह की वर्षगांठ का शुभ दिन था। राजा उस दिन अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने वही पोशाक पहन रखी थी जो उन्होंने अपने विवाह के दिन पहनी थी। प्रातः से ही बधाई देने वालों का तांता लगा था। राज्य की बढ़ती हुई समृद्धि एवं शक्ति को दृष्टि-गोचर करके उनका स्वास्थ्य भी उत्तम हो गया था। सायंकाल, राजदरबार लगा जिसमें बागमंडी, मयूर भंज, सरांयकेला आदि स्थानों से दो नृत्य के दल प्रतियोगिता में अंश ग्रहण करने आये थे। प्रसन्नचित्त मुद्रा में राजा ज्योति प्रसाद ने रानी रत्ना से कहा, "देखो, प्रिय ! तुम्हारे बहुमूल्य सुझावों के कारण आज पंचकोट राज्य की अत्यन्त उत्तम स्थिति है एवं आज हम हिन्दुस्तान के अग्रगण्य राजाओं में हैं।"

संध्या समय राजमहल को सजाया गया एवं राजा की प्रशस्ति एवं गुणगान से सभा का कार्य आरम्भ हुआ। राजपुरोहित ने कहा, "पंचकोट राज के राजा ज्योति प्रसाद सिंह की आज विवाह बर्षगांठ है। राजा के अपार दान पुण्य, ब्राह्मणों की ओर सहृदृष्टि एवं निर्धनों की ओर दयादृष्टि ने इस राज्य को पूर्वांचल में सर्वाधिक धनी राज्य बना दिया। यदि राजाज्ञा हो तो राजा के सामने राज्य में प्रचलित सभी विवाह पद्धतियों का बखान किया जाये ताकि राजा सामाजिक सुधार की ओर एवं महिलाओं की उन्नति के लिए कुछ कर सकें। राजा ज्योति प्रसाद ने रानी से अनुमति ली एवं उन्होंने इस प्रस्ताव के लिए सहमति दे दी। तदनुसार इस विषय में प्रवीण श्री राम प्रसाद महतो ने कहा, "राजन् ! सर्वप्रथम मैं संथालों में प्रचलित विवाह पद्धति बोलता हूँ जो कि इस राज्य में भूमिजों के पश्चात् दूसरे नम्बर पर है। संथालों में लड़के लड़कियों को विवाह के पूर्व प्रेम करने की स्वतंत्रता है पर माता-पिता के द्वारा

विवाह सम्बन्ध स्थापित करना उत्तम माना जाता था। लड़की को विवाह में खरीदने के लिए पांच रूपये दिये जाते हैं एवं लड़की के माता पिता को कपड़े इत्यादि। इसके पश्चात् लड़के का दल लड़की वाले के यहाँ जाता है पर सर्वप्रथम ग्राम में मुखिया के यहाँ जाता है। इसके पश्चात् ग्राम के मुखिया को लेकर वे सभी लड़की के घर जाते हैं। वहाँ दोनों ओर के दल गाने, नाचने एवं खाने लगते हैं तथा हंडिया पीते हैं। देर रात्रि में लड़की अपने भाई या जीजा के साथ एक टोकरी में बैठाकर लायी जाती है। इसके पश्चात् लड़का लड़की की मांग में सिंदूर लगाता है तथा सभी इकट्ठे लोग हरि बोल बोलते हैं। यहाँ विवाह हो जाता है इसके बाद खाना पीना चलता रहता है।"

रानी रत्ना ने कहा, "अब आप भूमिजों एवं खेरिया लोगों के विवाह पद्धति का वर्णन कीजिए।"

श्री महतो ने कहा कि भूमिज लोगों में विवाह पद्धति इस प्रकार है— "भूमिजों में लड़की का मूल्य ३ रु० से १८ रुपये तक है। लड़की के घर में एक चौकोर स्थान बनाया जाता है तथा चावल के पानी से उसमें सजावट की जाती है तथा महुआ एवं सिद्ध पेड़ों को केन्द्र में लगाया जाता है। चार मिट्टी के घड़े चार कोनों पर रखे जाते हैं। लड़के एवं लड़की दोनों को उसमें लकड़ी पर बैठाया जाता है। तत्पश्चात् ब्राह्मण मंत्र पढ़ता है तथा लड़का दीपक जलाता है और लड़की उसे बुझा देती है, ऐसा तीन चार बार होता है। उसके पश्चात् लड़की लड़के को दे दी जाती है। पुरोहित उनके दायें हाथ बाँध देता है। लड़का लड़की की मांग में सिन्दूर भर देता है तथा लड़के लड़की के कपड़े में गाँठ बाँध दी जाती है जो चार से दस दिन तक बंधी रहती है। एक आदमी अनेक विवाह अपनी क्षमता के अनुसार कर सकता है।"

"खेरिया लोगों में लड़के का पिता उस समय वधू देखने निकलता है जब लड़का हल चलाने योग्य हो जाता है। इसके पश्चात् लड़की देखकर विवाह पक्का होता है। लड़के के पिता को विवाह में लड़की के माता-पिता को मुर्गी, बकरियाँ भेड़े आदि देनी पड़ती हैं। खेरिया में लड़की का दल लड़के के यहाँ

जाता है। पूरी रात वे गाने बजाने, पीने में निकाल देते हैं तथा दूसरे दिन दोनों लड़के के घर के सामने बैठते हैं इसके पश्चात् दोनों एक दूसरे के मस्तक में सिन्दूर लगाते हैं, सभी खूब नाचने गाने एवं पीने लगते हैं तथा पुरोहित पूजा करता रहता है तथा दूसरे दिन लड़की का दल लड़की को छोड़कर वापिस चला आता है।''

रानी रत्ना मंजरी देवी ने कहा, ''ये सभी बहुत आश्चर्यजनक पद्धतियाँ हैं। शहर के लोग तो इन पर विश्वास ही नहीं करेगें।''

राजा ज्योति प्रसाद ने कहा, ''क्या शहर के लोग विश्वास करेगें कि आज भी यहाँ बीरहर जाति के लोग घरों में नहीं रहते एवं पूर्णतः नग्न अवस्था में रहते हैं ? उनका खाना है वृक्षों की जड़ें एवं फल-फूल। वे शिकार करके ही जीवनयापन करते हैं। क्या कलकत्ते में रहने वाले विश्वास करेगें कि पंचकोट में अधिकांश जनता का जीवन वन पर ही निर्भर है ? मैं सोचता हूँ कि उनकी परम्पराओं का हमें सम्मान करना चाहिए एवं उनके खान-पान, रहन-सहन एवं धर्म को परिवर्तित नहीं करना चाहिए। वे चाहे तो ऐसा करें।''

मैनेजर साहब ने कहा, ''पर आजकल के वैज्ञानिक प्रभाव से क्या हम उन्हें इस समय अछूता रख सकते हैं।''

राजा ज्योति प्रसाद ने कहा, ''यह ठीक है कि विज्ञान का एवं विकास का प्रभाव उनके जीवन पर शनैः शनैः पड़ेगा एवं वे उससे पृथक नहीं रह सकते, पर हम उनके जीवन पर 'प्रशासन की ओर से नहीं सोचेगें। आजकल तो लोग यहाँ तक कहते हैं कि हम लोगों की यह राज्य व्यवस्था राजनैतिक एवं अर्थ नैतिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। मैनेजर ने बीच में टोकते हुए कहा, ''पर राजन् ! आज हम यदि प्रजातन्त्र को ले, उसमें जो छोटे-छोटे राजा हो जाते हैं वे अपना घर भरते हैं जनता का शोषण कम नहीं होता। सरकारी अफसर वर्ग स्वयं के घरों में भ्रष्ट माध्यमों से धन दौलत इकट्ठा करते हैं। साम्राज्यवाद में तो राजा का घर प्रारम्भ से धन-धान्य पूर्ण होता है। अतः वह प्रवृत्ति नहीं होती। इससे जनता को सभी समय शोषण का सामना नहीं करना पड़ता।''

रानी रत्ना मंजरी ने बीच में टोकते हुए कहा, "आज हम यहाँ उत्सव मनाने के लिए बैठे हैं, अतः इस चर्चा को हम यहाँ ही बन्द कर दें।"

मैनेजर ने कहा, "जो आज्ञा।"

इसके पश्चात् दो नृत्य की प्रतियोगिताएँ आरम्भ हुई। सर्वप्रथम माँ दुर्गा की पूजा एवं महिषासुर बध से दो नृत्य आरम्भ हुआ। जो व्यक्ति शेर बना था उसका उछलना तो देखते ही बनता था। माँ दुर्गा की पूजा के बाद और प्रदर्शन हुए। उसके पश्चात् गणेश एवं कार्तिकेय के युद्ध की कथा को मुखस्थ एवं शारीरिक प्रदर्शन से दर्शाया गया। एक व्यक्ति ने शिवजी का मुखस्थ तथा वस्त्र पहना तो दूसरे ने गणेश जी एवं कार्तिकेय का तथा चौथे ने सती का, इस प्रकार पूरी कथा का सुन्दर परिवेषण हुआ।

अन्त में सरायकेला का दल प्रथम आया एवं पुरस्कार में रानी रत्ना मंजरी ने उन्हें बड़े-बड़े नगाड़े, ढोल, मंजीरे इत्यादि दिये तथा सभी के भोजन की व्यवस्था की गयी। दो नृत्य-दल की ओर से राजा का अभिनन्दन एवं प्रशस्ति गान हुआ।

बारह

साल, महुआ, पलास, केंद एवं कुसुम वृक्षों से आच्छादित उस जंगलमहल के क्षेत्र में काशीपुर जैसे रेगिस्तान में एक मरुद्यान था। राजमहल में विभिन्न गाड़ी बग्गियों की संख्या बढ़ी, हाथी-घोड़ों की संख्या में भी वृद्धि हुई एवं अनेक आमोद-प्रमोद के साधन जुटाये गये।

आधुनिक खेलों में टेनिस एवं बैडमिन्टन की व्यवस्था की गयी। राज घराने के सभी सदस्यों को शिकार का अत्यन्त शौक था। संगीत तो जैसे खाने के पश्चात राजघराने की द्वितीय आवश्यकता थी। राजा ज्योतिप्रसाद

के समय पूरे दिन राजमहल में या तो धार्मिक स्वर गूंजते रहते थे अथवा संगीत का मधुर स्वर। स्थानीय नृत्य एवं कत्थक लोगों के गान अथवा झूमर गान केवल उत्सवों के लिए थे। अन्य राजाओं की होड़ में बनारस एवं लखनऊ से तबला उस्ताद बुलाये जाते एवं उनके कार्यक्रम कई दिन तक चलते थे। भरत नाट्यम, कत्थक, आदि नृत्य इस क्षेत्र में आ पहुँचे एवं प्राचीन शास्त्रीय संगीत अबाध रूप से महल में प्रचलित हुआ। सितार वादन में उस समय के श्रेष्ठ कलाकार आये एवं अनेकों बार कार्यक्रम किया। संध्या समय सभी राजघराने के लोग संगीतों का कार्यक्रम सुनते थे। सारंगी को भी इस राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ। उस समय की सभी प्रसिद्ध नृत्यिकाओं का कार्यक्रम एक न एक बार पंचकोट राज की नृत्यशाला में अवश्य हुआ। कलकत्ते की प्रसिद्ध नाचने वाली तो पंचकोट राज महल में प्रायः आती जाती रहती थी। राजघराने की सुपरिचित नृत्यकायें—गहवरजान, मलकाजान, विद्याधरी एवं कमला (झरिया) थी। इनमें गहवरजान तो अत्यन्त सुन्दर एवं नृत्य कला में दक्ष थी। कभी-कभी तो रानी को भी उसे देखकर इर्ष्या होने लगती थी। गहवरजान से राजा को भी अत्यन्त आशक्ति हो गयी। एक मास में कम से कम एक बार तो उसका कार्यक्रम होता ही था। गहवरजान के विषय में प्रसिद्ध था—

"समय बूझे गावे दाब, बेचारा, झन झन करे ठेले देवे दस हजार टका तोरा।" अर्थात गहवर जान पर एक बार में कम से कम दस हजार रुपये खर्च होते थे जो आज कल जय श्री टी या हेलन जैसी नृत्यिकाओं पर होते हैं। गहवरजान बाल डान्स के प्रदर्शन में भी निपुण थी। उसको देखकर ऐसा ज्ञात होता था जैसे या तो स्वर्ग से साक्षात् मेनका उतर आयी हो अथवा हॉलीवुड की कोई मासल्य प्रतिमा या अजन्ता एलोरा की रंगों में चित्रित दर्पण देखती हुई युवती।

इस सभी के होते हुए, राजा ज्योति प्रसाद की धर्मप्रियता कभी कम न हुई। वे प्रायः वर्ष में एकबार पुरी एवं एकबार बनारस की यात्रा पर जाते थे। एकबार वे पुरी की यात्रा पर गये। वहां पर एक धर्म प्रवचन

के अयोजन में उनकी दृष्टि एक षोडसी पर पड़ी जो अति विद्वत्तापूर्वक धार्मिक चर्चा में भाग ले रही थी। राजा जहां उसकी प्रतिभा से प्रभावित हुए वहां उसकी सरल सुन्दरता ने उन्हें मंत्र मुग्ध कर दिया। उसकी सुन्दरता गंगा की भाँति सरल किन्तु गम्भीर थी। राजा के मन में प्रथम दृष्टि में ही उस युवती के प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया। प्रवचन के पश्चात् वार्तालाप के दौरान तो वे उसके प्रेमपाश में बंध गये एवं उसे उन्होंने काशीपुर चलने का निमंत्रण दे दिया। उस युवती के माता-पिता एक सामान्य ब्राह्मण थे। अतः उन्होंने राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं किया। फलतः युवती काशीपुर आकर एक पृथक भवन में रहने लगी जिसमें माइकेल मधुसूदन दत्त रहते थे। प्रारम्भ में उसने राज-कर्म पर अपना प्रभाव डाला एवं राजा को प्रजा की ओर पितृवत् प्रेम एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रेरणा दी। वे एवं राजघराने के अन्य लोग घन्टों बैठकर उससे धार्मिक चर्चा सुनते थे। उसके बढ़ते हुए राजा पर प्रभाव को देखते हुए रानी ने कहा, "आप धर्म को धर्म ही रहने देना उसे वासना से भ्रष्ट मत करना।"

राजा रानी का अर्थ समझ गये क्योंकि समझदार को संकेत ही यथेष्ट होता है पर राजा करते क्या? वे अपने इस भावनात्मक प्रेम के ज्वार को न रोक पाये एवं युवती से उनके सीमित शारीरिक सम्बन्ध हो गये। रानी को इससे गहरा व्याघात पहुँचा एवं उनका "स्व" काँप उठा।

राजा को खुश करने के लिए कोयले के उद्योग में लगी कम्पनियों ने कई बार नृत्य संगीत के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जिसमें राजा ज्योतिप्रसाद को मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित किया। अनेकों गाने एवं नाचने वाली तो बाद में काशीपुर में ही स्थायी रुप से रहने लगीं जिन पर राजा की कृपा दृष्टि हो गयी।

इसके अतिरिक्त राजा ज्योति प्रसाद राज्य की ओर से विद्वान लोगों का खूब सम्मान करते थे एवं उनकी स्वयं की अध्ययन में गहरी रुचि थी। उस समय तक भारत के रजवाड़ों एवं रिसायतों ने प्रायः यह सत्य आत्मसात कर

लिया था कि ब्रिटिश राज्य को जिस राज्य में सूर्यास्त नहीं होता वे युद्ध में नहीं जीत सकते। उनके समक्ष एक ही रास्ता खुला था और वह था विधि के माध्यम से अदालतों द्वारा अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करना। अत: उन्होंने कानून के ग्रंथों का अध्यवसायपूर्वक अध्ययन किया एवं न्याय प्रेमी प्रिवीकौंसिल से विभिन्न अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्नों में लगे रहे। इस समय तक पूर्वी स्वदेशी कम्पनियों ने भी इस उद्योग में प्रवेश किया जिसे देखकर राजा ज्योति प्रसाद को हार्दिक प्रसन्नता हुई एवं उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें प्रोत्साहन दिया जैसे टाटा एवं बिरला ने राजा की कृपा दृष्टि प्राप्त करके अपने उद्योग में वृद्धि की।

राजा ज्योति प्रसाद ने अनेकों प्रकार की मोटर गाड़ियाँ खरीदी जैसे फोर्ड, आस्टिन, डॉज इत्यादि। उन्होंने एक रोल्स रायल मोटर कार का आर्डर दिया जिसके सभी अंग प्रत्यंग क्रौमियम जैसे बहुमूल्य धातु के बने हों। कुछ मासों में यह कार विशेष तौर से निर्मित होकर जहाज द्वारा इंग्लैंड से कलकत्ते पहुँची एवं राजा ने उसका मूल्य साठ हजार रुपया चुकाया। आजकल इस कार का मूल्य बीस लाख रुपये हैं एवं यह केवल भारत के राष्ट्रपति के पास हैं।

अपने शिकार के शौक के लिए उन्होंने विश्व की अस्त्र-शस्त्र की सबसे बड़ी कम्पनी हालैण्ड को आर्डर देकर ३७५ और ४६५ नम्बर की दो बन्दूकें विशिष्ट तौर से बनवायी जिसके निर्माण में एक वर्ष का समय लगा। एक के ऊपर सुन्दर कारीगरी है तथा कम्खी अर्थात संकेतक बिन्दु निशाना देखने के लिए हीरे का लगा हुआ है। इसके ऊपर राजा ज्योति प्रसाद का नाम स्वर्णाक्षिरों में लिखा है। एक-एक बन्दूक का मूल्य आजकल एक लाख रुपये हैं। उनके परिवार की अनेक बन्दूकें आज भी पुरूलिया पुलिस लाइन में हैं। एकबार एक हाथी पागल हो गया एवं उसने कृषकों की धान की फसल नष्ट कर दी, साथ ही दो तीन आदमियों को भी मार डाला। राजा ज्योति प्रसाद ने झालदा राजा के साथ मिलकर उस पागल हाथी को मारा। राजा ज्योति प्रसाद ने अकेले हालैंड में बनी बहुमूल्य बन्दूक से एक रायल बंगाल टाइगर का शिकार किया।

शासन को निर्धन प्रजा खुश थी क्योंकि राजा ने भू-राजस्व काफी कम कर दिया। राज्य में जैन मूर्तिकारों एवं साधुओं को शरण दिया क्योंकि वे उज्जैयिनी से आये थे। आज भी देवली, केशरगढ़ आदि स्थानों पर जैन कला के मन्दिरों के अवशेष हैं। राजा ने प्रजा की भलाई के लिए वृक्षारोपण करवाया ताकि प्रति वर्ष समय पर वृष्टि हो सके एवं बाजरा, कलाई, मक्का, गेहूँ, अरहर आदि फसलों को धान के अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया ताकि ये फसलें आवश्यक जल न होने से हो सके। उत्तरी भारत से इसके लिए बीज मँगा कर निर्धन कृषकों में बाँटे गये। काशीपुर में एक विशाल स्कूल का निर्माण करवाया जिसका नाम रखा 'पंचकोट राज हाईस्कूल' एवं ग्राम का नाम रखा पंचकोट राज ताकि पंचकोट राज का नाम परिवर्तन की आँधी में लुप्त न हो जाये। उन्होंने जिले के सदर पुरुलिया में एक बड़ा अस्पताल भी खुलवाया एवं कई क्लबों एवं संस्थाओं को भूमि दान में दी।

राजा ज्योति प्रसाद के समय सुवर्ण रेखा नदी के बालू में अल्प मात्रा में सोना भी मिला एवं बागमंडी की तरफ अल्प मात्रा में लोहे का भंडार प्राप्त हुआ। मान बाजार एवं बन्दवान के तरफ ताँबे की लम्बी सतह मिली। पलास वृक्ष पर आधारित लाभ का व्यापार बढ़ा तथा इरानियों ने आकर इस व्यापार का केन्द्र बनाया झालदा एवं बलरामपुर। रघुनाथपुर में टसर की रेशम का शिल्प विकसित हुआ।

इस प्रकार राजा ज्योति प्रसाद सिंह देव के समय पंचकोट राज का बहुमुखी विकास हुआ जो इस राज्य के इतिहास में भी अद्वितीय है।

तेरह

अर्थशास्त्र का सिद्धान्त है कि यदि राज्य की प्रजा समाज-कल्याण के कार्यों के लिए माँग नहीं करेगी तो राज्य का धन राजा एवं कुछ विशिष्ट

व्यक्तियों को व्यक्तिगत सुविधाओं एवं उपभोग में खर्च हो जायेगा। पंचकोट के लिए भी समस्या कुछ इस प्रकार की थी। कोयले के पैसे रखने की जगह थी राजमहल में। इस राज्य की प्रजा प्रारम्भ से दरिद्रता एवं अभावों से संघर्ष करना सीखा था तथा वास्तव में उस अवधि में राजाओं एवं महाराजाओं के सामने परम्परागत प्रजाहित के कार्य करने के लिए कोई बड़ी-बड़ी योजनाएँ नहीं रहती थी। यदि राजा ने एक वर्ष में एक तालाब, एक स्कूल अथवा एक अस्पताल बनवा दिया, वह ही काफी था। यह प्रजा का भाग्य था कि पंचकोट राज के बंशजों ने प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार करना नहीं सीखा था जैसे औरतों पर अत्याचार, भूमि राजस्व के लिए बल प्रयोग करना अथवा बलपूर्वक भूमि ग्रहण कर लेना।

राजा को एक दिन रानी रत्ना मंजरी ने सुझाव दिया, ''स्वामी इस प्रचुर अर्थ का आप क्या करेंगे', क्यों न आप एक सुन्दर महल निर्माण करवा लें जिससे हम यहाँ की प्रचंड गर्मी से बच सकें एवं सिंह देव वंश के बढ़ते हुए सदस्यों को एक ही महल के भीतर रखा जा सके।

राजा ज्योति प्रसाद ने कहा, तुम्हारे सुझावों ने तो सदैव मुझे अन्धकार में प्रकाश दिया। मुझे यह सुझाव पूर्णतः मान्य है।''

रानी रत्ना मँजरी ने कहा, ''समय के थपेड़ों से कुछ भी नष्ट हो जाये पर महल की अचल दीवारें खड़ी रहकर हमारे नाम को अमर करेंगी।''

राज़ा ने कहा, ''बस मैं तुरन्त ही यह प्रस्ताव आम सभा में रखूंगा।''

रानी रत्ना ने कहा, ''उसकी क्या आवश्यकता है। आज तक तो मैंने नहीं देखा कि आपका कोई प्रस्ताव आमसभा में अस्वीकार हुआ।''

राजा ज्योति प्रसाद ने कहा ''यही कारण है कि मेरा कोई प्रस्ताव अस्वीकार नहीं हुआ क्योंकि इस प्रकार सभी के 'अहं को सन्तुष्ट करता हूँ। इससे अनेक सुन्दर-सुन्दर सुझाव आते हैं तथा समय काल एवं अन्य असुविधाओं का बोध हो जाता है, एक मस्तिष्क से अनेक मस्तिष्क अच्छे होते हैं। हमारे शास्त्रों में भी पंचों का विधान था एवं अंग्रेज भी प्रजातन्त्र के माध्यम से अपने देश में कार्य

करते हैं। यही तो प्रजातंत्र है। सलाह मशविरा, प्रस्ताव एवं विभिन्न सुझावों को ग्रहण कर राज कार्य करना।"

रानी रत्ना ने कहा, "उत्तम।"

निश्चित दिन एवं संध्या समय राजदरबार लगा उसमें मैनेजर महाशय ने प्रस्ताव रखा, महान रानी एवं प्रजाप्रेमी राजा ज्योति प्रसाद अपने पूर्वजों का नाम उज्जवल करने हेतु प्राचीन महल के स्थान पर एक नये महल का निर्माण करना चाहते हैं। उसमें लागत लगभग बीस लाख रुपये आयेगी जिसके लिए धन विद्यमान हैं। यदि आप सभी लोगों की सहमति हो तो महल—निर्माण का कार्य शीघ्रातिशीघ्र आरम्भ किया जाये।

राज पुरोहित ने कहा, "पंचकोट राज आजकल हिन्दुस्तान की अग्रणी रियासतों में से एक है। महल के क्षेत्र में यह राज्य क्यों पीछे रहें, फिर ईश्वर एवं लक्ष्मी का पूर्ण वरदान इस राज्य को प्राप्त है।" सभी ने खड़े उठकर तालियाँ बजायीं एवं तुमुल हर्ष ध्वनि से इस प्रस्ताव का स्वागत किया। सभी राज्य के कर्मचारी आदि सभी कार्य छोड़कर महल-निर्माण के कार्य में लग गये। राजा ज्योति प्रसाद ने स्वयं इस कार्य को केन्द्रीय रूप से अपने पास रखा। कलकत्ते से चीनी कारीगर बुलाये गये एवं जयपुर से भी कारीगर लाने लोग चले गये। एक प्रसिद्ध फ्रांस के इंजीनियर नें डिजाइन तैयार की। एक मास पश्चात स्वयं राजा ज्योति प्रसाद ने महल की नींव रखी। भूमि का पूजन हुआ एवं धार्मिक मंत्रोच्चारों के मध्य राजमहल निर्माण-कार्य का शुभारम्भ हुआ।

राजा ने कोयले की कम्पनियाँ एवं कम्पनी को इटली से संगमरमर लाने अथवा उसे स्थानीय एजेन्ट से खरीदने का भार दिया। इस प्रकार दूसरे को उन्होंने जयपुर से काला पत्थर एवं सगंमरमर लाने का भार दिया। राजा ने स्वयं बेल्जियम की औसलर कम्पनी को कांच के सामान का आर्डर दिया। फ्रांसीसी इंजीनियर की देख-रेख में कलकत्ते के चीनी कारीगरों ने कार्य आरम्भ किया। जयपुर एवं लखनऊ से भी शिल्पी आये। लगभग दो सौ मजदूर प्रतिदिन काम

करते थे। मजदूरों में अधिकांश आदिवासी महिलाएँ भी थी जिनकी कार्य शक्ति की तुलना करना कठिन है पर शायद महल तैयार होने के पश्चात् वे कभी फिर से महल में प्रवेश न पा सकी। महल में सभी लोगों के रहने की व्यवस्था थी। पूर्व में राजा के हरमकी औरतें भी बाहर के छोटे-छोटे घरों में रहती थी। अब उनके लिये राजमहल की लगभग पच्चीस फीट ऊँची प्राचीर के भीतर रहने की व्यवस्था की गयी ताकि राजा की दुर्बलतायें सामान्य जनता तक न पहुँच सकें। दो मंजिलों के इस विशाल महल में रानी एंवं अन्य राजघराने की महिलाओं के लिए पीछे की ओर कमरे एंवं बरामदा था एंवं एंक मन्दिर था जिससे उन्हें किसी कार्य के लिए पुरुषों के मध्य न जाना पड़ता। महल की प्राचीर से सटे हुए ५० फिट उँचे लोहे के दरवाजे के पास सिपाहियों के रहने के लिएं वैरक बनायी गयी एवं प्राचीर से सटे हुएं कार्यालय के लिये अनेक कमरे बनागें गये एंवं कमरों के लिये गैरेज। दूसरी ओर घुड़साल एंवं हाथी रखने के लिये विशाल स्थान रख दिया गया एंवं नौकर नौकरानियों के लिएं बैरक एवं हरम की औरतों के लिए छोटे-छोटे पृथक-पृथक घर। महल की दूसरी मंजिल से दरवाजे के पास तक जाने के लिये ऊपर एक रास्ता बना एंवं यह रास्ता सीधा राजदरबार में मिलता था। जल की सुन्दर व्यवस्था थी एवं हवा की भी। कुल मिलाकर महल के भीतर लगभग पचास कमरे थे।

सैन्य दृष्टि से भी इसे अभेद बनाया गया एवं प्राचीर में चारों ओर तोपें, आदि चलाने की व्यवस्था थी। बिना पत्थर की मजबूत दीवारों पर आक्रमण एंवं लोहे काठ के मजबूत विशालकाय दरवाजे को तोड़कर शत्रु राजा के "ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता था।

ब्रिटेन से रंग आयात किये गये एवं राँची से काठ का काम करने वाले कुशल शिल्पी बुलाये गये। महल का निर्माण कार्य आठ नौ मास में पूर्ण हुआ तथा मजदूरों एंवं शिल्पियों की संख्या दो सौ से पाँच सौ एंवं एक हजार तक बढ़ा दी गयी।

वास्तव में आजकल के मापदंड से यह एंक बहुत बड़ा भवन था जिसकी

कला अद्वितीय एवं स्थान अत्यधिक था। पर यह उन महलों या किलों की भाँति नहीं था जिनमें अनावश्यक विस्तार होता है। यह पंचकोट के राजा की वैज्ञानिक एवं आधुनिक दृष्टि का द्योतक है। उसमें राजपूताने की हिन्दू कला, मन्दिर शैली में एवं चीनी लोगों के चमकीले भड़कीले रंगों की चित्रकारी का मिश्रण है तथा दिवालों में उठी हुई सिमेंट से चित्रकारी है।

औसलर कम्पनी बेल्जियम से काँच का समस्त सामान आ गया एगं महल में उचित स्थान पर सजाया गया। लाखों रुपये का काँच का सामान खरीदा। सबसे बड़ा झाड़ फानूस दरबार हाल में लगाया गया जो छत्तीस टन का था एवं उसमें १८० बल्व लग सकते थे। यह आज भी महल में विद्यमान है। राजा को कांच की वस्तुओं का बड़ा शौक हो गया एवं वे बेल्जियम की उस कम्पनी के भारत में सबसे बड़े खरीददार हो गए। हिन्दुस्तान के सभो राजाओं में झाड़-फानूसों एवं कांच की वस्तुओं में उनका नाम अग्रणी हो गया। कम्पनी ने राजा ज्योति प्रसाद के सम्मान में एवं उनकी अपूर्व कांच प्रियता के लिये एक स्वर्ण पदक पुरस्कार में प्रदान किया।

एक लाख रुपये की कीमत की राजा ने एक संगीतमय सीढ़ी विदेश से आयात की जिस पर पैर रखने से ही संगीत की ध्वनि निकलती थी। कुछ नयी सैन्य सामग्री एवं तोपें भी खरीदी गयी एवं कुछ का निर्माण किया गया। राजा नीलमणि के समय का भंडार ही काफी था पर सैन्य सामग्री की दिशा में उन्नति सबसे अधिक गति से हो रही थी। अतः समय के साथ चलना आवश्यक था। प्रथम विश्व-युद्ध ने इस ओर सभी को अत्यन्त सचेत कर दिया था। कुछ तोपें आज भी यहाँ के जिले के सदर स्थान पर पुलिस लाइन में रखी है।

राजा ज्योतिप्रसाद ने महल में स्थित दोनों मन्दिरों का पुनरुद्धार कराया एक मंदिर रानी के कमरे के सामने केवल महिलाओं के लिए था जो बाहर से पृथक् था दूसरा मंदिर महल एंवं मुख्य दरवाजे के बीच में था जो इस कुल के इष्ट देव श्याम रघुबर का था।

प्रथम-प्रथम पूजा के लिये फूल कलकत्ते से आते थे। काशीपुर में फूलों का

गहरा अभाव था क्योंकि यह एंक सूखाग्रस्त क्षेत्र था तथा लोगों को धान्य उत्पादन के लिये ही जल नहीं होता था—फूलों की ओर कौन सोचे ?

राजा ने महल के पास एंक सात-आठ एकड़ भूमि में तालाव खुदवाया एवं योग्य बागवान को बाहर से बुलाकर नौकर रखा। राजा ने इस प्रकार महल में एंक सुंदर उद्यान का निर्माण करवाया एवं राजमहल को फूलों से भरपूर कर दिया। राजमहल के निर्माण में लगभग ३३ लाख रुपये खर्च हुएं।

यह सिंह वंशजों की मौलिकता का प्रतीक था एंवं उनकी यादगार का स्मारक।

चौदह

इस राज्य में 'सूर्यास्त विधान' लागू था। वैसाख के प्रथम दिन कोई भी नीलामी में जमींदारी का अंश खरीद सकता था। पाटन के मुकदमे में यह सिद्धान्त तय हुआ कि पत्तनी अधिकारी कर्ता के पास भूमि के नीचे का अधिकार नहीं रहेगा। पर आसनसोल के पास वेलरुई रियासत के राजा इस सिद्धांत के विरोध में प्रिवी कौंसिल तक गये एवं प्रिवी कौंसिल ने भूमि के नीचे का अधिकार रियासतों एवं उनके अधिनस्त पत्तनी मालिकों को दे दिया। इसका अत्यधिक लाभ राजा ज्योतिप्रसाद एवं उनके राज्य को हुआ। ब्रिटिश राज्य का अधिकार केवल भूमि की सतह के ऊपर भूमि राजस्व से सम्बन्धित था। राजा ज्योति प्रसाद का यही मुख्य उद्देश्य था—जैसे ही न्यायप्रेमी प्रिवी कौंसिल से विधि द्वारा अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त किया जायें, पर वे उन राजाओं में नहीं थे जो ब्रिटिश महाप्रभुओं की दया भिक्षा माँगते। उनका कलकत्ते के बड़े-बड़े बैरिस्टरों से सम्पर्क था एवं राज्य की आय का एक बड़ा अंश मुकदमेबाजी पर खर्च होता था। इस प्रकार राजा ज्योतिप्रसाद को कानून का इतना अधिक ज्ञान प्राप्त हो

गया था जैसे कि वे कलकत्ते हाईकोर्ट के एक छोटे मोटे वकील हों। अनेक बार कलकत्ते बैरिस्टर पंचकोट राज्य के दर्शन के लिए काशीपुर आये। उनका सदैव राजसी स्वागत हुआ एवं राज्य के पंचेत पर्वत परिस्थित अतिथिगृह में ठहरने की व्यवस्था होती थी। सुरा एवं सुन्दरी से उनका स्वागत होता था ताकि वे राज्य हित के साथ मनसा वाचा एवं कर्मणा लग जाये। राजा ज्योतिप्रसाद उन्हें स्वयं शिकार के लिए आस पास के जंगलों जैसे पालामऊ में बेतला, हजारी बाग, एवं अपनी बाग, मंडी रियासत में अयोध्या पर्वत पर ले जाते थे। राजा ज्योतिप्रसाद को शिकार का बड़ा शौक था। वे एक कुशल घुड़सवार भी थे एवं वे घोड़े अथवा जीप में जाकर शिकार करते थे। उनका निशाना अचूक था। उन्होंने एक शेर एवं दो साही बंगाल चीतों को मारा एवं छोटे मोटे जानवर जैसे बारहसिंहा, हिरण, नीलगाय जंगली भैंसा एवं सुअर तो अगणित मारे।

राजा दो वर्ष में दो बार पुरी जाते थे। पुरी के राजा से भी उनकी अच्छी मित्रता थी। एक बार पुरी के राजा ने उनके पहुँचने पर उनका उचित राजसी सम्मान नहीं किया एवं सामान्य अतिथि की भाँति उनका स्वागत सत्कार किया। ऐश्वर्यमान राजा के अहम् को गहरी ठेस पहुचो और उन्होंने तुरन्त दो लाख रुपये की चेक काटकर पुरी से सर्वोत्तम समुद्र के किनारे राजमहल की भाँति एक भव्य भवन खरीद लिया। आजकल यह भवन समुद्र के किनारे स्थित है एवं पर्यटन विभाग ने अपना केन्द्र वहाँ खोल दिया है। राजा के "अहं" को यही शांति न मिली। अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए उन्होंने एक और कार्य किया उनके आवास काल में पुरी के राजा ने निर्धनों में आमों के वितरण का कार्य क्रम था। राजा ज्योति प्रसाद ने अति ऊँचे दामों पर आम के व्यापारियों से आमों की सभी बैगन खरीद ली एवं अपने नाम बुक कर ली। दूसरे बाजार में प्राप्त सभी आमों को पूर्व से ही ऊँचे दामों पर खरीद लिया था। फलतः पुरी के राजा का आम वितरण समारोह बुरी तरह असफल हो गया। दूसरी ओर राजा ज्योति प्रसाद ने सभी आमों को गरीबों

में वितरित कर दिया इससे राजा ज्योतिप्रसाद सिंह देव की जय-जय-कार हुई, वहाँ पुरी के राजा की हाय हाय कार हुई। इस कार्य में राजा के लगभग पचास हजार रूपये खर्च हुए पर राजा को सन्तोष था कि उन्होंने पुरी में पंचकोट राज का झंडा गाड़ दिया। आजकल के मापदन्ड से यह कार्य हास्यास्प्रद प्रतीत होता है पर उस काल की मान्यता के अनुसार यह राज्य के वैभव एवं शक्ति का प्रतीक था।

पुरी के अतिरिक्त राजा का बनारस से अत्यधिक लगाव था। बनारस में राजा के दो घर थे जहाँ उनकी कुछ रखेलें रहती थीं, लगभग वर्ष में दो बार महाराज बनारस की यात्रा पर जाते थे। वे वहाँ पर ब्राह्मणों को दिल खोल कर कर दान देते थे तथा धार्मिक एवं संगीत के कार्यक्रमों में अवकाश के समय सुन्दर ढंग से व्यतीत करते थे। एक बार बनारस के पंडितों ने राजा ज्योति प्रसाद से आकर प्रार्थना की, 'महाराज ! हम लोग अत्यधिक निर्धन हो गये हैं। आपकी यदि दया हो तो हम अपने घर का निर्वाह कर सकते हैं हम आपसे दया भिक्षा मांगते हैं" राजा ने उदार हृदय से कहा, "ऐसा ही होगा।"

राजा ज्योतिप्रसाद ब्राह्मणों से अत्यन्त प्रेम एवं श्रद्धा करते थे एवं उनके राज्य में सभी ब्राह्मण कर मुक्त थे। राजा ज्योति प्रसाद ने लौटकर राज्य पुरोहित रखाल चक्रवर्ती एवं मैनेजर से सलाह मशविरा किया। राजपुरोहित रखाल चक्रवर्ती ने कहा," राजा साहब ! तुलादान एवं गायदान ही हमारे ग्रंथों में श्रेष्ठ माने गये हैं। यदि आप अपने वजन के बराबर चाँदी अथवा स्वर्णदान दे तो सभी बनारस के ब्राह्मण परिवार ठिकाने लग जायेंगे।"

उन्होंने मैनेजर को बुलाकर राज्य का कोष जानना चाहा। मैनेजर ने कहा, हुजूर ! यदि आप सोने से तुलादान करें तो राज्य का सम्पूर्ण कोष खाली हो जायेगा।"

राजा ज्योतिप्रसाद ने तुरन्त कहा, "तो क्या हुआ ? हम नये कोयले के क्षेत्रो का बन्दोबस्त करेंगे जिससे कुछ दिनों में ही और लाखो रुपया अधिकार शुल्क के रूप में आ जायेगा।"

मैनेजर ने कहा, "हुजूर! वह तो ठीक है पर तुरन्त ही राज्य का संचालन कैसे होगा?"

राजा ने कहा, "वह तो श्याम रघुवर चिन्ता करेगा, तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। फिर कुछ मुख्य कम्पनियों से ऋण लिया जा सकता है जिसको वे बाद में अधिकार शुल्क से कम कर देगीं। मैंने तो स्वर्ण तुलादान के लिये निश्चय कर लिया है एवं वायदा सा कर लिया है। पंचकोट राज्य के वचन का भी मूल्य है। राजा तो अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए राज्य को गिरवी रख सकता हैं अथवा बिक्री भी कर सकता है।"

मैनेजर ने कहा, "एवमस्तु। हुजूर! मैंने तो आपके सार्वभौमिक एवं सर्वशक्तिमान अधिकार एवं शक्ति को चैलेंज नहीं किया अपितु एक मातहत कर्मचरी के हिसाब से केवल आर्थिक परिस्थिति का विनम्र निवेदन किया था।"

राजा ने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा, "अच्छा! तुम जाओ एवं तैयारियाँ आरम्भ करो। इस बार संक्रान्ति के पर्व पर मैं बनारस के ब्राह्मण परिवारों में सोने का तुलादान दूंगा।"

संक्रांति के दो मास पूर्व मैनेजर बाबू बनारस जाकर व्यवस्था में लग गये। राजा का वजन लगभग पचासी किलो था। उस समय सोने का मूल्य लगभग सवा लाख था। आजकल इसका मूल्य लगभग एक कोटि होगा। संक्राति के पावन पर्व पर गंगा के किनारे एक महान उत्सव का आयोजन हुआ। बनारस के कलक्टर एवं अन्य सम्भ्रान्त अतिथि उपस्थित थे। पुलिस की कड़ी व्यवस्था थी। ऐसा ज्ञात होता था जैसे बनारस का जनसमूह गंगा के किनारे चला आया हो। गंगा कें घाट लोक संसार से इतने भर गये थे कि गंगा का पानी कम ज्ञात होता था। पूजा अर्चना से उत्सव का आयोजन आरम्भ हुआ। बारह घण्टे की पूजा के पश्चात् राजा ज्योति प्रसाद ने तुलादान किया एवं उससे दूना चाँदी का दान हुआ और धातु के विभिन्न बर्तन बाँटे गये। एक बड़े भोज का आयोजन हुआ एवं सभी गरीबों में खिचड़ी बाँटी गयी। मैनेजर के अनुसार एवं राज परिवार की घनिष्ठता के आधार पर स्वर्ण दान विभिन्न ब्राह्मण परिवारों में विभाजित कर दिया गया।

यद्यपि हमारे प्रधान मंत्री एक दो बार सोने अथवा चाँदी से देश के संकट काल में तुल चुके हैं पर वह था लोक-दान या सार्वजनिक चंदा। आजकल यदि इस दान की तुलना की जाये तो तिरुपति बालाजी में चढ़े दान से हो सकती है पर वहाँ भी एक साथ इतने बड़े दान का उदाहरण नहीं मिलता। वास्तव में वह दान अद्वितीय था आजकल भी बनारस के अनेक ब्राह्मण परिवारों की समृद्धि उस दान की देन है एवं उनके परिवारों का चिरस्थायीपन एवं बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ उस दान का ही फल हैं। राजा ज्योति प्रसाद एवं पंचकोट राज का नाम वाराणसी में सदियों के लिए अमर हो गया एवं गंगा का एक पवित्र घाट पंचकोट के नाम से हो गया।

एक बार उन्हें कटक के पास के जंगलों में शिकार खेलने की आज्ञा नहीं मिली। उन्होंने प्रतिकार में उड़ीसा सरकार से सोलह वर्ग मील के क्षेत्र का सम्पूर्ण जंगल पट्टे पर ले लिया। वहाँ पर उन्होंने अपनी धर्मसंगिनी नवयुवती की स्मृति में एक सुन्दर भवन बनवाया जो विश्राम एवं पूजा के लिए अलीजोय में उस समय की सर्वोत्तम कम्पनी मार्टिन बर्न एंड कम्पनी के द्वारा बनवाया गया।

राँची की जलवायु पंचकोट राज के राजाओं को प्रारम्भ से ही उत्तम सिद्ध हुई। राँची पार्वत्य क्षेत्र समुद्र तल से केवल लगभग दो हजार फीट की ऊँचाई पर है पर पूरा क्षेत्र सघन वनों से आच्छादित है। इससे यहाँ ग्रीष्म का प्रकोप नहीं होता है तथा राँची शहर के आस-पास नेतरहा, हुनरू एवं दश्म प्रपात आदि दर्शनीय स्थल है। राजा ज्योति प्रसाद ने वहाँ भी 'गिर निकेतन,' नाम से एक विभाग गृह का निर्माण करवाया। परन्तु कालान्तर में कलकत्ता ही राजनैतिक सरगर्मी एवं आर्थिक क्रियाकलापों का क्षेत्र हो गया। अतः राजा को कलकत्ते को ही मुख्य केन्द्र बनाना पड़ा जहाँ उन्होंने तीन भव्य बंगले बनवाये।

इस प्रकार पंचकोट के विस्तार को देखकर अन्य राजाओं एवं रियासतों की भी कोयले के कार्य में रूचि जाग्रत हुई।

पन्द्रह

स्वर्ण तुलादान के पश्चात् पंचकोट के अजस्र धन का चारो दिशाओं में गुणगान होने लगा। यह समाचार आयकर विभाग वालों तक भी पहुँचा। एक दिन आयकर विभाग का छापामार दल काशीपुर आ पहुँचा। स्थानीय पुलिस अधीक्षक भी उनके साथ थे। सम्पूर्ण महल की तलाशी ली गयी, इतने में दो हजार लोगों की भीड़ राजा के समर्थन एवं आयकर विभाग के विरोध में जमा हो गयी।

अतः जन-आक्रोश के भय से आयकर विभाग एवं स्थानीय पुलिस ने तिजोरियाँ न तोड़ीं, एवं तलघरों और दीवालों को नहीं भांगा। राजा ज्योति प्रसाद ने भीड़ को शांत किया जिससे आयकर विभाग के अफसर भी खुश हुए। पर राजा को आयकर की संक्रामक व्याधि लग गयी। राजा को आयकर वकीलों की शरण में जाना पड़ा किन्तु उन्हें दस-बारह लाख टैक्स के रूप में देने ही पड़े। आयकर से बचने के लिये वकीलों ने राजा को सलाह दी, "आप स्वयं संस्थापक बनकर विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक हित के कार्यों के लिये न्यासों की स्थापना कीजिये।"

राजा ज्योति प्रसाद ने पूछा, "इससे मुझे क्या लाभ है?" वकील साहब ने कहा, "पंचकोट राज एक धार्मिक राज्य है एवं पूरे वर्ष आपका राजस्व धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में खर्च होता है। यह भारतीय आयकर अधिनियम के टैक्स की सीमा के बाहर है।" अतः आपको धार्मिक, मानसिक एवं मनो-वैज्ञानिक शांति एगं सुख भी प्राप्त होगा तथा आप अपने धार्मिक एगं सामाजिक कार्य सरकारी कर के द्वारा ही कर सकते हैं। राजा इस प्रस्ताव पर तुरन्त सहमत हो गए। पंचकोट राज के राजमहल में कानून की पुस्तकों का एक अच्छा पुस्तकालय सा स्थापित हो गया एगं राजा की चिन्ताधारा न्यासों की

स्थापना में लीन हो गयी। सन् १९३३ में उन्होंने ज्योतिश्वर शिव और लक्ष्मी नारायण जू महाराज की ज्योति भवन पंचकोट हाउस, शिवाला बनारस के लिए न्यास की स्थापना की एवं उसी दलील के द्वारा श्री श्री बगला माता ज्योतिश्वर शिव एवं लक्ष्मीनारायण जू महाराज की ज्योति निकेतन, पंचकोट हाउस, रामचन्द्र पुर हाउस, डाली जोरा कटक में न्यास की स्थापना की। इन दोनों मन्दिरों की पूजा, अर्चना, प्रसाद एवं उत्सव चलाने के लिए पंचकोट के सर्वोत्तम कोयले के क्षेत्रों को इन न्यासों के साथ सदा के लिए संलग्न कर दिया। आज भी इस्टर्न कोल्ड फील्ड राष्ट्रीय कम्पनी की पारबेलिया, रानीपुर आदि उत्तम कोयला खानें इसी क्षेत्र में हैं, इन क्षेत्रों में कोयले का अवैध व्यापार भी चोटी पर है।

न्यासों से सम्बन्धित सम्पत्ति का मूल्य १९३३ में एक लाख रुपये था एवं देवत्व के लिए पूर्णरूप से समर्पित था। न्यासी इसे छः आने प्रति टन से कम अधिकारशुल्क पर नहीं दे सकते थे और पैंतीस वर्ष से अधिक के लिए पट्टा भी नहीं दे सकते थे। राजा ज्योति प्रसाद को इस क्षेत्र का भ्रष्टाचार देखकर इतना शक था कि उन्होंने न्यासियों को राजस्व कम करने की छूट नहीं दी एवं इस सम्पत्ति को बिक्री करने का अधिकार भी नहीं दिया। प्रथम-न्यासी कल्याणी प्रसाद सिंह देव थे तथा उनके पश्चात् उनके लड़के शंकरी प्रसाद सिंह देव अथवा कोई एक उनके वंश का व्यक्ति अथवा उपायुक्त के ऊपर अफसर अथवा उनकी श्रेणी का। राजा ज्योति प्रसाद सिंह देव को भी जिला प्रशासन की योग्यता, ईमानदारी एवं क्षमता में अत्यन्त विश्वास था। इसलिये उन्होंने परिवार के न्यास में भी उपायुक्त एवं जिला जज को रखने का विधान रखा। उन्होंने यहाँ तक कहा कि यदि उनके लड़के अथवा नाती देवत्व की ठीक-ठीक सेवा नहीं करें अथवा न्यास की आय का उचित उपयोग देवत्व के लिये न करें तो कमेंटी उन्हें बदल सकती थी, कमेटी दस प्रतिशत आय का तीन चौथाई भाग वेतन के रूप में ले सकती थी। पुजारी कमेटी के आय का चौथाई भाग प्राप्त करता था।

न्यासी एवं पुजारी के लिये शर्तें थीं कि वह तब तक इस देवत्व के न्यास में रह सकता है जब तक वह हिन्दू धर्म को नहीं छोड़ता, वह हिन्दू धर्म में वर्जित खाना नहीं खाता, वह दूसरे धर्म के अनुयायी के हाथ का बना खाना नहीं खाता या वह इलाज अथवा शिक्षा के अतिरिक्त किसी भी कारण विदेश नहीं जाता है। न्यासी अपनी राजपूत जाति के लोगों के ही साथ विवाह कर सकता है एवं उसका विवाह हिन्दू पद्धति से ही सम्पन्न होना चाहिये। अन्यथा वह इन न्यासों के अयोग्य हो जायेगा, तब दूसरी बड़ी शाखा के पुरुषों का नम्बर आयेगा। न्यासी एवं पुजारी का यह दायित्व था कि उसकी पत्नी पर्दा प्रथा का गम्भीर रूप से पालन करे एवं वह अन्य किसी धर्मावलम्बी पुरूष स्त्री के साथ मेल-जोल न रखे और न ही उसकी पत्नी किसी राज्य के अथवा सरकारी अफसर से बात-चीत अथवा मेल मिलाप करे। यदि उसकी पत्नी ऐसा करती है तो न्यास को उसे तुरन्त छोड़ देना चाहिये। न्यासी अथवा पुजारी के लिये अपनी कोई लड़की अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा के लिये भेजने की मनाही थी। न्यासी के लिये ये बडो कड़ी शर्तें थीं इसलिए अन्त में विधान रखा गया कि बंगाल सरकार का प्रतिनिधि इस न्यास का संचालन करेगा तथा पाँच ब्राह्मणों को चुनकर प्रतिदिन की पूजा अर्चना करवायेगा।

न्यासों के माध्यमों से राजा ज्योति प्रसाद ने धर्म, समाज एवं ब्राह्मणों की अपूर्व सेवा की। उपर्युक्त न्यास से बनारस के अनेक ब्राह्मण परिवार लाभान्वित हुए। पंचकोट राज के मन्दिर में, वाराणसी के इतिहास में प्रथम पशु बलि हुई जिसका वहाँ का ब्राह्मण वर्ग विरोध न कर सका।

इसके पश्चात राजा ज्योति प्रसाद ने अपनी कुलदेवी राज राजेश्वरी माता के नाम से एक अन्य न्यास की स्थापना की एवं मन्दिर को विशालकाय बनवाया। बेल्जियम के झाड़ फानूस लगवाये एवं काँच से मन्दिर के दरवाजे सुसज्जित किये। मन्दिर में इटली का संगमरमर एवं जयपुर का कालापत्थर जड़वाया। इस न्यास में उन्होंने यथेष्ट भूमि संलग्न की ताकि भविष्य में सर्वदा निर्बाध रूप से माता की दैनिक पूजा-अर्चना, प्रसाद का खर्च चल सकें

एवं समयानुसार उत्सवों एवं अनुष्ठानों का आयोजन हो सके। इसी न्यास के माध्यम से उन्होंने पंचेत पर्वत एवं दामोदर नदी के पास कल्याणेश्वरी देवी के मन्दिर का नवीनीकरण कराया। ऐसा कहा जाता है कि राजराजेश्वरी एवं कल्याणेश्वरी देवी की अति जाग्रत मूर्तियाँ हैं। लाखों लोगों के जीवन की नैया मनवांछित फल प्राप्त करके पार हो गयी है। तीसरा ट्रस्ट उन्होंने अपने राज देवता श्याम रघुवर के नाम बनाया जो राज्य चलाते थे।

आयकर विभाग वालों एवं वामपंथी विचारधारा के लोगों ने इस धार्मिक अनुष्ठानों पर खर्चे का विरोध किया कि राज परिवार के लोगों के ऊपर यह खर्चा होता है, पर न्यायालयों ने राजा के पक्ष में मत दिया। यह राजा ज्योति प्रसाद की विधि में दूसरी बहुत बड़ी विजय थी। आजकल भी विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कर्मी एवं दल, न्यासों के माध्यम से करोड़ों रूपया सुरक्षित रखते हैं जिस पर सरकार के हाथ भी नहीं पहुँच सकते। धनाढ्य-व्यक्ति न्यासों के माध्यम से अपनी धार्मिक एवं दानवीर वृत्ति संतुष्ट करते हैं। न्यासों के द्वारा धन बचाना आधुनिकतम फैशन है।

राजा ज्योतिप्रसाद की उम्र बढ़ रही थी। आधुनिक काल के पेचों से वे परेशान थे। अब कानून की आवाज ही सर्वाधिक हो गयी थी। दूसरी ओर ब्रिटिश साम्राज्य क्रमशः राजा की आय का बड़े से बड़ा अंश हड़प लेना चाहता था। राजा से स्वयं अपने राज्य में धोखेबाजी एवं जालसाजी नहीं देखी गयी। सभी स्थानों पर कोयले कि उपस्थिति से क्षेत्र काला हो रहा था जबकि उस क्षेत्र के कोयले से देश के अन्य भागों में अभूतपूर्व विकास हो रहा था।

राजा अचानक बीमार पड़े एवं बुढ़ापे की बीमारी ने उनका साथ न छोड़ा। उन्होंने कलकत्ते एवं आस-पास के सभी डाक्टरों, वैद्यों एवं हकीमों को दिखाया पर अवस्था में कोई भी सुधार न हुआ। उन्होंने डा० विधान चन्द्र राय को दिखाने की इच्छा प्रकट की तो उनके मैनेजर ने कहा, "डा० राय तो स्वतन्त्रता संग्राम से अभिन्न रूप से जड़ित हैं। अतः उनके पास समय ही नहीं है। आपको प्रातःकाल सामान्य जनता के साथ ही दिखाना पड़ेगा।"

ऐसा ही हुआ। यही डा० राय पश्चिम बंगाल के इतिहास में क्रांतिकारी मुख्य मंत्री हुए। आज भी आधुनिक औद्योगिक बंगाल विशेषतः दुर्गापुर एवं कल्याणी का उन्हें जन्मदाता कहा जाता है एवं बंगला प्रशासन के वे एक कीर्ति स्तम्भ हैं।

डा० विधान चन्द्र राय ने देखते ही कहा, "राजा के पेट में पानी भर गया है। वह निकल नहीं सकता। अब इनका इलाज करने से कोई लाभ नहीं। आप इन्हें वहाँ ले जाइये जहाँ वे सुख से मौत की नींद सो सकें।"

डा० विधानचंद्र राय का मंतव्य चूड़ान्त माना जाता था। अतः तुरन्त राजा को विशेष रेलगाड़ी से आद्रा आने की व्यवस्था की गयी तथा वहाँ से सीधे वाराणसी।

आद्रा स्टेशन पर राज्य के हजारों लोग, सम्भ्रान्त नागरिक एवं राज परिवार के लोग राजा के अन्तिम दर्शन करने आये पर वे ट्रेन से न उतरे, उन्होंने कहा—

"मेरी अन्तिम इच्छा है कि मैं बनारस में प्राण गवाऊँ। तुम लोग मेरी आकांक्षा के अनुसार राजकाज चलाना एवं नये राजा के साथ सहयोग करना।" सभी ने राजा को पूर्ण आश्वासन दिया एवं राजा आश्वस्त हो सुख से पंचकोट राज की परिधि के बाहर चले गये। बनारस पहुँचने के दो दिन पश्चात ही वे स्वर्गवासी हो गये एवं उनका राजसी सम्मान के साथ वहीं अंतिम संस्कार हुआ पर उनकी मृत्यु के समाचार पर उनकी रानी मंजरी देवी को विश्वास न हुआ क्योंकि राजा प्रायः बनारस जाकर मासों रह जाते थे एवं काशीपुर महल की कोई खबर भी नहीं लेते थे।

पर मृत्यु अकाट्य होती है। समाचार सत्य प्रमाणित होने पर रानी ने वैधव्य का सहारा लिया। राज्य भी राजा के परलोक गमन से शून्य हो गया।

सोलह

पंचकोट राज राजा ज्योति प्रसाद के समय उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका था। अतः इतिहास के नियमानुसार अवनति की ओर अग्रसर होना स्वाभाविक ही था। प्रजातन्त्र का समय आ रहा था एवं राजा के लिये बड़ी सेना आदि रखना असम्भव था। राज्य में कोयले में संगठित काला बाजारी इतनी गति से बढ़ रही थी कि राजा ज्योतिप्रसाद को उसका सामना करना दुस्साध्य ज्ञात हो रहा था। राजा कई बार स्वयं एवं सेना तथा दल बल लेकर गये, पर उन्हें निश्चय हो गया कि वे इससे बहुत दिनों तक नहीं लड़ सकते। कोयले के व्यापारी रात में जाकर भूमि से कोयला निकाल लेते थे। इन खानों को भरती करने में उतना ही खर्च था जितना कोयला निकालने में। सभी से निबटना पंचकोट राज की राज-शक्ति की क्षमता के बाहर का कार्य था। अतः कोयला से आच्छादित इस राज्य में उन्होंने नये पट्टे एवं अनु पट्टे देने आरम्भ किये और सभी क्षेत्रों में अपने विभिन्न कर्मचारियों को नियुक्त किया पर पैसा देकर उन्हें भी चुप कर दिया गया। कर्मचारियों की व्यक्तिगत सम्पत्ति में वृद्धि होती गयी पर पंचकोट की आय स्थिर हो गयी। राजा को दंड देने का अधिकार छिन गया। जब तक राजा को दण्ड देने का अधिकार था, कोयले के व्यापार के बड़े-बड़े गुंडे एवं समाज विरोधी राजा के कुत्ते से भी भय करते थे। वास्तव में इस प्रकार के सामाजिक अधिकार प्रशासन के द्वारा ही बन्द हो सकते हैं न कि न्यायालय द्वारा। इन अपराधों का सामना करने के लिये कार्यपालिका को अधिक शक्ति एवं अधिकार देना पड़ेगा ही। पंचकोट राज्य के लिये यह असम्भव सा प्रतीत हो रहा था कैसे हजारी बाग जाकर कोयले की अवैध खुदाई बन्द करें अथवा झरिया एवं रानीगंज के क्षेत्रों

में इस अवैध धंधे को बंद करें ? कोयले वालों के दलाल सभी चौरस्तां पर मुस्तैदी से पहरा देते थे एवं अफसर और कर्मचारी वर्ग के आने की पूर्ण सूचना खान पर दे देते थे। कुछ दिनों पश्चात् यह सूचना मुख्य कार्यालय से ही निकलने लगी। वास्तव में भ्रष्टाचार के बहुत लम्बे हाथ होते हैं। पुलिस थानों के थानेदार एवं सिपाही भी इन काले धन्धे वालों से सांठ-गांठकर खूब धन जोड़ रहे थे। कर्मचारी पांचवां भाग रिश्वत के रूप में लेकर पंचकोट राज्य के पूरे अधिकार शुल्क को कम कर रहे थे।

पर राज्य की आमदनी कम्पनियों के माध्यम से कम न हुई। राजपरिवार के लोगों ने भी शेखर भूमि के नाम से एक कम्पनो तैयार कर डाली एवं अन्य परिवार के लोग सीधे इस व्यापार में आ गये। भूमि राजस्व की दरें भी कम कर दी गयी तथा उससे राज्य की आमदनी कम हो गयी। ग्रामीण अंचलों में छोटे-छोटे आन्दोलन पनप रहे थे। आन्दोलनकारी कहते थे—

"हम राजा को भूमि राजस्व नहीं देंगे। राजा हमारे राजस्व के पैसे से गाड़ी में चढ़ता है। नृत्य देखता है, रखैंले रखता है, वैश्यागमन करता है। हमारे कल्याण के कार्यों के लिये कुछ नहीं करता।"

पंचकोट राज में जल के अभाव एवं फसल की क्षति ने उस वर्ष लोक संग्रामों को और भी प्रबल कर दिया। राजा के वंशज एवं उत्तराधिकारी शनैः शनैः इतने अकर्मण्य हो रहे थे कि इन नवीन अद्भुत आन्दोलनों से निबटने की न तो उनमें इच्छाशक्ति थी और न ही आत्मविश्वास, और न ही थी राज्य की संगठित सैन्य शक्ति। अतः राजा के समक्ष विशाल जुलूस आने लगे, जिनमें अधिकांश लोग परम्परागत हथियार जैसे लाठी, बल्लम, तीर-धनुष आदि लेकर राजा से विभिन्न विषयों पर दावी पेश करने लगे। प्रारम्भ में ये मांगे विनम्रता पूर्वक पेश की जाती थीं, पर शनैः शनैः उनमें हिंसा का स्वरूप आ रहा था। राजा ज्योति प्रसाद ने तंग आकर एक बार उनके नेता को पिटवा दिया। इससे प्रतिरोध में दस हजार लोगों का जुलूस निकला एवं राजा के पास जाकर अन्याय के विरुद्ध न्याय की माँग की जो राजा को अंत में स्वीकार करना पड़ा,

क्योंकि राजा के लिये प्रतिरोध का कोई चारा नहीं था। "यह मेरे राज्य में अन्याय हुआ है। मैं तत्सम्बन्धित सभी अपराधी व्यक्तियों के लिये दण्ड की व्यवस्था करूँगा एवं आप लोगों से इस अन्याय के लिये क्षमा चाहता हूँ।"

आन्दोलनकारी राजा की जय-जयकार करके चले गये। इस प्रकार शनैः शनैः राज्य की शक्ति प्रजा के हाथों में हस्तगत हो रही थी, भ्रष्टाचार राज्य में इतना बढ़ गया था कि राजा को मैनेजर पर भी शक होने लगा। इस तरह भावना से कितने दिन राजकाज चलता? चतुर मंत्री ने राजा की भावना अनुभूत करके एक दिन बोल ही दिया, "महाराज यदि आप मुझ पर भी शक करते हैं तो आप मुझसे त्यागपत्र ले लीजिए।" राजा के सामने दूसरा मंत्री पद के योग्य व्यक्ति नहीं था एवं सभी एक जैसे थे। अतः राजा ने मंत्री की बात टाल दी। मैनेजर ने भी उस समय तक अन्य नामों से अपने विश्वासी लोगों को कोयले के व्यापार में साझीदार बनवाकर इतना पैसा अन्य नामों से जमा कर दिया था एवं कलकत्ते में एक बड़े लोगों के क्षेत्र में सुन्दर मकान भी बना लिया था कि उसका शेष जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत हो सके।

राजा परेशान थे। उन पर ब्रिटिश राज्य एवं भूमि राजस्व दरों का दबाव बढ़ रहा था। दूसरी ओर, स्वतन्त्रता सेनानी राजघरों को ब्रिटिश सरकार का दलाल घोषित करके उनके प्रति जनता का रोष उत्पन्न कर रहे थे। तृतीय राजा के सभी कर्मचारी विराट भ्रष्टाचार में लिप्त हो रहे थे। वे राजा से तो "हाँ हुजूर" के अतिरिक्त कोई उत्तर न देते थे और अपनी मनमानी करते थे क्योंकि नियम लिखित नहीं थे, जहाँ जैसे की आड़ होती थी, काम वहीं से सम्पन्न होता था एवं राजा के कर्मचारियों का तथाकथित निष्पक्ष निर्णय उसी ओर जाता था। प्रत्युत्तर में उन्हें राजा का क्रोध विष की भाँति पीना पड़ता था। कर्मचारीगण डूबते सूर्य की छाया में अधिक दिन नहीं रहना चाहते थे तथा अपने भविष्य की पूर्व से निश्चिन्तता एवं सुरक्षा चाहते थे।

राजा ज्योति प्रसाद के अन्तिम दिनों में कोयले का पूरा स्वरूप उतर कर आया। पंचकोट राज कोयले का एक बड़ा डिपो ज्ञात होता था। चाहे कोई

धनबाद की ओर जाये या आसनसोल अथवा रानीगंज और हजारीबाग अथवा कातरस, सभी स्थानों पर कोयले का साम्राज्य था। कोयले के बड़े-बड़े ढेर देखकर मानव-शक्ति भी काँपती थी जैसे कोयला राज-शक्ति की असहायता पर हँस रहा हो। कोयले के संग्रहों को हटाना भी एक मुश्किल कार्य था। पूरे राज्य में अनेक ट्रान्सपोर्ट एजेन्सियाँ स्थापित हो गयीं एवं हजारों की संख्या में ट्रकें चलने लगीं। देश के अन्य भागों से भी ट्रकें आकर यहाँ से कोयला भर ले जाती थीं। ढाबों एवं ट्रकों की मरम्मत के लिये दुकानों की बहुतायत हो गयी। कोयले से भरी ट्रकों ने राज्य भर की सड़कों को दुर्बल बना दिया एवं जन-जीवन दूषित कर दिया। इतने बड़े पैमाने पर बाहरी जगत का आर्थिक एवं नैतिक प्रभाव पड़ रहा था जिसे सहन करना एवं पचाना पंचकोट राज्य के लिए दुस्साध्य था। अतः पंचकोट का प्रशासन अपने ही राजभूमि पर उदासीन दर्शक की भाँति हो गया। उस भ्रष्ट प्रशासन एवं अनैतिक व्यापारों से पूरे राज्य में चारित्रिक अनैतिकता बढ़ी एवं पंचकोट राज जो धार्मिकता के लिए विख्यात था, अनैतिक व्यापारों के लिए कुख्यात हो गया। पंचकोट के नवोदित राजाओं को भी कोयले के चोर-बाजारियों ने नष्ट कर दिया। इन सभी व्यापारों को देखकर राजा ज्योति प्रसाद ने अपने अन्त समय में कहा,

"पंचकोट का सूर्यास्त नजदीक है। हमारे उत्तराधिकारी उसे अधिक दिन नहीं चला सकते। कोयला तो एक दिन पुड़ियों में बिकेगा।" वास्तव में चार-पाँच रुपये प्रति टन कोयले से भाव अतिरिक्त तीन सौ रुपये टन तक पहुँच गया है, ट्रान्सपोर्ट का खर्चा दूसरा दस गुना अतिरिक्त। आज जब कोयला एवं कोयले की खानों का राष्ट्रीकरण हो गया है, कोयले के दामों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। ज्ञात होता है कि सरकार का ध्येय केवल कोयले की खानों के श्रमिकों को पोषित करना है न कि कोयले को सामान्य जनता में उपलब्ध कराना। यद्यपि जीवन संकट में रखकर कोयले की खानों में कार्य करना पड़ता है पर प्रति श्रमिक की मजदूरी पच्चीस रुपये प्रतिदिन से कम नहीं है। ज्ञात होता है कि राजा ज्योति प्रसाद की भविष्यवाणी एक दिन सत्य सिद्ध होगी।

सत्रह

राजा ज्योति प्रसाद के पश्चात् कल्याणी प्रसाद गद्दीनशीन हुए। उनके पश्चात् राजा शंकरी प्रसाद (१९४५–१९५६) तक रहे। तत्पश्चात् राजा भुवनेश्वरी प्रसाद की मृत्यु के पश्चात् १९७२ में सिंह वंश का सूर्यास्त हो गया। सन् १९४७ में देश स्वतन्त्र हुआ। अंग्रेज देश को छोड़कर चले गये पर साम्राज्यवाद के प्रतीक स्तम्भ इन छोटे-छोटे राजाओं एवं रियासतों को छोड़ गये। अब जनता की बारी थी, जनता ने इन राज्यों के प्रति रोष व्यक्त किया। इससे कुछ राज्य-भक्त राज्य एवं राजा भी शत्रु-श्रेणी में आ गये। स्वतन्त्र देश का स्वतन्त्र विधान तैयार हुआ। सर्वप्रथम राज्य को प्रभुता सम्पन्न होने के लिए भूमि पर अधिकार की आवश्यकता थी। यद्यपि भूमि से बहुमूल्य अनेक वस्तुएँ थी पर प्राचीनकाल एवं ऐतिहासिक परम्परा से भूमि को हस्तगत करने वाला ही राजा माना जाता है। १९५४ में समस्त भूमि लोकप्रिय सरकार में निहित हो गयी। भूमि सुधार के विभिन्न विधान आये। सभी राज-सड़कों पर घूमने लगे। भूमि अधिग्रहण के लिए क्षतिपूरन की बात बाद के लिये छोड़ दी गयी। राजा की बात जब विधायकों ने न सुनी तो उन्होंने अदालतों एवं न्यायालयों का आश्रय लिया। सभी स्थानों पर हारकर राजा शंकरी प्रसाद उच्चतम न्यायालय गये एवं १९५१ में शंकरी प्रसाद बनाम भारत सरकार मुकदमें में प्रसिद्ध एवं प्रथम संवैधानिक निर्णय हुआ। इसमें शंकरी प्रसाद की हार हुई। बुद्धि का युद्ध भी राजा शंकरी प्रसाद की सम्पत्ति की रक्षा न कर सका।

सम्पत्ति का व्यक्तिगत अधिकार शनैः-शनैः समष्टिगत हो रहा था। पंचकोट का पंगु शासन न्यायालयों की शरण में गया पर शक्तिशाली लोकप्रिय शासन ने

कहा—"अदालतों को लोक-भावना का सम्मान करना चाहिये।" अदालतें भी परिवर्तित परिवेश में समायोजन कर रही थीं पर लड़खड़ा कर। कार्यपालिका की शक्ति का कौन सामना कर सकता है ? यदि कार्यपालिका ही स्वयं अन्य अंगों को सम्मान दे तो शासन ठीक चलता है। लोक-बल किन्तु सभी के ऊपर है। वह कुछ भी कर सकता है। प्रथम नवम्बर १९५६ में पंचकोट के अस्तित्व को गहरा आघात पहुँचा जबकि भाषा के आधार पर राज्यों का विभाजन होने पर पंचकोट राज्य का धनी अंश बिहार में चला गया, केवल राजमहल एवं निर्धन क्षेत्र पश्चिम बंगाल में रह गया। राजा शंकरी प्रसाद ने बिहार में रहने की सलाह दी, पर लोकसेवा संघ ने उनकी बहुमूल्य सलाह न मानी और आज भी पुरुलिया जिला देश के सबसे पिछड़े जिला में से एक है। राजा के अनुभव की उपेक्षा करना एक अन्याय साबित हुआ। कुछ कोयले का क्षेत्र पंचकोट राज में रह गया था जो पश्चिमी बंगाल में था।

कोयले की समस्त खानों का रातोरात राष्ट्रीयकरण हो गया। हेलीकोप्टर से आदेश आये एवं साथ-साथ कम्पनियों के निर्देशकों को कुर्सी से उतार दिया गया। सभी कर्मचारीगण खुश थे क्योंकि वे राष्ट्रीयकरण के फलस्वरूप सीधे सरकार के नियंत्रण में आ गये थे एवं उनकी अकर्मण्यता अथवा निरंकुशता को देखने वाला केवल विधान था, व्यक्ति नहीं। पंचकोट को क्षतिपूरन मिलना असम्भव हो गया क्योंकि बिहार से सम्पर्क रखना मुश्किल हो गया। जनता खुशियों से पटाखे छोड़ रही थी पर पंचकोट का राज्य अपने वैभव की अर्थी देखकर आँसू बहा रहा था।

अब न तो राजा के लिए कोई मनोरंजन जुटाने वाला था और न ही कोई सलामी या अधिकार शुल्क देकर राज्य का खजाना भरने वाला। धीरे-धीरे मोटर गाड़ियाँ बिकने लगीं। राजमहल का अनुपयोगी फर्नीचर बिका, झाड़फानूस एवं अन्य सजावट के सामान की भी बिक्री होने लगी। राजमहल की रानियों ने बेशकीमती आभूषण अपने मायके भेज दिये अथवा विश्वाशपात्र लोगों के पास रख दिए ताकि वे शेष जीवन आराम से काट सकें। कुछ बुद्धिमान लोगों

ने अपना पैसा विभिन्न कम्पनियों में शेयरों के रूप में लगा दिया एवं बैंकों में डाल दिया पर राज-सामग्री की बिक्री की होड़ लग गई। एक का दूसरे पर विश्वास न रहा। वे सभी बहुमूल्य वस्तुएँ कलकत्ते के पाँच सितारों वाले होटलों में जाकर बिकीं जहाँ पर खरीदने वाले थे वे धनी व्यक्ति जिन्होंने अंग्रेजों के बरदहस्त से पैसा कमाया था।

अन्तिम राजा तक यह परिस्थिति पूर्व निराशा की स्थिति में बदल गई थी। राजा का चारित्रिक ह्रास हुआ। उन्होनें एक ख्रिस्तान से अदालत में विवाह कर लिया एवं राजमाता ने अपने भतीजे से। फलतः वे न्यासों के अधिकारी न रहे। वे विश्वासघात के शिकार हुए एवं चरित्र के लिए बदनाम हुए। वे अब सिनेमा एवं थियेटरों में जाकर सामाजिक रूप से नाच गाना देखकर ही अपना मन बहला लेते थे। पंचकोट को पतन की ओर उन्मुख करने का श्रेय था उनके उन अयोग्य उत्तराधिकारियों को जिन्होंने बचपन से कुछ नहीं सीखा। वे दासियों की गोद में खेलकर मनुष्य हुए एवं चाटुकारिता में पले।

यद्यपि पंचकोट की समस्त भूमि सरकार के हस्तगत होने पर क्षतिपूर्ति करोड़ों में होती थी किन्तु उन्हें सम्पूर्ण क्षतिपूर्ति न प्राप्त हो सकी। हाँ, उन्हें प्रति वर्ष उतनी क्षतिपूर्ति अवश्य मिलती थी कि वे मरें नहीं एवं जीवित रहने की आशा बनी रहे। इस निराशाजनक परिस्थिति में कुछ संतानें टूट पड़ी पर कुछने बदलते परिवेश के साथ संघर्ष किया। वे समय से कदम मिलाकर बढ़े एवं अपने सुन्दर, सुडौल एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के बलपर इस सामाजिक व्यवस्था के नेतृत्व की प्रतिज्ञा की। उनकी भोली जनता ने उनहें फिर से वापिस आने में सहयोग दिया। यह वही जनता थी जिसने उन्हें निकाला था, पर राजा के प्रति सहानुभूति कहाँ जाती, जैसे एक पत्नी पति से क्रोधित होकर उसे भले ही छोड़ दे पर पुनर्मिलन के समय उसका हृदय पिघल जाता हैं। वे राज्य में विधायक हुए एवं केंद्र में संसद सदस्य एवं मंत्री।

अठारह

पंचकोट राज की आय दिन प्रति दिन घटती जा रही थी। राजस्व ही शासन का मूल आधार है। अतः राज्य लड़खड़ा गया। राष्ट्रीयकरण से तो जैसे राज्य को केतू लग गया हो एवं सम्पूर्ण राज्य-कार्य में आटा पड़ गया हो। राष्ट्रीयकरण द्वारा व्यक्तिगत कोयले की खुदाई को अवैध घोषित कर दिया गया। कोयले के धंधे पर आश्रित व्यक्ति अदालतों की शरण में गये एवं निकाले हुए कोयले की बिक्री के लिए आदेश ले आये। न्यायालयों ने आदेश दिया "किसी भी व्यक्ति को व्यापार की स्वतंत्रता है। वह बाजार का ठीक मूल्य होने पर ही बिक्री करेगा। कोई उसे निश्चित समय के भीतर बिक्री करने के लिए बाधित नहीं कर सकता"।

ऊपर से यह आदेश अत्यन्त न्यायपूर्ण एवं भोला था पर वास्तव में लोगों ने इसी मृग मरीचिका में अदालत की आँखों में धूल झोकते रहे एवं नये कोयले की खुदाई करते रहे। जब कोई कोयला पकड़ा जाता तो वे निम्न अदालते से यह कहकर छुड़ा लेते थे "यह उच्च न्यायालय के आदेशों के विरुद्ध हैं एवं यह पहले से खुदा पड़ा हुआ हैं।

यह सिद्ध करना दुसाध्य था कि वास्तव में नयी-नयी खुदायी हो रही है। कुछ ईमानदार एवं देशभक्त अफसरों के विरुद्ध न्यायालयों में मानहानि के मुकदमें भी दायर किये। फलस्वरूप सभी आतंकित हो गये। कुछ बड़े अफसरों ने छोटे अफसरों को इस प्रकार षड्यंत्र करके फसाया जिन्होंने गे अवैध आदेश देने में भय करते थे। आज भी वह खुदा हुआ कोयला तथाकथित रूप से पड़ा हुआ है एवं बिक्री हो रहा हैं। वाह ! हमारे समाज के ढाँचे को। एक बार उच्च न्यायालय का स्थगन आदेश पारित होने के पश्चात् मुकदमा दबा

दिया गया, कुछ ईमानदार एवं साहसी अफसर फिर भी हिम्मत न हारे, उन्होंने काम करते हुए मजदूरों के फोटो लिए एवं ट्रकों के भी फोटो लिए और न्यायालय की विशेष आज्ञा से उसे पेश किए पर ये रिपोर्ट भी फाइलों से निकलवा दी गईं। क्लर्कों ने बीस रुपया लेकर सरकार की बीस लाख की क्षति कर दी। ट्रक के नम्बर नोट किये गए पर चेकपोस्टों ने भी ट्रकों से बीस रुपया प्रति ट्रक बाँध दिया, चेकपोस्टों से भ्रष्टाचार तो कम न हुआ पर काले बाजार वालों का खर्चा बढ़ गया। फलस्वरूप उन्हें यह लाभ का सौदा नहीं ज्ञात हुआ। उधर इन अवैज्ञानिक खानों में कर्मचारियों की मौतें हो गयीं। फलतः सरकार का भी समाचार पत्रों ने ध्यान आकर्षित किया एवं पुलिस प्रशासन की आलोचना हुई। इन क्षेत्रों के थानेदारों को सर्वाधिक आमदनी हो गयी एवं थानेदार उच्च न्यायालय के स्थगन आदेशों के आधार पर उन थानों से चिपके रहे। वकील भी कोयले के व्यापारियों ने कर लिये, पर लालच अधिक बढ़ा और जब थानेदारों ने व्यापारियों को हटा कर स्वयं यह धन्धा आरम्भ किया तो असफल हो गये। स्थानीय लोग भी असफ़ल हो गये। फिर से उन्हीं लोगों को बुलाया गया।

उन्होंने उच्च न्यायालयों को पंचकोट राज्य के प्राचीन पट्टे दिखाये। उच्च न्यायालयों को विश्वास के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था क्योकि पंचकोट राज्य के उत्तराधिकारी की खोज करना एक कठिन कार्य था। पंचकोट राज्य के पुराने कारिन्दों एवं कर्मचारियों ने राजा के जाली हस्ताक्षर करके ऐसे कार्य पट्टे दिये पुराने कागजों पर जो उनके पास परिवर्तन की आँधी से बच गये थे।

सरकारी अफसरों ने प्रतिकार की भावना से पंचकोट राज्य के इस सरकार विरोधी कार्य के लिए करोड़ों रुपये की मांग खड़ी कर दी तब राज्य के उत्तराधिकारी विलासिता के अधकचरे पंक से उठे पर तब तक काफी देर हो चुकी थी। उन्होंने सभी पट्टे पर हस्ताक्षरों को जाली बनाया तब न्यायालय ने कोयले के अवैध व्यापारियों से प्रश्न किया तो उन लोगों ने उत्तर दिया—

श्रीमान् ! पंचकोट राज्य का वह प्रतिनिधि मारा गया है। हम किस प्रकार जान सकते थे कि राजा ने राज के लिए हस्ताक्षर करने का अधिकार उससे छीन लिया था। वह तो प्रारम्भ से राजा के लिए हस्ताक्षर करता था एवं हमने सम्पूर्ण अधिकार शुल्क भी दे दिया है।

इस प्रकार कोयले के अवैध व्यापारियों का अवैध धन्धा अबाध रूप से चलता रहा। पुलिस, थानेदारों को भी उचित दण्ड न दिया गया पर इस सांठ-गांठ में भागी पुलिस और अवैध व्यापारियों एवं उनके गुंडों में अवैध आय के बटवारे को लेकर अनेक संघर्ष होते रहे। कुछ लोगों को लाखों रुपया कमाने के बाद भी जान से हाथ धोना पड़ा। कुछ ईमानदार अफसरों की भी इन गिरोहों ने हत्या कर दी। भारत सरकार की कोयले की कम्पनियों के अधिकारियों ने भी विरासत में ये सभी काले धन्धे सीख लिये। कम्पनियों के कुछ कर्मचारी उन्हें तकनीकी ज्ञान एवं बारूद भी देते थे। कम्पनियों के कर्मचारी इस अवैध माल को उठाने के लिए हड़ताल तक भी कर देते थे।

दूसरी ओर सरकारी कम्पनियों का भी जाली हस्ताक्षरों के माध्यम से लाखों टन कोयला खानों के मुख से बाहर जाने लगा। ट्रकों में दो सौ टन की निश्चित मात्रा के स्थान पर अवैधरूप से दो सौ पचास टन माल बाहर जाने लगा। इस अपवित्र कार्य में कर्मचारी भी निपुण थे जो कि जाली परमिट देखकर तुरत ही माल दे देते थे। सम्पूर्ण क्षेत्र कोयले का जैसे काला डिपो हो गया हो एवं चारों ओर दूषित धुँआ उड़ता दिखाई पड़ता था सड़कें, मकान आदि भी काले हो गए थे।

इन मामलों को लेकर जब राज्य सरकारें काफी बदनाम हो गयी तो उन्होंने उन गिरोहों को पकड़ा जिसमें बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों एवं अफसरों का हाथ था। जब छापे पड़े तो कोयले के व्यापारियों ने उल्टा पुलिस पर आरोप लगाया—"मेरे रिसीवर से सम्बन्धित सभी कागज एवं हिसाब पत्र चोरी में चले गये अथवा पुलिस छापे में।

अतः न्यायालय को कोयले की बिक्री का हिसाब देना सम्भव नहीं हैं।" इस प्रकार न तो सरकार को इस धन्धे में एक पैसा मिला न पंचकोट राज को। पर राष्ट्रीय धन चोरबाजारी द्वारा नष्ट होता रहा।

इतना निश्चय है कि देश के चारो कोनों में यहाँ का नाम फैल गया एवं विभिन्न यातायात के साधन निर्मित हुए। ब्लैक डायमंड नाम की एक रेलगाड़ी भी चल निकली क्योंकि अब कोयला केवल काला पत्थर नहीं था वह आधुनिक राष्ट्र की प्रगति का द्योतक था।

जिस कोयले की छोटी सी कहानी आरम्भ हुई थी एवं जो पंचकोट राज के लिए हीरे उगल रही थी, वही इसके पतन का कारण सिद्ध हुई, पर भारत के दूसरे भागों के लिए पंचकोट राज अभी भी काले हीरों का राज्य है, यद्यपि यह क्षेत्र अब पूर्णतः सरकार के प्रभुत्व में हैं।

□
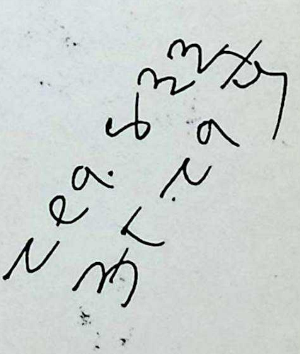
34424
डा० डिल्ली रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय